राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

10 तुषार देशपांडे ने धोनी की प्रेरक बातों को किया याद ...

अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना की वापसी पर घिरे बाइडन ... 11

वर्ष : 12 | अंक : 150 | पटना, मंगलवार, 10 सितंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 26.0°C

हां 30%
नहीं 50%
कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 71,105

चांदी 91,700

सेंसेक्स 78,886

निफ्टी 24,117

संक्षिप्त खबरें

नौशेरा में घुसपैठ की कोशिश नाकाम, दो आतंकवादी ढेर

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले के नौशेरा के लाम सेक्टर में सेना ने नियंत्रण रेखा के पास घुसपैठ की कोशिश को सफलतापूर्वक विफल कर दिया और दो आतंकवादियों को ढेर कर दिया। सेना ने कहा कि घुसपैठ की संभावित कोशिश के संबंध में खुफिया एजेंसियों और जम्मू-कश्मीर पुलिस से मिले इनपुट के आधार पर, भारतीय सेना द्वारा 8-9 सितंबर की मध्यरात्रि को सामान्य क्षेत्र लाम, नौशेरा में घुसपैठ विरोधी अभियान शुरू किया गया था। नगरोटा स्थित व्हाइट नाइट कॉर्प्स (16 कॉर्प्स) ने एक्स पर पोस्ट किया, दो आतंकवादियों को मार गिराया गया है और दो एके-47 और एक पिस्तौल सहित बड़ी मात्रा में युद्ध सामग्री बरामद की गई है। कार्रवाई प्रगति पर है।

जम्मू-कश्मीर चुनाव: भाजपा ने 10 उम्मीदवारों की छठी सूची जारी की

जम्मू/ नयी दिल्ली भारतीय जनता पार्टी ने जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के लिए रविवार को 10 उम्मीदवारों की नयी सूची जारी की जिसमें जम्मू जिले की बाहु सीट से पूर्व उपमुख्यमंत्री कविंदर गुप्ता के स्थान पर पूर्व विधान परिषद सदस्य विक्रम रंधावा को उम्मीदवार बनाया गया है। गुप्ता 2014 के चुनाव में गांधीनगर से निर्वाचित हुए थे। इसका नाम बदलकर बाहु विधानसभा क्षेत्र कर दिया गया है। भाजपा ने तीसरे चरण के चुनाव के लिए छठी सूची जारी करने के साथ ही अब तक 62 उम्मीदवारों के नामों की घोषणा कर दी है, जिनमें कश्मीर घाटी के 20 उम्मीदवार शामिल हैं, जहां भाजपा विधानसभा चुनाव में अभी तक अपना खाता नहीं खोल पाई है। रंधावा 2019 और 2021 के बीच तीन बार विवादों में घिरे और उनके खिलाफ लद्दाख एवं जम्मू के अलग-अलग पुलिस थानों में दो प्राथमिकी दर्ज की गईं। उन्हें केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह के खिलाफ भ्रष्टाचार के निराधार आरोप लगाने के लिए उनसे बिना शर्त सार्वजनिक माफी मांगनी पड़ी थी। भाजपा के उम्मीदवारों की ताजा सूची के अनुसार, पूर्व विधायक आर एस पठानिया को उधमपुर पूर्व से मैदान में उतारा गया है। कठुआ से पूर्व नौकरशाह भारत भूषण, बिश्नाह से राजीव भगत और मढ़ से सुरिंदर भगत को टिकट दिया गया है। कठुआ, बिश्नाह और मढ़ तीनों सीट अनुसूचित जाति समुदाय के लिए सुरक्षित हैं।

हरियाणा चुनाव: कांग्रेस ने नौ और उम्मीदवारों के नाम घोषित किए

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए रविवार को नौ उम्मीदवारों की सूची जारी की, जिसके अनुसार उचाना कलां से बृजेंद्र सिंह और गुरुग्राम से मोहित ग्रोवर को मैदान में उतारा गया है। इस सूची के साथ, कांग्रेस ने 90 सदस्यीय विधानसभा के लिए कुल 41 उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। बृजेंद्र सिंह और ग्रोवर के अलावा कांग्रेस ने थानेसर से अशोक अरोड़ा, गन्नौर से कुलदीप शर्मा, टोहाना से परमवीर सिंह, तोशाम से अनिरुद्ध चौधरी, महम से बलराम दांगी, नांगल चौधरी से मंजू चौधरी और बादशाहपुर से वर्धन यादव को मैदान में उतारा है। कांग्रेस ने इस चुनाव के लिए शुक्रवार को 32 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की थी जिसमें राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा को गढ़ी सांपला-किलोई, प्रदेश इकाई के प्रमुख उदयभान को होडल सीट और पहलवान विनेश फोगाट को जुलाना से उम्मीदवार बनाया गया।

सीएम नीतीश ने किया मोबाइल पशु चिकित्सा कॉल सेंटर का शुभारंभ

सूबे में अब घर पर होगा मवेशियों का इलाज

सीएम ने 534 मोबाइल पशु चिकित्सा वाहनों को किया रवाना

प्रात : किरण

पशुपालकों को कठिनाईयों से मिलेगी राहत

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को 01 अणे मार्ग से मोबाइल पशु चिकित्सा कॉल सेंटर के शिलापट्ट का अनावरण कर उदघाटन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने 534 मोबाईल पशु चिकित्सा वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मोबाइल स्क्रीन को क्लिक कर मुख्यमंत्री ने बिहार पशुपालक एप्प एवं किसान पशुपालक एप्प का लोकार्पण किया। पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग की प्रधान सचिव डॉ एन विजयलक्ष्मी ने मुख्यमंत्री को पौधा भेंटकर उनका अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री ने इसके पूर्व मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयों का मुआयना कर इनमें उपलब्ध करायी गई सुविधाओं एवं पशुपालकों को प्रदान की जानेवाली सेवाओं के संबंध में अधिकारियों से जानकारी ली। इन सभी 534 मोबाइल पशु चिकित्सा वाहनों एवं मोबाइल पशु चिकित्सा कॉल सेंटर का उदेश्य पशुपालकों के द्वार पर पशु चिकित्सा (डोर स्टेप पशु चिकित्सा सेवा) सुविधा उपलब्ध कराना है। पशुपालकों को अपने बीमार पशुओं को पशु चिकित्सालय तक लाने में होने वाली कठिनाईयों को देखते हुए राज्य के सभी 534 प्रखंडों हेतु एक-एक मोबाइल पशु चिकित्सा इकाई के परिचालन की व्यवस्था की गयी है। मोबाइल पशु चिकित्सा इकाईयों के परिचालन से सुदूर इलाकों से बीमार पशुओं को पशु चिकित्सालय तक लाने में होने वाली कठिनाईयों से पशुपालकों को राहत मिलेगी, बीमार पशुओं को पशु चिकित्सालय लाने में लगने वाले समय एवं व्यय की बचत होगी। इसके साथ ही अस्वस्थ पशुओं की त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा संभव हो सकेगी। पशुओं के स्वास्थ्य एवं उत्पादकता में सुधार लाया जा सकेगा। पशुओं में संक्रामक रोग फैलने की स्थिति में रोग की त्वरित जाँच एवं प्रभावी नियंत्रण भी किया जा सकेगा तथा पशुपालकों के बीच विभागीय योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया जायेगा। मोबाइल पशु चिकित्सा इकाई जीपीएस सुविधा युक्त एक सुसज्जित वाहन है जिसमें पशु रोगों की पहचान, पशु चिकित्सा एवं लघु सर्जरी, ऑडियो विजुअल प्रचार के लिए आवश्यक उपकरण के साथ पशुओं की चिकित्सा के लिए आवश्यक दवा इत्यादि के साथ कृत्रिम गभार्धान की सुविधा उपलब्ध रहेगी। मोबाइल पशु चिकित्सा इकाई में एक पशु चिकित्सक, एक पशु चिकित्सा सहायक एवं एक चालक-सह-परिचारी की व्यवस्था की गयी है। मोबाईल पशु चिकित्सा इकाई का परिचालन प्रत्येक कार्य दिवस में प्रातः 09.00 बजे से संध्या 05.00 बजे तक किया जायेगा।

पशुपालको की सुविधा हेतु एक कॉल सेंटर की स्थापना : पशुपालको की सुविधा हेतु एक कॉल सेंटर की स्थापना राज्य मुख्यालय स्तर पर पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान पटना के परिसर में की गयी है। कॉल सेन्टर में 4 अनुभवी पशु चिकित्सकों एवं 12 कॉल सेंटर एक्जिक्यूटिव की व्यवस्था की गयी है। साथ ही, एक मोबाइल एप्प भी विकसित किया गया है। पशुपालक अपने मोबाइल पर उक्त एप्प को डाउनलोड कर पशु चिकित्सा सेवाओं हेतु सम्पर्क कर सकते हैं। राज्य के पशुपालक प्रत्येक कार्य दिवस में प्रातः 09.00 बजे से संध्या 05.00 बजे तक की अवधि में कॉल सेन्टर के टॉल फ्री नम्बर 1962 पर दूरभाष के माध्यम से कॉल कर अथवा मोबाइल एप्प के माध्यम से कॉल सेन्टर में पशु चिकित्सा हेतु सम्पर्क कर सकते हैं। सम्पर्क के उपरान्त मोबाइल पशु चिकित्सा इकाई के माध्यम से पशुपालकों के द्वार पर पशु चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी जायेगी। कॉल सेन्टर में टेलिमेडिसीन की भी व्यवस्था है। मोबाइल पशु चिकित्सा इकाई में कार्यरत पशु चिकित्सकों के द्वारा आवश्यकतानुसार ऑडियो अथवा वीडियो कॉलिंग के माध्यम से कॉल सेन्टर में कार्यरत पशु चिकित्सकों से चिकित्सकीय परामर्श प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त मोबाइल पशु चिकित्सा इकाई के द्वारा प्रत्येक कार्य दिवस में 2 ग्रामों का भ्रमण किया जायेगा एवं शिविर के माध्यम से पशुओं की चिकित्सा तथा विभागीय योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया जायेगा।

ये रहें मौजूद : इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह, उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, पशु एवं मत्स्य संसाधन मंत्री रेणु देवी, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्य सचिव अमृतलाल मीणा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय भारत सरकार की संयुक्त सचिव सरिता चौहान, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग की प्रधान सचिव डॉ एन विजयलक्ष्मी, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, निदेशक पशुपालन नवदीप शुक्ला, उपायुक्त पशुपालन, भारत सरकार डॉ सुरेन्द्र पाल सहित पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने बख्तियारपुर-ताजपुर पुल का किया हवाई सर्वेक्षण

बख्तियारपुर-मोकामा फोरलेन शुरू होने से आवागमन होगा सुगम : सीएम

निर्माण कार्य तेजी से पूर्ण करने का दिया निर्देश

प्रात : किरण

● बख्तियारपुर-मोकामा फोरलेन पथ के निर्माणाधीन कार्य का किया निरीक्षण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को निमार्णाधीन बख्तियारपुर-ताजपुर पुल का हवाई सर्वेक्षण किया। हवाई सर्वेक्षण के बाद मुख्यमंत्री पटना जिले के करनौती के पास निमार्णाधीन रेलवे ओवरब्रिज पहुंचे। उन्होंने निर्माणाधीन बख्तियारपुर-मोकामा फोरलेन पथ तथा उस पर बन रहे रेलवे ओवरब्रिज का निरीक्षण किया और अधिकारियों को जल्द काम पूरा करने का निर्देश दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि बख्तियारपुर-मोकामा फोरलेन शुरू हो जाने से आवागमन सुगम हो जाएगा। इससे पटना से बख्तियारपुर होकर मोकामा, बरौनी, बेगूसराय और लखीसराय जाने में काफी आसानी होगी, लोगों को समय कम लगेगा और ईंधन की भी बचत होगी। इसके पश्चात मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन करजान-ताजपुर पुल के बन रहे संपर्क सड़क का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि करजान एनएच 31 तथा ताजपुर एनएच 28 के आपस में जुड़ जाने से एनएच 31 और एनएच 28 का सीधा सम्पर्क हो जाएगा और उत्तर बिहार एवं दक्षिण बिहार के बीच एक और संपर्कता बनेगी जिससे आवागमन में सहूलियत होगी। नालंदा, मुंगेर और नवादा की ओर से आनेवाले वाहनों को उत्तर बिहार जाने के लिये पटना आने की जरूरत नहीं होगी। ऐसे वाहन उत्तर बिहार आसानी से चले जाएंगे जिससे 60 किलोमीटर दूरी कम हो जाएगी।

राज्य के ग्रामीण और छोटे शहरों में तेज होगा विकास, रोजगार के अवसर बढेंगे : सम्राट

केंद्र ने बिहार के ग्रामीण और शहरी निकायों के लिए जारी किये 1601 करोड़

15 वें वित्त आयोग की सिफारिश पर चालू वित्तीय वर्ष की पहली किस्त मिली

प्रात : किरण

पटना। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि 15 वें वित्त आयोग की अनुशंसा के अनुसार केंद्र सरकार ने बिहार के ग्रामीण निकायों और शहरी निकायों के विकास के लिए 1 60153.85 लाख रुपये जारी किये। यह राशि वित्तीय वर्ष 2024 -25 में मिलने वाले केंद्रीय अनुदान की पहली किस्त है। इससे ग्रामीण और छोटे शहरों में रोजगार के अवसर बढेंगे। श्री चौधरी ने कहा कि इसमें से 77503.41 लाख रुपये ग्रामीण स्थानीय निकायों यानी पंचायतों को वितरित किये जाएँगे। हर पंचायत इस पैसे को आबादी और क्षेत्रफल के अनुसार विकास कार्यों पर खर्च कर सकेगी। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने पंचायतों के लिए जो राशि जारी की है, उसमें पिछले साल मिलने वाली 116.59 लाख की राशि शामिल है। उपमुख्यमंत्री चौधरी ने बताया कि वित्त आयोग ने 10 लाख से कम आबादी वाले बिहार के छोटे शहरों के स्थानीय निकायों के विकास के लिए 33060.18 लाख रुपये जारी किये हैं। उन्होंने कहा कि छोटे शहरों के विकास की गति बढाने के साथ-साथ पेयजल, वर्षा जल संचयन और कचरा प्रबंधन जैसे तीन प्रमुख मुद्दों पर समान से खर्च करने के लिए बिहार को 49590.26 लाख रुपये का बंधित अनुदान मिला है। यह राशि दूसरे मद में खर्च नहीं की जा सकेगी।

दो वर्षों में पेट्रोल और डीजल वाहनों के बराबर हो जाएगी ईवी की लागत : गडकरी

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। देश में इलेक्ट्रिक वाहनों का चलन आने वाले समय में बढ़ेगा। इस कारण अगले दो वर्षों में ईवी की लागत पेट्रोल और डीजल वाहनों के बराबर आ जाएगी। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी की ओर से सोमवार को यह बयान दिया गया। ऑटोमोटिव कंपोनेंट मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ओर से आयोजित किए गए इवेंट में केंद्रीय मंत्री की ओर से ऑटोमोबाइल को सड़क सुरक्षा को बढ़ाने में अधिक योगदान देने को कहा गया। गडकरी ने कहा, 10 साल पहले जब मैंने इलेक्ट्रिक वाहनों को ऑटोमोबाइल कंपनियों से बढ़ाने को कहा था, उस समय बाजार में किसी ने मेरी बात को अधिक महत्व नहीं दिया था। अब वे लोग कह रहे हैं कि मौका हाथ से निकल गया है। उन्होंने आगे कहा कि वह इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए किसी भी प्रकार की सब्सिडी और इंसेंटिव आदि के खिलाफ नहीं हैं, अगर वित्त मंत्रालय और भारी उद्योग मंत्रालय ईवी सब्सिडी के लिए राशि आवंटित कर देते हैं। नई इलेक्ट्रिक व्हीकल मैन्युफैक्चरिंग पॉलिसी का उद्देश्य वैश्विक प्लेयर्स को घरेलू वैल्यू चेन में योगदान के लिए आकर्षित करना है। नई ईवी पॉलिसी के तहत कंपनियों को भारत में मैन्युफैक्चरिंग सुविधा लगाने के लिए कम से कम 4,150 करोड़ रुपये (500 मिलियन डॉलर) का निवेश करना होगा और तीन वर्ष में उत्पादन शुरू करना होगा। इस दौरान कंपनी को कम से कम 25 प्रतिशत डोमेस्टिक वैल्यू एडिशन करना होगा। वहीं, कम से कम 50 प्रतिशत डीवीए पांच वर्ष के अंदर करना होगा। बीते महीने क्रेडिट रेटिंग एजेंसी आईसीआरए द्वारा जारी की गई रिपोर्ट में कहा गया था कि 2030 तक नई कार बिक्री में इलेक्ट्रिक वाहनों की हिस्सेदारी 15 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। वित्त वर्ष 24 में वित्त वर्ष 23 के मुकाबले 42.06 प्रतिशत नई कारें पंजीकृत हुई थी।

भारतीय राजनीति में प्रेम, सम्मान और विनम्रता का अभाव है : राहुल

प्रात : किरण

वाशिंगटन/नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने टेक्सास में भारतीय-अमेरिकी समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय राजनीति में प्रेम, सम्मान और विनम्रता का अभाव है और उन्होंने यह मानने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भी आलोचना की कि भारत एक विचार है। राहुल ने लोकसभा में विपक्ष का नेता बनने के बाद भारतीय प्रवासी समुदाय के साथ अपने पहले संवाद के दौरान डलास में रविवार को ये टिप्पणियां कीं। उन्होंने कहा, आरएसएस मानता है कि भारत एक विचार है। हम मानते हैं कि भारत विचारों की विविधता वाला देश है। उन्होंने कहा, अमेरिका की तरह हमारा भी मानना है कि हर किसी को भागीदारी की अनुमति दी जानी चाहिए। हम मानते हैं कि हर किसी को सपने देखने का हक होना चाहिए और जाति, भाषा, धर्म, परंपरा, इतिहास की परवाह किए बगैर हर किसी को अवसर मिलना चाहिए। राहुल ने कहा, यही लड़ाई है। चुनाव में यह लड़ाई तब चरम पर पहुंच गयी जब भारत में लाखों लोगों को साफ समझ आ गया कि भारत के प्रधानमंत्री देश के संविधान पर हमला कर रहे हैं। मैं आपसे कह रहा हूं कि (भारत) एक राज्यों का संघ है, वहां भाषाओं का सम्मान है, धर्मों का सम्मान है, परंपराओं का सम्मान है, जाति का सम्मान है। यह सब संविधान में है। कांग्रेस नेता ने अपने संबोधन में कहा कि उनकी भूमिका भारतीय राजनीति में प्रेम, सम्मान और विनम्रता के मूल्यों को स्थापित करने की है। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि हमारी राजनीतिक प्रणालियों और दलों में जिस चीज का अभाव है, वह प्रेम, सम्मान और विनम्रता है। सभी मनुष्यों से प्रेम, जरूरी नहीं कि केवल एक धर्म, एक समुदाय, एक जाति, एक राज्य या एक भाषा बोलने वाले लोगों से ही प्रेम हो।

उत्तर प्रदेश शिक्षक भर्ती मामला: हाई कोर्ट के आदेश पर सुप्रीम कोर्ट ने लगाई रोक

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश में 69 हजार सहायक शिक्षकों की भर्ती के मामले पर इलाहाबाद हाई कोर्ट के आदेश पर रोक लगा दी है। सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश सरकार और संबंधित पक्षकारों से कहा कि वो लिखित दलीलें जमा कराए। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि उन्हें हाई कोर्ट के फैसले के अध्ययन के लिए वक्त चाहिए।

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने अपने फैसले में जून 2020 और जनवरी 2022 के सेलेक्शन लिस्ट को रद्द करते हुए यूपी सरकार को आदेश दिया था कि वो 2019 में हुए सहायक शिक्षक भर्ती परीक्षा के आधार पर 69 हजार शिक्षकों के लिए नए सलेक्शन लिस्ट तीन महीने में जारी करे। याचिका अनारक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों ने दायर की है। अपने आदेश में हाई कोर्ट ने ये भी कहा था कि अगर कोई आरक्षित वर्ग का कैंडिडेट जनरल कैटेगरी के बराबर मेरिट हासिल कर लेता है तो उसका सेलेक्शन जनरल कैटगरी में ही माना चाहिए।

केंद्र ने राज्यों से एमपॉक्स के संदिग्ध मामलों में स्क्रीनिंग और जांच कराने को कहा

नई दिल्ली/एजेंसी। केंद्र सरकार ने सोमवार को राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को सलाह दी कि सामुदायिक स्तर पर एमपॉक्स के सभी संदिग्ध मामलों में स्क्रीनिंग और जांच कराई जाए तथा संदिग्ध एवं पुष्ट दोनों मामलों में मरीजों के लिए अस्पतालों में पृथकवास सुविधाएं चिह्नित की जाएं। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव अपूर्व चंद्रा ने सोमवार को राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को लिखे पत्र में उनसे कहा कि लोगों के बीच किसी भी तरह के अनावश्यक डर को फैलने से रोका जाए। सतर्कता बरतने की जरूरत पर जोर देते हुए उन्होंने कहा, भारत में मौजूदा प्रकोप में एमपॉक्स का एक भी नया मामला सामने नहीं आया है और संदिग्ध मामलों में एक भी नमूना पॉजिटिव नहीं आया है। चंद्रा ने कहा कि स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय लगातार स्थिति पर नजर रख रहा है। उन्होंने राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से कहा कि विशेष रूप से स्वास्थ्य केंद्र स्तर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य तैयारियों की समीक्षा की जाए, अस्पतालों में पृथकवास सुविधाओं की पहचान की जाए और ऐसी सुविधाओं पर आवश्यक रसद एवं प्रशिक्षित मानव संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

सुखोई के इंजन के लिए एचएएल के साथ 26 हजार करोड़ का अनुबंध

नई दिल्ली/एजेंसी। रक्षा मंत्रालय ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड से सुखोई -30 विमानों के लिए 26,000 करोड़ रुपये की लागत से 240 ए एल -31 एफ पी एयरो इंजन की खरीद के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं। रक्षा सचिव गिरिधर अरमाने और वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वी आर चौधरी की मौजूदगी में रक्षा मंत्रालय और एच ए एल के वरिष्ठ अधिकारियों ने सोमवार को इस अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। इन एयरो इंजन का निर्माण एचएएल के कोरापुट डिवीजन में किया जाएगा और इनसे सुखोई-30 विमानों के बेड़े की संचालन क्षमता को बनाए रखने के लिए वायु सेना की आवश्यकता पूरा होने की उम्मीद है।

वार्ता — दोनों देशों के बीच समग्र रणनीतिक संबंधों को बढ़ावा देने पर जोर

प्रधानमंत्री मोदी ने अबू धाबी के युवराज से की वार्ता

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को अबू धाबी के वली अहद (युवराज) शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के साथ व्यापक वार्ता की और दोनों देशों के बीच समग्र रणनीतिक संबंधों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया। नाहयान अपनी दो दिवसीय भारत यात्रा के तहत रविवार को नई दिल्ली पहुंचे। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जायसवाल ने कहा, एक करीबी दोस्त का गर्मजोशी से स्वागत। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हैदराबाद हाउस में अबू धाबी के युवराज शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान की अगवानी की। उन्होंने कहा, भारत-संयुक्त अरब अमीरात द्विपक्षीय संबंधों के पूरे आयाम और सहयोग के भविष्य के क्षेत्रों पर चर्चा होनी है। अगस्त 2015 में मोदी की संयुक्त अरब अमीरात की ऐतिहासिक यात्रा के बाद, दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाया गया था। दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार के लिए भारतीय रुपये और दिरहम (संयुक्त अरब अमीरात की मुद्रा) के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए फरवरी 2022 में एक व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) और जुलाई 2023 में एक स्थानीय मुद्रा निपटान (एलसीएस) प्रणाली पर हस्ताक्षर किए। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2022-23 में लगभग 85 अरब अमेरिकी अमरीकी डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार के साथ दोनों देश एक-दूसरे के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में से हैं। 2022-23 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के मामले में भी यूएई, भारत में शीर्ष चार निवेशकों में शामिल है। यूएई में करीब 35 लाख भारतीय रहते हैं। पिछले साल भारत की अध्यक्षता में हुए जी20 शिखर सम्मेलन में यूएई को बतौर विशेष आमंत्रित देश न्योता दिया गया था। भारत की अध्यक्षता के दौरान जी20 समूह के लिए विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में यूएई को आमंत्रित किया गया था। फरवरी 2023 में भारत-यूएई-फ्रांस (यूएफआई) त्रिपक्षीय रूपरेखा को औपचारिक रूप से शुरू किया गया था। भारत के सक्रिय समर्थन के साथ, यूएई मई 2023 में एससीओ में संवाद भागीदार के रूप में शामिल हुआ। यूएई भी भारत के समर्थन से एक जनवरी को ब्रिक्स में सदस्य के रूप में शामिल हुआ था। भारत-यूएई रक्षा सहयोग में भी पिछले कुछ वर्षों में एक नई गति देखी गई है।

सुप्रीम कोर्ट ने आंदोलनकारी डॉक्टरों को ड्यूटी पर लौटने का दिया निर्देश

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने पश्चिम बंगाल सरकार से कोलकता के आर जी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में सुरक्षा की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश के साथ ही आंदोलनकारी डॉक्टरों से मंगलवार शाम पांच बजे तक अपने-अपने काम पर लौटने का सोमवार को निर्देश दिया। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने नौ अगस्त को उस कॉलेज की 31 वर्षीया एक स्नातकोत्तर प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ कथित दुष्कर्म और हत्या के मामले में जांच प्रगति विवरण और अन्य पहलुओं पर विचार करने के बाद यह आदेश पारित किया। पीठ ने कथित दुष्कर्म और हत्या के खिलाफ एक माह से लगातार हड़ताल, धरना, प्रदर्शन कर रहे पश्चिम बंगाल के डॉक्टरों को चेतावनी देते हुए कहा कि वे कल शाम 5 बजे तक अपनी-अपनी ड्यूटी पर लौट आएं, नहीं तो राज्य सरकार उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू कर सकती है। शीर्ष अदालत ने कहा कि डॉक्टरों का विरोध उनकी ड्यूटी की कीमत पर नहीं हो सकता। मुख्य न्यायाधीश ने कहा, हमने दो दिन का समय दिया है। युवा डॉक्टरों को अब अपने अपने काम पर वापस लौटना चाहिए। हम जानते हैं कि जमीनी स्तर पर क्या हो रहा है। पहले काम पर लौटें। जिला कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे। आपको अब काम पर लौटना होगा। यदि आप काम पर नहीं आते हैं, तो आपके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई के लिए किसी को जिम्मेदार न ठहराएँ। आप यह नहीं कह सकते कि वरिष्ठ डॉक्टर काम कर रहे हैं, इसलिए हम भी नहीं करेंगे। पीठ ने इस चेतावनी के साथ ही हड़ताली डॉक्टरों को यह भी आश्वासन दिया कि अगर वे 10 सितंबर की शाम 5 बजे या उससे पहले ड्यूटी पर रिपोर्ट करते हैं, तो उनके खिलाफ कोई अनुशासनात्मक कार्रवाई नहीं की जाएगी।

संक्षिप्त खबरें

12 सितंबर को फतुहा आएंगे सांसद संजय जायसवाल

फतुहा। गोविंदपुर में चल रहे वक्फ बोर्ड मामले को लेकर भाजपा नेता, सांसद संजय जायसवाल 12 सितंबर को सुबह 9 बजे फतुहा आएंगे। संजय जायसवाल लोगों से मिलकर मामले की जानकारी लेंगे। वहीं पूर्व विधायक प्रत्याशी सत्येन्द्र सिंह भी मौके पर मौजूद रहेंगे। इसकी जानकारी जिला युवा मोर्चा उपाध्यक्ष अभिषेक झा ने दिया।

ट्रेन से गिरकर युवक की मौत

फतुहा। सोमवार की सुबह रेल थाना क्षेत्र के पुनपुन नदी व जेठुली के बीच पोल संख्या 525/01 के पास ट्रेन से गिरकर तीस वर्षीय युवक की मौत हो गयी। ग्रामीणों की सूचना पर रेल पुलिस ने रेलवे ट्रैक पर से उस युवक का शव बरामद किया। पुलिस ने उस युवक के शव को पोस्टमार्टम के लिए पटना भेज दिया। रेल थानाध्यक्ष गनौरी दास ने बताया कि मृतक की पहचान नही हो पायी है। पहचान कराए जाने की कोशिश की जा रही है।

गणपति पूजा के तीसरे दिन शिवचर्चा का आयोजन

फतुहा। दरियापुर मुहल्ला स्थित छोटी मंदिर के प्रांगन में गणपति बप्पा की मूर्ति स्थापित की गयी है। पूजा के तीसरे दिन पंडाल में भव्य शिवचर्चा का आयोजन किया गया। शिवचर्चा में प्रदीप बाबा के नेतृत्व में एक से बढ़कर एक भक्ति गीत प्रस्तुत किए गये। गीतों के लय पर सैकड़ों महिलाएं झुमती नजर आयी। इस मौके पर आयोजक मंडली रवि कुमार सिंह, छोटी सिंह, सन्नी सिंह, सूरज कुमार, दीपक सिंह समेत कई गणमान्य लोग मौजूद थे।

शराब पीकर फायरिंग करने के आरोप में एक गिरफ्तार

फतुहा। स्थानीय पुलिस ने थाना क्षेत्र के किसमिरिया गांव से एक कथित वकील को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी शाहजहांपुर थाना क्षेत्र के काजी बिगहा गांव निवासी सुनील कुमार है। आरोपी पर शराब पीकर फायरिंग करने का आरोप है। थानाध्यक्ष रुपक कुमार अम्बुज ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी के विरुद्ध किसमिरिया गांव के ही एक युवक ने केस दर्ज करायी है। गिरफ्तार आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

पूर्व सैनिको ने ईसीएचएस पोली क्लीनिक के पास रोड जाम कर किया प्रदर्शन

दानापुर नगर के अंतर्गत सोमवार को दानापुर कैन्टोमेनट मे सैकंडो पूर्व सैनिको ने ई सी एच एस पोली क्लीनिक के पास रोड जाम कर पूर्व सैनिको ने प्रदर्शन किया। बाद मे सभी ई सी एच के अंदर आ गए।सभी पूर्व सैनिक बहुत गुस्साए हुए थे। कारण आज सुबह से बिजली नही रहने और जनरेटर खराब होने के कारण दुर दुर से आऐ हुए पूर्व सैनिको का पर्ची नही बन रही थी जिसके कारण डॉक्टर नही देख रहे थे और दावा भी नही मिल रहा था। वहा उपस्थित पूर्व सैनिक सुबेदार अरविन्द सिंह ने बताया यहा पर हमेशा पुरा दावा नही मिलता है जिसके कारण सभी पूर्व सैनिको को परेशानी होती है।नायब सुबेदार विजय कुमार गुप्ता ने बताया सैकड़ो पूर्व सैनिको का पर्ची बनाने के लिए केवल 2 ही काउंटर चल रहा जिससे बहुत समय लगता जिसके कारण परेशानी का समना करना पडता है।

शराब के साथ पकड़ाए अभियुक्त को पांच वर्ष का कठोर कारावास व जुमार्ना

पटना सिटी, देसी महुआ शराब के साथ पकड़े जाने के मामले में पटना सिटी व्यवहार न्यायालय के विशेष न्यायालय (उत्पाद) के विशेष न्यायाधीश बृजेंद्र कुमार राय की अदालत ने सोमवार को एक अभियुक्त को पांच वर्ष का कठोर कारावास की सजा सुनाई है। अदालत ने अभियुक्त पर एक लाख का आर्थिक जुमार्ना भी लगाया है। जुमार्ना की राशि अदा नहीं करने पर अभियुक्त को तीन माह अतिरिक्त जेल में रहना होगा। इस संबंध में विशेष लोक अभियोजक सैयद फैजुल होदा ने बताया कि मामले के अभियुक्त खाजेकलां थाना क्षेत्र के नून का चौराहा निवासी मोहम्मद हलीम उर्फ राजा है। मामला चौक थाना कांड संख्या 144/24 से जुड़ा है। पुलिस ने मोर्चा रोड के पास से 25 मार्च, 24 को अभियुक्त के पास से 140 लीटर अवैध महुआ देसी शराब बरामद किया था। इस मामले में अभियोजन पक्ष की ओर से छह लोगों ने गवाही दी है।

सत्यम सहाय ने एसडीओ का संभाला पद

पटना सिटी (प्राकि)। अनुमंडल कार्यालय में अनुमंडल पदाधिकारी के रूप में सत्यम सहाय ने डीसीएलआर अभिलाषा सिन्हा से पदभार ग्रहण कर लिया। सोमवार को एसडीओ ने कहा कि अनुमंडल में विधि-व्यवस्था बनाए रखना उनकी प्राथमिकता है। इसके लिए वह कार्य करेंगे। इसके अलावा अनुमंडल से जुड़े हर कार्य का निष्पादन पारदर्शिता के साथ हो, यह व्यवस्था भी करेंगे। कार्यालय के कर्मियों को व्यवहार कुशल बनने और आम लोगों के कार्यकलाप को निष्पादित करने का निर्देश दिया गया। पदभार ग्रहण के मौके पर कार्यपालक दंडाधिकारी गंगा सागर सिंह के साथ अनुमंडल के कर्मी उपस्थित थे।

गुलमोहर मैत्री और एसबीआई ने 632 बच्चियों को किया एचपीवी वैक्सीनेशन

एक अक्टूबर से सभी जिला के सरकारी अस्पतालों में होगी लागू

- संस्थान के सहयोग से आईजीआईएमएस एचपीवी टीका लगाने वाला बिहार का पहला अस्पताल बना
- बहन के प्रयास को भाई ने भी पूरा करने का बीड़ा उठाया है : मंगल पांडे

प्रात :किरण संवाददाता

पटना । कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती यह चरितार्थ किया है बिहार की स्वयंसेवी संस्था गुलमोहर मैत्री ने । महिला स्वास्थ और कैंसर जागरूकता पर काम करने वाली स्वयंसेवी संस्था गुलमोहर मैत्री अपने 15 वर्ष के सफर में लाखों महिला एवं पुरुषों को जागरूक किया है। देश में बढ़ती सर्विकल कैंसर से मौत ने संस्था को कैंसर सुरक्षा को लेकर काम करने के लिए विचलित किया । इसी परिणाम स्वरूप संस्था द्वारा अक्टूबर 2021 में नव्या परियोजना की लांचिंग की गई। यह परियोजना 9 से 14 वर्ष की किशोरियों को निःशुल्क वैक्सीनेशन देने की है । वर्ष 2021 में इस परियोजना की शुरूआत वर्तमान एवं तत्कालीन स्वास्थ मंत्री श्री मंगल पांडे, तत्कालीन मंत्री अशोक चौधरी , तत्कालीन बिहार विधान परिषद के सभापति देवेश चंद्र ठाकुर , संस्था की ब्रांड एंबेसडर सुश्री श्रेयशी सिंह की मौजूदगी में की गई थी। इसके तहत एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह किशोरियों को निःशुल्क वैक्सीनेशन देने का लक्ष्य रखा गया ।यह परियोजना देश में किसी संस्था द्वारा पहली शुरूआत मानी जाती है । आज से चार वर्ष पहले मेरी मौजूदगी में इसी संस्था के कार्यक्रम में बच्चियों को संस्था द्वारा टीका देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था तब यह एक लाख ग्यारह हजार का लक्ष्य मुझे अजीब लगा ,कैसे पूरा होगा यह अभियान पर एक बहन के लक्ष्य को पूरा करना भाई का भी दायित्व बनता है और आज मुख्यमंत्री जी की प्रयास से मुख्यमंत्री स्वास्थ राहत कोष से प्रतिवर्ष डेढ़ सौ करोड़ रूपए खर्च कर 95 लाख बच्चियों को निशुल्क वैक्सीनेशन देने का अभियान 1 अक्टूबर से शुरू हो जायेगा । इस तरह बिहार देश का पहला राज्य बन जाएगा जो टीकाकरण के इंद्रधनुष अभियान में एचपीवी वैक्सीनेशन को शामिल करेगी । इस तरह देश में पहली बार किसी राज्य सरकार द्वारा बच्चियों को सर्विकल कैंसर से सुरक्षा हेतु टीकाकरण दिया जाएगा। उक्त बातें राज्य के स्वास्थ मंत्री मंगल पांडे ने राजधानी पटना के आईजीएमएस में भारतीय स्टेट बैंक के सहयोग से गुलमोहर मैत्री संस्था द्वारा 632 बच्चियों के टीकाकरण के अवसर पर कही । उन्होंने कहा कि बिहार में 100 कैंसर पीड़ित मरीजों में 17 सर्विकल कैंसर से होते है । उन्होंने अपना दो वर्ष पूर्व का अनुभव बताते हुए कहा की गुलमोहर मैत्री संस्था के माध्यम से गृह जिला सिवान में 200 बच्चियों को वैक्सीनेशन दिलवाया था तब हमे भी 50 अभिभावक को उनके भक्ति नेशन के प्रति भ्रांति को दूर करना पड़ा था । आज राज्य सरकार के प्रयास से मुजफ्फरपुर में 5 महीने में कैंसर अस्पताल अपने भवन में शुरू हो जायेगा जहां होमी भाभा कैंसर संस्थान और टाटा मेमोरियल कैंसर संस्थान के सहयोग से कार्य करेगी । उन्होंने गुलमोहर मैत्री संस्था को कैंसर जागरूकता कार्यक्रम में राज्य सरकार को सहयोग करने के साथ अभियान में रखने का भरोसा दिया । आई जी एम एस में आयोजित नव्या के टीकाकरण अभियान के अवसर पर मौजूद विशिष्ट अतिथि सीतामढी के सांसद देवेश चंद्र ठाकुर ने कहा कि बच्चियों के टीकाकरण अभियान नव्या परियोजना अब महाअभियान का रूप लेगी। इसके लिए बिहार सरकार के स्वास्थ मंत्री बधाई के पात्र है । उन्होंने संस्था के कार्यों की सराहना करते हुए कहा की समाज का स्वास्थ के क्षेत्र में गर्भाशय कैंसर ज्वलंत मुद्दा है इस अभियान को मूर्त रूप देने के लिए बिहार में मेमोग्राफी वान (टेस्टिंग जागरूकता वाहन) चलाया जाना चाहिए। टीकाकरण अभियान की सहयोगी भारतीय स्टेट बैंक के उत्तरी बिहार प्रक्षेत्र के महाप्रबंधक श्री आर नटराजन ने कहा की बैंक वित्तीय लेन-देन ही नहीं करता , वह अपने सामाजिक सरोकारों को भी पूरा करने का प्रयास करता है। कई सारी सामाजिक दायित्व के माध्यम से समाज को जागरूक भी करता है । गुलमोहर मैत्री संस्था का प्रयास देश के लिए नजीर बना है । उन्होंने कहा कि आगे भी हम ऐसे अभियान को सहयोग करते रहेंगे। संस्था की सचिव श्रीमति मंजू सिन्हा ने कहा की 2019 से जिजीविषा के शुरूआत होने पर यह बड़ा लक्ष्य हमने निर्धारित किया था । हमारी जागरूकता और वैक्सीनेशन कार्यक्रम केवल बिहार ही बल्कि भारत के चार राज्य में चल रही है ।हमे हर काम सरकार के भरोसे नहीं छोड़ना चाहिए हमारा भी दायित्व है कि हम खुद से जागरूक हो और अपने परिवार के सदस्य को इससे सुरक्षित करे ।उन्होंने आज 632 टीका लेनी बच्चियों से अपील की वो अपने दोस्तों को भी जागरूक करे ।आज हम सब के प्रयास से बिहार पहला राज्य बन गया जहां टीकाकरण अभियान में एचपीवी को शामिल किया गया । कार्यक्रम में मेडिकल पार्टनर के रूप में सहयोग कर रही आईजीआईएमएस के निदेशक डा बिंदे कुमार ने कहा की संस्था के प्रयास को सरकार पूरी करेगी और यह प्रतिवर्ष एक करोड़ बच्चियों के लिए लाभकारी होगी । आईआईएमएस की डॉ संगीता पंकज ने कहा की स्वस्थ नारी ही स्वस्थ देश की पहचान है । कार्यक्रम के दौरान डा सहजानंद प्रसाद सिंह, डा ओम कुमार , डा विभूति प्रसन्न सिन्हा ,डा मनीष मंडल डा राजेश कुमार सिंह ,डा संगीता पंकज, एसबीआई बैंक अधिकारी सहित 632 बच्चियों के अभिभावक मौजूद रहे ।

माले का प्रतिवाद मार्च, सड़क जाम व आगजनी कर किया हंगामा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भाजपा नेता श्याम सुंदर शर्मा की हत्या से नाराज लोगों ने गुरु गोविंद पथ पर आगजनी करते हुए सड़क जाम कर हंगामा किया। पुलिस प्रशासन के खिलाफ नाराबाजी करते हुए हंगामा किया गया। सड़क पर उतरे पूर्व उपमाहापौर संतोष मेहता व रूप नारायण मेहता, आलोक साह, भाजपा किसान मोर्चा के पूर्व उपाध्यक्ष संजीव यादव, विनय केसरी, राजेश साह, प्रदीप काश, नित्यानंद सिंह, बलराम माधुरी, अविनाश पटेल, राजाराम शर्मा, प्रफुल्ल पांडेय, संजीव पटवा, सुरेश सिंह पटेल, गोविंद कानोडिया समेत अन्य ने हत्या पर दुख जताया है। भाकपा माले पटना सिटी कमेटी की ओर से प्रतिवाद मार्च शंभूनाथ मेहता, मुजफ्फर आलम, ललन यादव, चंद्र भूषण शर्मा, मनोहर लाल, रघुनाथ प्रसाद के नेतृत्व में निकाला गया। आंदोलन पर उतरे लोगों ने 24 घंटे के अंदर हत्यारों को गिरफ्तार करने की मांग की है। सड़क जाम किया लोगों ने वाहनों को आने-जाने से रोका बीच सड़क पर बड़ा टायर जलाकर और बांस-बल्ला से घर दिया गया। इस कारण से वाहनों का परिचालन बाधित रहा। हालांकि पोस्टमार्टम के बाद जब शव आ गया, तब इसके बाद लोगों ने आपसी सहमति बनाते हुए सड़क जाम हटा लिया।

सर्वेक्षण कार्यालय में नक्शा लेने वालों का हंगामा

पटना सिटी (प्राकि)। नक्शा लेने आए लोगों ने पुरानी सिटीकोर्ट स्थित बिहार सर्वेक्षण कार्यालय में हंगामा मचाया। नक्शा लेने आए लोगों की भीड़ अधिक होने और एक काउंटर के मशीन में दोपहर में कार्य करने के दौरान गड़बडी आ गई। इस कारण से काउंटर पर लाइन में लगे लोगों ने हंगामा करना शुरू कर दिया। हंगामा कर रहे लोग कर्मियों से उलझ गए।किसी तरह कर्मियों ने समझा-बुझा कर मामले को शांत कराया। नक्शा देने के लिए कार्यालय में दो काउंटर काम करता है। वहीं सर्वेक्षण कार्य शुरू होने के कारण से नक्शा लेने वालों की भीड़ बढ़ गई है। उप निदेशक साइदा खातून का कहना है कि दोपहर तक दोनों काउंटर से नक्शा देने का कार्य हुआ है। एक काउंटर के मशीन में तकनीकी गड़बड़ी आ जाने से परेशानी हुई। इसे दूर करा दिया गया है।

तख्तश्री पटना साहिब की पवित्रता व अनुशासन को बनाए रखने की मांग

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना साहिब पंथ सेवक जत्था ने तख्तश्री पटना साहिब के पांच सिंह साहिबानों को पत्र भेजा है। इसमें वर्तमान कमेटी के पदाधिकारियों व सदस्यों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग की गई है। हालांकि, पांच सिंह साहिबानों ने तख्तश्री कमेटी के पांच वरिष्ठ पदाधिकारियों, जिनमें अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही, सचिव हरबंश सिंह, वरीय उपाध्यक्ष लखबिंदर सिंह, कनीय उपाध्यक्ष गुरुविंदर सिंह, सचिव हरबंश सिंह और सदस्य हरपाल सिंह जौहल शामिल हैं। इन सबों को मंगलवार अपराह्न चार बजे पेश होने के लिए कहा गया है। पटना साहिब पंथ सेवक जत्था ने कहा है कि यह पदाधिकारी आदतन अपराधी हैं और इन्हें कड़ी सजा दी जानी चाहिए। जत्था ने तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में बार-बार हो रही मयार्दा के उल्लंघन पर गहरी चिंता व्यक्त की है। जत्था ने इस पवित्र स्थल की गरिमा और अनुशासन को बनाए रखने के लिए तत्काल और कठोर कार्रवाई की मांग की है। विशेष रूप से, हाल ही में भारत के राष्ट्रपति और भाजपा नेता जेपी नड्डा की यात्राओं के दौरान तख्तश्री पटना साहिब की मयार्दा का उल्लंघन किया गया था, जिसने सिख समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचाई है। जत्था के महासचिव इकबाल सिंह उर्फ लककी बग्गा ने कहा, राष्ट्रपति के आगमन के दौरान तख्त साहिब की पवित्रता को एक सिंहासन जैसे तकिए के बिछाए जाने से ठेस पहुंचाई गई। इसके अलावा, भाजपा नेता जेपी नड्डा की यात्रा के दौरान गुरु साहिब के दरबार की मयार्दा की अनदेखी की गई। यदि पहले की घटनाओं पर सख्त कार्रवाई की गई होती, तो शायद ये हालिया घटनाएं टाली जा सकती थीं। यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि तख्त साहिब को वीआईपी संस्कृति से मुक्त रखा जाए। पंथ सेवक जत्था ने तख्त साहिब की प्रबंधक कमेटी से आग्रह किया कि मीडिया की पहुंच को दरबार साहिब के भीतर नियंत्रित करने के लिए सख्त प्रोटोकॉल तैयार किए जाएं। हम मीडिया के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश तैयार करने की मांग करते हैं। जत्था ने यह भी कहा कि प्रसारण और टेलीविजन स्टाफ को भी दरबार साहिब के आध्यात्मिक माहौल का सम्मान करना चाहिए और उनके कार्यों को मयार्दा के अनुरूप होना चाहिए। उन्होंने मांग की कि ये नियम तख्त साहिब के अलावा सभी ऐतिहासिक गुरुद्वारों पर भी लागू किए जाएं, ताकि इन पवित्र स्थलों की गरिमा बनी रहे।

वार्ड पार्षद ने उठाया कंकड़बाग शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में शौचालय बनवाने की जिम्मेदारी

- प्रतिदिन 95-100 मरीज लेते हैं केंद्र में ओपीडी सेवा का लाभ
- शौचालय की जरूरत को देखते हुए लिया निर्णय: कुमार संजीव

प्रात :किरण संवाददाता

पटना- जनप्रतिनिधि लोगों की आवाज होते हैं और उनकी पहल पर बदलाव संभव होता है. कुछ ऐसी ही तस्वीर कंकड़बाग शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की बदलने वाली है. ज्ञात हो कि कंकड़बाग शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र शहर के वार्ड संख्या 29, 30 एवं 35 की आबादी को चिकित्सीय सेवा प्रदान करता है. यहाँ प्रतिदिन करीब 95-100 मरीज आते हैं और अक्सर यहाँ मरीजों की भीड़ नजर आती है. प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, मेडिकल ऑफिसर, डाटा ऑपरेटर, एएनएम सहित कई स्वास्थ्य अधिकारी एवं स्वास्थ्यकर्मी केंद्र में कार्यरत हैं. इस केंद्र की विडंबना यह रही है कि यहाँ शौचालय की सुविधा लंबे समय से नहीं है जिससे मरीजों के साथ महिला चिकित्सक एवं अन्य महिला स्वास्थ्यकर्मियों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। स्वयं जा कर जाना केंद्र का हाल- कुमार संजीव वार्ड संख्या-34 के वार्ड पार्षद, कुमार संजीव ने बताया कि पीएसआई इंडिया की प्रतिनिधि द्वारा मुझे शौचालय की समस्या से अवगत कराया गया था. मैंने वहां जाकर देखा और अधिकारीयों से बातचीत करने के क्रम में मुझे शौचालय की जरुरत के बारे में बताया गया. मैं स्वयं शुगर का मरीज हूँ और मुझे कई बार शौचालय जाने की जरुरत पड़ती है. केंद्र पर कई महिलाएं एवं लड़कियां उपचार के लिए आती हैं और उन्हें शौचालय के बिना दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य केंद्र की महिला स्वास्थ्यकर्मियों ने भी अपनी पीड़ा बताई. इसलिए मैंने निर्णय लिया कि केंद्र में शौचालय का निर्माण मैं करवाऊंगा जिससे सभी को राहत हो। शुरू हो चुका है शौचालय का निमार्णः कंकड़बाग शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. राजकुमार चौधरी ने बताया कि पार्षद की पहल पर केंद्र में शौचालय का निर्माण शुरू हो चुका है और इसे जल्दी ही इसे पूरा करने की योजना है. इससे केंद्र में मौजूद स्वास्थ्यकर्मियों के साथ मरीजों की भी एक बड़ी समस्या का समाधान हो जायेगा. उन्होंने बताया कि इस स्वास्थ्य केंद्र से 72 आंगनवाड़ी केंद्र टैग हैं और वहां केंद्र के माध्यम से नियमित टीकाकरण कराया जाता है. मरीजों की मिलने वाली सुविधाओं का विस्तार हो सके इसके लिए नियमित प्रयास किया जा रहा है. डॉ. चौधरी ने बताया कि केंद्र पर साल में औसतन 1200 प्रसव पूर्व जांच की जाती है एवं 900 अंतरा सुई, 1500 छाया गर्भनिरोधक गली, 1600 माला-एन एवं करीब 10,000 कंडोम की सेवा लाभार्थियों को प्रदान की जाती है। ज्ञात हो कि पीएसआई इंडिया द्वारा आयोजित सिटी कोआर्डिनेशन कमिटी की बैठक में शौचालय एवं पेयजल की समस्या को रखा गया था एवं पटना नगर निगम के सिटी मेनेजर से अनुरोध किया गया था कि कंकड़बाग शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में शौचालय एवं पेयजल की सुविधा के लिए संबंधित एजेंसी से समंवय में सहयोग करें।

जबलपुर मंडल के सतना स्टेशन पर एनआई के मद्देनजर 11 जोड़ी ट्रेनों का परिचालन रद्द

प्रात :किरण संवाददाता

पटना/ हाजीपुर। जबलपुर मंडल के सतना स्टेशन पर सतना-बरेथिया नई लाईन के चालू करने हेतु 16 सितंबर से 25 सितंबर तक प्रीएनआई/ एनआई किया जाना है । इसके साथ ही 16 सितंबर से 27 सितंबर तक जबलपुर स्टेशन के प्लेटफॉर्म सं. 02 के वाशेबल एप्रोन के रिपेयर किया जाना है । इस कारण इस रेलखंड से गुजरने वाली 11 जोड़ी ट्रेनों का परिचालन निम्नानुसार रद्द किया जा रहा है - गाड़ी सं. 11651 जबलपुर-सिंगरौली एक्सप्रेस - 16 सितंबर से 27 सितंबर तक। गाड़ी सं. 11652 सिंगरौली-जबलपुर एक्सप्रेस- 17 सितंबर से 28 सितंबर तक। गाड़ी सं. 03225 दानापुर-सिकंदराबाद स्पेशल - 19 सितंबर को। गाड़ी सं. 03226 सिकंदराबाद-दानापुर स्पेशल - 22 सितंबर को। गाड़ी सं. 05293 मुजफ्फरपुर-सिकंदराबाद स्पेशल - 17 सितंबर एवं 24 सितंबर को। गाड़ी सं. 05294 सिकंदराबाद-मुजफ्फरपुर स्पेशल - 19 सितंबर एवं 26 सितंबर को। गाड़ी सं. 07021 सिकंदराबाद-दानापुर स्पेशल - 19 सितंबर को । गाड़ी सं. 07022 दानापुर-सिकंदराबाद स्पेशल - 20 सितंबर को। गाड़ी सं. 07647 सिकंदराबाद-दानापुर स्पेशल - 14 सितंबर एवं 21 सितंबर को। गाड़ी सं. 07648 दानापुर-सिकंदराबाद स्पेशल - 16 सितंबर एवं 23 सितंबर को। गाड़ी सं. 09025 वलसाड-दानापुर स्पेशल - 16 सितंबर एवं 23 सितंबर को। गाड़ी सं. 09026 दानापुर-वलसाड स्पेशल- 17 सितंबर एवं 24 सितंबर को। गाड़ी सं. 09033 उधना-बरौनी स्पेशल - 16, 18, 23 एवं 25 सितंबर को। गाड़ी सं. 09034 बरौनी-उधना स्पेशल - 18, 20, 25 एवं 27 सितंबर को। गाड़ी सं. 09045 उधना-पटना स्पेशल - 20 सितंबर को। गाड़ी सं. 09046 पटना-उधना स्पेशल- 21 सितंबर को।

स्मार्ट प्रीपेड मीटर के खिलाफ लोगों में गुस्सा, अगमकुआं में दिया धरना

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

चारों तरफ स्मार्ट मीटर के खिलाफ जनता में आक्रोश फैल रहा है। बिहार गरीब राज्य है और यहां बिहार सरकार सबसे ज्यादा महंगी बिजली महंगा बेच रही है। पुलिस प्रशासन का भय दिखा कर जबरदस्ती स्मार्ट मीटर लगाया जा रहा है, जबकि बिजली मंत्री विजेंद्र यादव के सरकारी आवास पर स्वयं स्मार्ट मीटर लगा हुआ नहीं है। अब राष्ट्रीय महापरिवर्तन मोर्चा चरणबद्ध आंदोलन चलाएगा। इसके तहत बहुत ही जल्द आंदोलन चलाया जाएगा। उक्त बातें राष्ट्रीय महापरिवर्तन मोर्चा के संयोजक ओमप्रकाश यादव ने कही। राष्ट्रीय सदाबहार पार्टी के निहाल अख्तर ने प्रिपेड मीटर को जनहित में कुठारघात बताया। संचालन भाकपा नेता शंभू शरण प्रसाद ने किया। जिला कार्यकारिणी सदस्य देवरत्न प्रसाद ने सरकार से जनहित में प्रीपेड मीटर वापस लेने की मांग की। इस अवसर पर कांग्रेस के परवेज अहमद, अभय जायसवाल, शमीम अख्तर, राजद से बलराम चौधरी, मोहम्मद जावेद, उमेश पंडित, मीरा यादव, मुन्ना जायसवाल, पूर्व पार्षद शिव मेहता, प्रोफेसर इकबाल अहमद, भाकपा से मंगल पासवान, उदयन राय, फॉरवर्ड ब्लॉक से अनिल शर्मा. एसआईएसएफ के राष्ट्रीय परिषद के सदस्य कुंदन कुमार और जिला कार्यकारिणी सदस्य आशीष कुमार बरनवाल थे। जनहित संघर्ष मोर्चा के अध्यक्ष विक्रम शाह, राष्ट्रीय सदाबहार पार्टी से शशि गुप्ता, संतोष कुशवाहा, जितेंद्र यादव, मनीष यादव, हमारा सहारा पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील सानंद, किसान पार्टी के जयलाल कुशवाहा, जन जागरण पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष डॉ राजकुमार आजाद आदि थे। सभा को संबोधित करने वालों में कांग्रेस के अरविंद कुमार, डॉ विनोद अवस्थी, राजद के रतन कुमार यादव, भाकपा के केसरी कुमार आदि शामिल थे।

सीमा शुल्क ने विदेशी मूल के विभिन्न प्रकार के प्रशाधन सामग्री को किया जब्त

प्रात :किरण संवाददाता

पटना । सीमा शुल्क, आयुक्तालय पटना के अंतर्गत मोतिहारी प्रमंडल के अधिकारियों के द्वारा प्राप्त सूचना के आधार पर सिकटा बाजार के समीप स्थानीय पुलिस के सहयोग से नेपाली एवं विदेशी मूल के विभिन्न प्रकार के प्रशाधन सामग्री को एक कमरा/गोदाम से शनिवार को जब्त किया, जिसका अनुमानित मूल्य 11.21 लाख है । जब्त किये गए प्रशाधन सामग्री नेपाली एवं विदेशी मूल के हैं जिन्हें बिना किसी वैध कागजात के अवैध रूप से रखा गया था। जैसा कि भारत सरकार द्वारा नेपाली एवं विदेशी मूल के प्रशाधन सामग्री का आयात विभिन्न नियमों के पालन किए बिना लाना एवं इसका बिक्री भारतीय बाजारों में प्रतिबंधित है। अधिकारियों ने बताया कि जब्त प्रशाधन सामग्री नियमों के विरुद्ध तस्करी कर भारत में लाया गया था क्योंकि इन प्रशाधन सामग्री को सीमा शुल्क और वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का भुगतान किए बगैर हमारे देश में तस्करी कर लाया गया था। जब्ती में शामिल अधिकारियों ने बताया कि फिलहाल इस बात की छानबीन की जा रही है कि इसके तस्करी में कौन-कौन लोग शामिल हैं।पिछले कुछ समय से यशोवर्धन पाठक, आयुक्त सीमा शुल्क (निवारण) पटना के दिशा-निर्देश में तस्करी के खिलाफ सघन एवं व्यापक अभियान चलाया जा रहा है और इसके फलस्वरूप तस्करी के अनेकों सामान जब्त किये गए हैं। आयुक्त यशोवर्धन पाठक ने बताया कि तस्करों द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र से ट्रेनों तथा अन्य माध्यमों से यथा सड़क मार्ग द्वारा भी अवैध तरीके से तस्करी कर विदेशी मूल के समानों को लाया जा रहा है तथा बिहार एवं झारखंड के इलाकों में इसकी बिक्री की सूचना है। हालांकि इसको रोकने के लिए पटना कस्टम्स पूरी तरह सक्षम और मुस्तैद है एवं आने वाले समय में इस तस्करी निरोधी अभियान को और गति तथा सख्ती मिलेगी। साथ ही संलिप्त लोगों के विरुद्ध सीमा शुल्क अधिनियम के तहत कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इसके अतिरिक्त अन्य विभागों यथा रेलवे पुलिस बल, पुलिस विभाग तथा अन्य सरकारी संस्थाओं और सूचना देने वाले का भी सीमा शुल्क विभाग द्वारा चलाए जा रहे इस तस्कर निरोधक काम में भविष्य में भी बेहतर समन्यवय और सहयोग अपेक्षित है ताकि ऐसी गैर कानूनी गतिविधि पर पूर्णविराम लग सके। इस संबंध में आयुक्त ने यह भी बताया कि तस्करी विरोधी अभियान में सहयोग करने वाले विभागों यथा रेलवे पुलिस बल, पुलिस विभाग तथा अन्य सरकारी संस्थाओं के अधिकारियों एवं सूचना देने वाले व्यक्तियों को सीमा शुल्क अधिनियम के अंतर्गत प्रोत्साहन राशि देने का भी प्रावधान है।

गणेश महोत्सव पर पंडाल में उमड़ रही है श्रद्धालुओं की भीड़

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

राजाओं के राजा विघ्नहर्ता सेवा समिति द्वारा चौक स्थित सनातन धर्म सभा भवन में आयोजित पांच दिवसीय श्री गणेश महोत्सव के तीसरे दिन श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। हजारों भक्त श्री गणेश का दर्शन एवं पूजन कर आशीर्वाद ले रहे हैं। सोमवार को पूर्व केंद्रीय मंत्री रामकृपाल यादव उपस्थित हुए। पूजा-अर्चना की तथा महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका का विमोचन भी किया। चित्रकला प्रतियोगिता में विजयी छात्रों को मोमेंटो एवं मेडल देकर सम्मानित भी किया गया। संचालन महोत्सव के संयोजक सह पूर्व सदस्य सीसीआईएम आयुष मंत्रालय भारत सरकार डॉ अजय प्रकाश ने करते हुए बताया कि भगवान श्री गणेश के स्मरण मात्र से कार्य सिद्ध हो जाता है और बधाएं दूर होती हैं। बिहार एक्युप्रेशर योग कॉलेज के चिकित्सकों द्वारा महोत्सव में निःशुल्क एक्युप्रेशर चिकित्सा शिविर के अंतर्गत रोगियों की चिकित्सा की गई। मैहर धाम मध्य प्रदेश से आए आदित्य प्रकाश जी द्वारा श्री गणेश पुराण कथा का प्रवचन भी दिया गया। श्रद्धालु गण भगवान श्री गणेश का आशीर्वाद लिया। अध्यक्ष डॉ टीपी गोलवारा, महासचिव विकास मौड़ीवाल, कोषाध्यक्ष अरुण कुमार मिश्रा, एक्युप्रेशर महागुरु डॉ सर्वदेव प्रसाद गुप्त, अनंत अरोड़ा, श्याम कुमार मिश्रा, भगवती प्रसाद मोदी, भोला महेशका, अनिल जेटली, मोहित कुमार मौड़ीवाल, जितेन्द्र कुमार, मनीष श्रीवास्तव, अमित कुमार, प्रियंका राय, आत्म बागला सहित दर्जनों पदाधिकारी एवं सदस्य सेवा कार्य में उपस्थित रहे।

दानापुर मंडल के सालिमपुर बिहार हाल्ट पर 04 पैसेंजर ट्रेनों का ठहराव

प्रात :किरण संवाददाता

पटना/ हाजीपुर। अगामी पर्व-त्योहरों के मद्देनजर यात्रियों की सुविधा हेतु दानापुर मंडल के सालिमपुर बिहार हाल्ट पर दिनांक 10 सितंबर से 30 नवंबर तक निम्नलिखित 04 पैसेंजर ट्रेनों का 01 मिनट का अस्थायी ठहराव प्रदान करने का निर्णय लिया गया है - गाड़ी सं. 03629 तिलैया-दानापुर पैसेंजर 21.52 बजे सालिमपुर बिहार पहुंचकर 21.53 बजे आगे के लिए प्रस्थान करेगी । गाड़ी सं. 03630 दानापुर-तिलैया पैसेंजर 10.46 बजे सालिमपुर बिहार पहुंचकर 10.47 बजे आगे के लिए प्रस्थान करेगी । गाड़ी सं. 03273 देवघर-पटना मेमू पैसेंजर 12.01 बजे सालिमपुर बिहार पहुंचकर 12.02 बजे आगे के लिए प्रस्थान करेगी । गाड़ी सं. 03214 पटना-झाझा मेमू पैसेंजर 16.05 बजे सालिमपुर बिहार पहुंचकर 16.06 बजे आगे के लिए प्रस्थान करेगी ।

सीएम नीतीश ने 210.59 करोड़ रुपये की लागत से 16 योजनाओं का किया उद्घाटन

199.48 करोड़ रुपये की लागत से 22 योजनाओं का किया शिलान्यास

बेलछी प्रखंड सह अंचल कार्यालय सह आवासीय भवन का किया उद्घाटन

प्रात: किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री ने बेलछी में प्रखंड सह अंचल कार्यालय सह आवासीय भवन का शिलापट्ट अनावरण कर एवं फीता काटकर उद्घाटन किया और नवनिर्मित भवन के विभिन्न भागों का निरीक्षण भी किया। मुख्यमंत्री ने 17.78 करोड़ की लागत से पटना जिला में नवनिर्मित मॉडल थाना भवन बाढ़, मॉडल थाना भवन हवाई अड्डा एवं मॉडल थाना भवन सम्यागढ़ का रिमोट के माध्यम से उद्घाटन किया। उन्होंने 23 प्रखंडों में 11 हजार 285 मुख्यमंत्री ग्रामीण सोलर स्ट्रीट लाइट, 23 प्रखंडों में 122 पुस्तकालय, कुल 21 सामुदायिक भवन सह वर्क शेड, सतत जीविकोपार्जन के लाभार्थी हेतु कुल 122 पशु शेड, 9 प्रखंडों में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन इकाई, ग्राम पंचायत कराय में ग्रामीण हाट, मुख्यमंत्री बागवानी मिशन योजना वर्ष 2023-24 अंतर्गत निर्मित 2 शेडनेट हाऊस, 19 आंगनबाड़ी केंद्र भवन और पटना जिला के विभिन्न प्रखंडों में 23 खेल मैदान का उद्घाटन किया। साथ ही मुख्यमंत्री ने 88.97 करोड़ रुपये की लागत से पटना जिला में 11 मॉडल थाना भवन और पटना जंक्शन सहित कुल 17 पुलिस भवनों का शिलान्यास किया। साथ ही मुख्यमंत्री ने पटना जिलांतर्गत फतुहा थाना में 20 महिला सिपाही बैरक, सचिवालय थाना में 20 महिला सिपाही बैरक, नेऊरा थाना में 20 महिला सिपाही बैरेक और नौबतपुर थाना में 20 महिला सिपाही बैरक के निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। इसके साथ ही मुख्यमंत्री ने 720 शैय्या के राजकीय अंबेडकर अनुसूचित जाति +2 आवासीय विद्यालय, फुलवारीशरीफ एवं मसौढ़ी का निर्माण, जीविका के लिए 20 ग्राम संगठन भवन का निर्माण, सतत जीविकोपार्जन के लाभार्थी हेतु कुल 900 नये पशु शेड का निर्माण, जल-जीवन-हरियाली अभियान अंतर्गत 1911 सोकपिट एवं 103 छत वर्षा जल संचयन संरचना का निर्माण और विभिन्न प्रखंडों में 50 आंगनबाड़ी केंद्रों हेतु भवनों के निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। इसके पश्चात मुख्यमंत्री ने बेलछी प्रखंड परिसर में ही विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉलों का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने ग्रामीण आवास योजना के लाभुकों को 1 लाख 20 हजार रुपये का सांकेतिक चेक प्रदान किया तथा 3469 जीविका समूहों को 55 करोड़ 30 लाख रुपये का सांकेतिक चेक प्रदान किया। साथ ही धनरुआ एवं नौबतपुर जीविका भवन की चाबी जीविका दीदियों को सौंपी।

ये रहें मौजूद : इस अवसर पर केंद्रीय पंचायती राज मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह, विधायक ज्ञानेंद्र सिंह ज्ञानू, विधान पार्षद नीरज कुमार, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, पथ निर्माण विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत, महानिदेशक सह अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, बिहार पुलिस भवन निर्माण निगम विनय कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव कुमार रवि, पथ निर्माण विभाग के सचिव संदीप पुडकल कट्टी, पटना प्रमंडल के आयुक्त मयंक बरबरे, पटना प्रक्षेत्र की पुलिस महानिरीक्षक गरिमा मलिक, जिलाधिकारी डॉ चंद्रशेखर सिंह, बिहार राज्य पथ विकास निगम के प्रबंध निदेशक सह बिहार राज्य पुल विकास निगम लिमिटेड के अध्यक्ष शीर्षत कपिल अशोक, पटना के वरीय पुलिस अधीक्षक राजीव मिश्रा सहित अन्य वरीय अधिकारीगण एवं भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारी भी उपस्थित थे।

औंटा-सिमरिया गंगा नदी पर सिक्स लेन पुल का किया निरीक्षण

मुख्यमंत्री ने औंटा-सिमरिया गंगा नदी पर सिक्स लेन पुल सहित परियोजना का निरीक्षण किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने निमाणार्धीन कार्य का जायजा लिया और निर्माण कार्य तेजी से पूर्ण करने का निर्देश दिया। इस परियोजना के संबंध में मुख्यमंत्री ने भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों से भी जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने इस परियोजना की समीक्षा के दौरान कहा कि इस नये पुल का निर्माण कार्य पूर्ण होने से बेगूसराय की तरफ जाने के लिए लोगों को और सहूलियत होगी। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को कहा कि नये पुल और पुराने पुल से जब उस तरफ लोग पहुंचेंगे तो वाहनों की संख्या अधिक होने से जाम की समस्या उत्पन्न हो सकती है इसको ध्यान में रखते हुए बेगूसराय की ओर 10 किमी एलिवेटेड रोड के निर्माण के लिए केंद्र सरकार को पत्र लिखें। इससे बेगूसराय की ओर जानेवाले लोगों को आवागमन में सहूलियत होगी और उन्हें किसी प्रकार के जाम की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। मुख्यमंत्री ने मरांची में नवनिर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का शिलापट्ट अनावरण कर एवं फीता काटकर उद्घाटन किया और नवनिर्मित स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण किया तथा स्वास्थ्य व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी ली।

स्वच्छता के लिए मेरा शहर मेरी जवाबदेही अभियान का एलान

मिशन टोटल सेग्रीगेशन की शुरूआत

प्रात: किरण संवाददाता

पटना। नगर विकास एवं आवास मंत्री नितिन नवीन ने सोमवार को पटना के आवास बोर्ड में मिशन टोटल सेग्रीगेशन का उद्घाटन किया। इस अभियान का उद्देश्य स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 में बेहतर प्रदर्शन और शहर को कचरा मुक्त बनाना है। मंत्री ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि इस मुहिम के तहत पटना नगर निगम शहरवासियों से सूखा और गीला कचरा अलग-अलग देने की अपील करेगा ताकि कचरे का उचित संग्रहण और निष्पादन किया जा सके।

मंत्री ने बताया कि मेरा शहर मेरी जवाबदेही के तहत इस अभियान में विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों, कॉलेजों, कोचिंग संस्थानों, स्कूलों और सामाजिक संगठनों को शामिल किया जाएगा। इस ड्राइव में प्रभावी लोगों को सफाई एंबेसडर बनाया जाएगा। पटना नगर निगम के सफाई इंस्पेक्टर, ड्राइवर, हेल्पर और मोबिलाइजर को विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। यह पहली बार है कि पटना नगर निगम की गाड़ियों में ड्राइवर और हेल्पर के साथ एक अतिरिक्त मोबिलाइजर भी शामिल होगा। अभियान की औपचारिक शुरूआत 19 सितंबर को राज्यपाल की उपस्थिति में की जाएगी। मंत्री ने बताया कि दो हजार नगर निगम कर्मियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिसमें स्वयं सहायत समूह की महिलाएं भी शामिल होंगी ये महिलाएं डोर-टू-डोर कचरा गाड़ी के साथ घर-घर जाएंगी।

इसके साथ ही, वाहन साथी सह कूड़ा पृथक्करण पंजी भी जारी की जाएगी, जिससे गाड़ियों के रूट चार्ट, ठहराव स्थल, पहुंचने का समय और कचरा फेंकने वाले संस्थानों की पहचान की जा सकेगी।

भाजपा नेता की हत्या, तेजस्वी ने सरकार पर कसा तंज

प्रात: किरण संवाददाता

पटना। पटना शहर के चौक थाना इलाके में सोमवार की सुबह एक स्थानीय भाजपा नेता की एक मोटरसाइकिल पर सवार दो अज्ञात सशस्त्र हमलावरों द्वारा गोली मारकर कथित तौर पर हत्या कर दी गई। मृतक की पहचान स्थानीय भाजपा नेता मुन्ना शर्मा के रूप में की गई है। पटना जिला पुलिस द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, सोमवार की सुबह लगभग 6.15 बजे मुन्ना शर्मा को पटना शहर के चौक थाना इलाके के एक रेस्तरां के पास कुछ अज्ञात सशस्त्र हमलावरों ने गोली मार दी। घटना के बाद हमलावर एक मोटरसाइकिल पर सवार होकर फरार हो गए। पुलिस के अनुसार, जख्मी शर्मा को उनके परिजन अस्पताल ले गए जहां उन्होंने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। हमलावरों का पता लगाने के लिए पुलिस घटनास्थल एवं आस-पास के सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है। राजद नेता और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने इस घटना को लेकर एक वीडियो साझा करते हुए सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, बिहार में सत्ता के संरक्षण में अपराध फल-फूल रहा है। अपराधी जब चाहे, जहां चाहे, किसी को भी गोली मारकर भाग जा रहे हैं। वीडियो में भाजपा नेता को गोली मारकर भागते अपराधी। राजग के कर्ता-धर्ता बढ़ते बेलगाम अपराध से बेखबर हैं। इधर-उधर में मस्त, व्यस्त और पस्त मुख्यमंत्री से बिहार बिल्कुल भी नहीं संभल रहा।

बिहार में कानून का राज, अपराधी बच नहीं सकता : दिलीप

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बोलें- भाजपा नेता की हत्या दुखद, पार्टी के लोग मर्माहत

प्रात: किरण संवाददाता

पटना। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार के राजस्व और भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने आज पटना सिटी में भाजपा नेता श्यामसुंदर शर्मा की अपराधियों द्वारा की गई हत्या को दुखद बताते हुए कहा कि इस घटना के बाद भाजपा के सभी लोग मर्माहत हैं। उन्होंने इस घटना पर दुख जताते हुए कहा कि इस संबंध में मेरी एसएसपी से भी बात हुई है। जल्द ही अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि बिहार में कानून का राज है और आपराधिक घटना नहीं घटे इसकी चिंता भी सरकार कर रही है। पत्रकारों से चर्चा के दौरान विपक्ष के नेताओं द्वारा कानून व्यवस्था को लेकर सवाल उठाए जाने पर बिहार के मंत्री डॉ. जायसवाल ने कहा कि विपक्ष के नेता को अपराध पर बोलने का नैतिक अधिकार नहीं है। राजद के शासनकाल या उनके पिताजी के शासनकाल में अपराध भी होता था और अपराधियों को संरक्षण भी दिया जाता था। आज के समय मे अपराध नहीं हो इसकी चिंता की जाती है। अपराधी बच नहीं सकता है यह नीतीश कुमार की सत्ता का अख्तियार है। उन्होंने कहा कि विपक्ष के पास कोई मुद्दा नहीं है, इस कारण इस तरह की बात करते रहता है। उन्होंने कहा कि अपराधी बचे नहीं यह आज की सरकार की सोच है। उन्होंने कहा कि उनकी पटना एसएसपी से बात हुई है और साफ निर्देश दिया हूं कि भाजपा नेता हत्या के मामले में एसआईटी का गठन कर हत्यारे की खोज की जाए और दोषियों को सजा दिलवाई जाए। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि कोई भी अपराधी कितना भी बड़ा हो वह बच नहीं सकता है।

कमलदेव नारायण शुक्ला कांग्रेस से निष्कासित

पटना। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अनुशासन समिति के द्वारा दल विरोधी गतिविधियों के कारण कमलदेव नारायण शुक्ला को पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से छः वर्षो के लिए निष्कासित कर दिया गया। साथ ही सोशल मीडिया पर लगातार दल विरोधी गतिविधियों के कारण अरुण पाठक को कारण बताओ नोटिस जारी करते हुए एक सप्ताह के भीतर जवाब देने का समय दिया गया और संतोषजनक जवाब ना देने की स्थिति में उनको भी छः वर्षो के लिए पार्टी के प्राथमिक सदस्यता से निलंबित कर दिया जायेगा। बिहार कांग्रेस के अनुशासन समिति के अध्यक्ष पूर्व मंत्री कृपानाथ पाठक ने बैठक के उपरांत सर्वसम्मति से इस आशय का पत्र जारी किया है।

वह दौर आज भी याद है जब शाम होते ही लोग घरों में दुबक जाते थे: मंगल

बच्चों को स्कूल भेजने में डरती थी माएं, वापसी तक रहती थी बेचैन

प्रात: किरण संवाददाता

पटना। भाजपा के वरिष्ठ नेता व स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने कहा है कि बिहार में एक दौर वह भी था जब शाम को लोगों का घरों से निकलना दूभर था। लालू यादव के शासनकाल में लोग देर शाम घरों से बाहर नहीं निकलते थे। बच्चों को स्कूल भेजने से माएं डरती थीं। स्कूल गए बच्चों की सकुशल वापसी तक वह बेचैन रहती थीं। पटना के मासूम छात्र किसलय के अपहरण के बाद तो पूरे बिहार में दहशत का माहौल कायम हो गया था। श्री पांडेय ने कहा कि फिरौती के लिए अपहरण के उस दौर में स्थिति काफी खराब थी। देर शाम पटना जंक्शन पर उतरने वाले यात्रियों को पूरी रात वहीं गुजारनी पड़ती थी। बाहर गए किसी परिजन को घर आने में ज्यादा देर हुई तो परिवार में कोहराम मच जाता था। पुलिस की ओर से जब भी कोई लाश बरामद होती थी, लोग अपनों के बारे में सोच कर भयातुर हो जाते थे। उन्होंने कहा कि 2005 के अंत में जब जदयू-भाजपा यानी एनडीए की बिहार में सरकार बनी तब हालात सुधरे। कानून का शासन स्थापित होने के बाद अपराधियों में कानून का खौफ बढ़ा। स्पीडी ट्रायल ने अपना काम बखूबी किया। नवम्बर 2005 से 2020 के बीच 56 हजार से ज्यादा अपराधी जेल भेजे गए। लालू के कार्यकाल में चार्जशीट दाखिल होना और अपराधियों का जेल जाना सपना था। एनडीए के शासनकाल में स्पीडी ट्रायल के जरिए अपराधियों में खौफ पैदा किया गया। नतीजतन फिरौती के लिए अपहरण की वारदातों पर लगाम लगी।

वक्फ संपत्ति पे केंद्र सरकार की नियत संदिग्ध विरोध जारी रखेगी कांग्रेस : अखिलेश

बिहार माइनॉरिटी फोरम द्वारा आयोजित ऑनलाइन परिचर्चा में बोलें प्रदेश अध्यक्ष

प्रात: किरण संवाददाता

पटना। बिहार माइनॉरिटी फोरम ने रविवार को वक्फ संशोधन विधेयक के दुष्प्रभावों और खामियों पर चर्चा के लिए एक महत्वपूर्ण जूम बैठक का आयोजन किया। जिसमें बिहार कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ. अखिलेश प्रसाद सिंह और अमीर-ए-शरीअत बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड मौलाना वली फैसल रहमानी सहित कई प्रमुख हस्तियों ने भाग लिया। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि कांग्रेस पार्टी इस विधेयक का विरोध हर संभव राजनीतिक तरीके से करेगी।

उन्होंने जोर देकर कहा कि कांग्रेस पार्टी किसी भी ऐसे कानून के खिलाफ है जो अल्पसंख्यकों के अधिकारों को कमजोर करता है, और उन्होंने सभी संबंधित मंचों पर इस मुद्दे को उठाने का संकल्प लिया। सिंह ने कहा कि हम पहले ही बिल को लेकर सतर्क हैं। मौलाना वली फैसल रहमानी ने विधेयक के नकारात्मक प्रभावों को उजागर करते हुए विस्तृत आंकड़े प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि प्रस्तावित संशोधन वक्फ संपत्तियों की स्वायत्तता और ऐतिहासिक अधिकारों को कमजोर करता है। उन्होंने विधेयक में कई खामियों की ओर ध्यान दिलाया, जो अल्पसंख्यक समुदायों के अधिकारों को खतरे में डालती हैं और संवैधानिक सुरक्षा का उल्लंघन करती हैं। बैठक में कई प्रतिभागियों ने विधेयक के प्रभावों को लेकर सवाल पूछे। मौलाना वली फैसल रहमानी और अन्य विशेषज्ञों ने बेहतरीन तरीके से जवाब देते हुए उठाए गए सवालों और शंकाओं को स्पष्ट किया। बिहार माइनॉरिटी फोरम ने वक्फ संशोधन विधेयक के प्रति अपने कड़े विरोध को व्यक्त किया और जनता की राय को संगठित करने तथा राजनीतिक नेताओं को शामिल करने के अपने प्रयास जारी रखने का संकल्प लिया, ताकि विधेयक को मौजूदा स्वरूप में रोका जा सके। फोरम ने वक्फ संस्थाओं की धरोहर और अधिकारों की रक्षा के लिए सभी हितधारकों के एकजुट होने का आह्वान किया। इस सत्र का संचालन मिन्नत रहमानी और शिबली मंजूर द्वारा किया गया, जिन्होंने इस विवादित विधेयक पर व्यापक चर्चा को सुगम बनाया।

पूर्व विस अध्यक्ष हिदायतुल्लाह खान की पत्नी के निधन पर कांग्रेस में शोक

पटना। बिहार विधानसभा के अध्यक्ष रहें और प्रदेश कांग्रेस कमिटी के पूर्व अध्यक्ष स्व. हिदायतुल्लाह खान की धर्मपत्नी कमरून निशा खानम के निधन पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने शोक जताया है। अपने शोक संदेश में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि कमरून निशा खानम गांधीवादी जीवन में विश्वास रखती थी और बड़े राजनीतिक परिवार से होने के कारण लगातार सामाजिक क्षेत्र में अपना सकारात्मक योगदान देते रही हैं। उनके निधन से हमने एक अभिभावक को खोया है। बताते चले कि उनके पुत्र सैफुल्लाह खान चंपारण जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहें हैं। महरूम कमरून निशा खानम के निधन पर प्रदेश अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह के अलावे विधानमंडल दल के नेता डॉ शकील अहमद खान, पूर्व अध्यक्ष व विधान परिषद में दल के नेता डॉ मदन मोहन झा, ब्रजेश पांडेय, निर्मल वर्मा, मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़, बंटी चौधरी, प्रभात द्विवेदी, राहुल मिश्र, उमेश राम सहित अन्य नेतागण ने शोक जताया है।

राहुल गांधी के बयान पर चिराग ने जताया एतराज

प्रात: किरण संवाददाता

पटना। केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री सह लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने सोमवार को पटना एयरपोर्ट पर पत्रकारों से बात करते हुए कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के टेक्सास में दिए गए बयान पर कड़ी प्रतिक्रिया जाहिर की चिराग ने कहा कि जिस तरह से राहुल गांधी ने विदेश जाकर भारत को बुरा-भला कहने की आदत डाली है, वह कहीं न कहीं गलत राजनीति की परंपरा की शुरूआत है। सत्ता पक्ष और विपक्ष में हमेशा से मतभेद रहे हैं, लेकिन अपने राजनीतिक मतभेदों को अपने निजी राजनीतिक फायदे के लिए विदेशी मंच पर जाकर अपने ही देश को बुरा-भला कहना ठीक नहीं है। आप नेता प्रतिपक्ष हैं, आप सरकार के सामने अपने सुझाव, अपनी चिंताएं भी रख सकते हैं, लेकिन विदेश जाकर इस तरह भारत को बुरा-भला कहना ठीक नहीं है। इस आशय की जानकारी पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन कुमार ने दी।

देश और पद की प्रतिष्ठा को भूल चुके राहुल-तेजस्वी : विजय

प्रगति के रोडमैप को धरातल पर उतारना हमारी प्राथमिकता

पटना। उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने कहा है कि चाहे राहुल गांधी हों या तेजस्वी यादव या फिर इनके इंडी जमघट के अन्य नेता हों इनसब में दो बातें सामान्य हैं। एक तो ये सभी परिवारवाद के पोषक हैं और दूसरे इन सभी में नकारात्मक राजनीति का नायक बनने की होड़ लगी है। इन्हें न अपने पद की गरिमा का खयाल है और न ही अपने देश और राज्य की छवि की चिंता है। श्री सिन्हा ने आगे कहा कि राहुल गांधी विदेश में जाकर भारत की सनातन संस्कृति और सोच पर सवाल उठाते हैं। चुनाव आते ही राजनीतिक फायदे के लिए उसी संस्कृति के प्रतीकों का इस्तेमाल कर स्वांग भी रचते हैं। अपनी अतार्किक बातों का वजन बढ़ाने के लिए आधारहीन रूप से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे प्रतिष्ठित सांस्कृतिक संगठन पर सवाल उठाते हैं। जबकि स्वयं इनके परनाना ने गणतंत्र दिवस के मौके पर निकलने वाली झांकी में संघ के स्वयंसेवकों को आमंत्रित कर सम्मानित किया था। देश की बेरोजगारी पर सवाल उठाते हैं, जाति और मजहब पर आधारित विभाजन को बढ़ाने का प्रयास करते हैं। जबकि इनकी पार्टी और उसमें भी इनके पूर्वज ही सबसे लंबे समय तक सत्ता में रहे हैं। आज जब राहुल जी ये मुद्दे उठाते हैं तो उन्हें अपनी पार्टी और पुरखों का बही-खाता भी दुनिया के सामने रखना चाहिए। श्री सिन्हा ने कहा कि हमारे प्रदेश में भी राहुल गांधी को अपना हीरो मानने वाले एक नौजवान नेता हैं।

प्रेस वार्ता बोलें- औघोगिक विकास तथा रोजगार सृजन को लेकर विभाग प्रयासरत

सूबे के सात जिलों में विकसित होंगे औद्योगिक क्षेत्र : मंत्री

प्रात: किरण संवाददाता

पटना। बिहार के सात जिलों में औद्योगिक क्षेत्र विकसित किए जाएंगे। ये जिलें अरवल, जमुई, कैमूर, सारण, शिवहर, बांका व शेखपुरा है, जहां औद्योगिक क्षेत्र विकसित होंगे। उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा ने सोमवार को सूचना एवं जनसंपर्क के सभागार में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान यह जानकारी दी। मंत्री ने बताया कि प्रदेश में उद्योग को बढ़ावा देने के लिए औद्योगिक क्षेत्र का विस्तार करने की योजना है। राज्य के उन सभी ज़िलों में औद्योगिक क्षेत्र विकसित किए जाएंगे जिनमें अभी तक ऐसा नहीं हुआ है। इन ज़िलों में औद्योगिक क्षेत्रों का विकास आवागमन में आसानी के लिए राष्ट्रीय और राज्य हाईवे के पास किया जाएगा। जमीन की जरूरत के मुताबिक, जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया बाद में की जाएगी। मंत्री ने कहा कि उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा ने कहा है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 2005 से ही अधारभूत संरचना को बेहतर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण काम किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र की एनडीए सरकार भी बिहार की प्रगति को लेकर हरसंभव मदद कर रही है। मंत्री ने बताया कि उद्योग विभाग राज्य में सूक्ष्म से लेकर बृहद उद्योगों की स्थापना, स्टार्ट अप, को प्रोत्साहन एवं औघोगिक विकास तथा रोजगार सृजन को लेकर लगातार कार्य कर रहा है। रोजगार मिलेगा। मंत्री ने बताया कि दिसंबर 2023 को पटना में आयोजित इन्वेस्टर समिट में 278 कंपनियों के साथ 50,530 करोड़ रुपये के हुए एमओयू में से 36 हजार करोड़ के निवेश प्रस्ताव धरातल पर उतरने शुरू हो गये हैं। निवेश की यह कवायद 236 कंपनियों ने शुरू की है। इनमें से करीब 132 कंपनियों ने उत्पादन की कवायद भी शुरू कर दी है। उद्योग मंत्री ने बताया कि बिहार पूर्वी भारत का ग्रोथ इंजन बनने की राह पर है। उन्होंने बताया कि बिहार में कंप्रेस्ड बायोगैस की यूनिट स्थापित की जायेंगी। ऑयल कंपनियां इस क्षेत्र में बड़ा निवेश करेंगी। इसी तरह राज्य के सभी अनुमंडलों में उद्यमिता विकास केंद्र स्थापित किये जायेंगे। इससे युवाओं में उद्यमिता को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि बिहार में अदाणी और दूसरे बड़े समूहों ने एक हजार करोड़ से अधिक के निवेश करने जा रहे हैं। उद्योग मंत्री ने बताया कि बिहार अब वन प्रोडक्ट -वन डिस्ट्रक्ट के विचार से आगे बढ़ते हुए वन ब्लॉक -वन प्रोडक्ट को लागू करने जा रहा है। इसके जरिये हम प्रत्येक ब्लाक के उत्पाद को पहचान दिलाने चाहते हैं। बताया कि भागलपुर,बांका, गया में टेक्सटाइल जोन या क्लस्टर स्थापित करने के लिए केंद्र ने मंजूरी दे दी है। अमृतसर-कोलकाता कॉरीडोर और उस पर गया में विकसित किये जा रहे इंटीग्रेटेड मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर के विकास पर सरकार 28 हजार करोड़ खर्च करेगी। इससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर 10 लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा। बहुत जल्दी ड्रायपोर्ट भी स्थापित होगा। मंत्री ने कहा कि राज्य में एक ऐसा ऑन लाइन सिस्टम विकसित किया जायेगा, जिससे उद्यमी की मांग और उनकी समस्याओं का समाधान किया जा सकेगा। उद्योग विभाग की सचिव वंदना प्रेयसी ने बताया कि एमएसएमइ के जरिये ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करान सरकार की प्राथमिकता है। बिहार को एक औद्योगिक राज्य बनाने की दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। बियाडा के मैनेजिंग डाइरेक्टर कुंदन कुमार ने बताया कि अभी औद्योगिक क्षेत्र नहीं हैं, यहां जल्दी ही औद्योगिक क्षेत्र विकसित किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि बिहार फाउंडेशन की गतिविधियां सकारात्मक दिशा में हैं। प्रेस वार्ता में उद्योग विभाग के वरिष्ठ अफसर मौजूद रहे।

बिहार ने ही हिन्दी को पहला मौलिक उपन्यास दिया, पहली कहानी भी

भारतेन्दु जयंती पर साहित्य सम्मेलन में आयोजित हुई संगोष्ठी

प्रात: किरण संवाददाता

पटना। हिन्दी भाषा और साहित्य के उन्नयन में बिहार के साहित्यकारों का अन्यतम योगदान है। बिहार में ही हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास लिखा गया। आरा के यशस्वी साहित्यकार ब्रजनंदा सहाय ब्रजवल्लभ ने सौंदयोपासक नामक उपन्यास लिखा था, जिसे हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना जाता है। इसके पूर्व के उपन्यास अन्य भाषाओं के अनुवाद थे। उसी प्रकार हिन्दी की प्रथम कहानी लिखने का भी श्रेय बिहार के ही पं सदल मिश्र को जाता है, जिन्होंने नासिकेतपाख्यायन नामक कहानी लिखी थी। यह बातें सोमवार को बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भारतेन्दु जयंती के अवसर पर हिन्दी साहित्य में बिहार का योगदान विषय पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन अध्यक्ष डा अनिल सुलभ ने कही। उन्होंने कहा कि हिन्दी कविता के क्षेत्र में भी बिहार का योगदान अप्रतिम है। इस विषय पर अपना व्याख्यान देते हुए वरिष्ठ साहित्यकार जियालाल आर्य ने कहा कि बिहार और उत्तरप्रदेश के साहित्यकारों के अवदानों से हिन्दी-साहित्य का भंडार भरा। प्राचीन हिन्दी से लेकर आधुनिक हिन्दी के उन्नयन में भी इन दोनों राज्यों का अप्रतिम योगदान रहा है। सम्मेलन के उपाध्यक्ष ने कहा कि राष्ट्र कवि दिनकर, रामवृक्ष बेनीपुरी, राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह, आचार्य शिवपूजन सहाय, बाबा नागार्जुन, केदारनाथ मिश्र ह्यप्रभातह्न, गोपाल सिंह नेपाली जैसे कवियों लेखकों ने अपने योगदान से बिहार का गौरव बढ़ाया। सम्मेलन की उपाध्यक्ष डा मधु वर्मा, डा सीमा रानी, आनन्द किशोर मिश्र, कमल किशोर वर्मा ह्यकमलह्न, डा इन्दु पाण्डेय, बाँके बिहारी साव, चंदा मिश्र आदि वक्ताओं ने अपने विचार रखे। मंच का संचालन ब्रह्मानन्द पाण्डेय ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्ण रंजन सिंह ने किया। आरंभ में भारतेन्दु के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धा-पूर्वक स्मरण किया गया। इस अवसर पर डा कल्याणी सिंह, श्यामा झा, मधुकर सिंह, भास्कर त्रिपाठी, प्रमोद आर्य, राम प्रसाद ठाकुर, दुःख दमन सिंह, राकेश रंजन सिन्हा, नन्दन कुमार मीत, रवींद्र कुमार सिंह, राहूल कुमार, मयंक मानस, डौली कुमारी, महफूज आलम आदि प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातःकिरण
पटना, मंगलवार, 10 सितम्बर, 2024

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

संक्षिप्त खबरें

गिरिराज चौक के बोर्ड पर दर्ज कराई आपत्त

मुजफ्फरपुर। भाकपा के छात्र संगठन एआईएसएफ ने डीएम एवं नगर आयुक्त को आवेदन देकर शहर के कलमबाग चौक पर कुछ लोगों द्विरा लगाए गिरिराज चौक का बोर्ड हटवाने की मांग की है। आवेदन में कहा गया है कि गत माह में कलमबाग चौक से 100 मीटर पूरव अघोरिया चौक की ओर जाने के मार्ग में गिरिराज चौक का बोर्ड फ्लैक्स पर अंकित करके लगा दिया गया। उसके अगले दिन जिले के सभी लोगों के बीच अखबार के माध्यम से यह खबर मिली कि कुछ असामजिक तत्वों के द्वारा ऐसा कार्य किया गया है।यह खबर देख कर ऐसा लगा कि बोर्ड को हटा दिया जाएगा लेकिन अगले एक सप्ताह के अंदर सरकारी बोर्ड जैसा बोर्ड लगा दिया गया। यह बोर्ड देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि सच में इस चौक का नाम अब गिरिराज चौक कर दिया गया है। इसे एआईएसएफ मुजफ्फरपुर की सांस्कृतिक विरासत पर हमला समझता है।मुजफ्फरपुर में नाम बदलने वाली संस्कृति को एआईएसएफ बर्दास्त नहीं करेगा आने वाले दिनों नगर आयुक्त के समक्ष भी प्रदर्शन करेगा। मांग की गई है कि अगर यह बोर्ड अवैध रूप से लगाया गया है तो इसे हटवाया जाए।

साक्षरता एवं हिन्दी दिवस के लिए कार्यशाला आयोजित

मुजफ्फरपुर। निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् के निदेश के आलोक में डायट रामबाग, मुजफ्फरपुर में आज व्याख्याता डॉ० निर्मल कुमार के संयोजकत्व में अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस-20 के अवसर पर अभ्यास विद्यालयों में ह्लसाक्षरता एवं हिन्दी दिवस मनाने हेतु अभ्यास विद्यालय के प्रधानाध्यपको एवं उनके भाषा के शिक्षकों का एक कार्यशाला का आयोजित किया गया। डायट के प्राचार्य अनामिका कुमारी ने अभ्यास विद्यालय के सभी प्रधानाध्यापक को अपने विद्यालय में साक्षरता एवं हिन्दी दिवस मानने हेतु प्रेरित किया।

गिरिराज चौक के बोर्ड पर दर्ज कराई आपत्ति।

मुजफ्फरपुर। भाकपा के छात्र संगठन एआईएसएफ ने डीएम एवं नगर आयुक्त को आवेदन देकर शहर के कलमबाग चौक पर कुछ लोगों द्विरा लगाए गिरिराज चौक का बोर्ड हटवाने की मांग की है। आवेदन में कहा गया है कि गत माह में कलमबाग चौक से 100 मीटर पूरव अघोरिया चौक की ओर जाने के मार्ग में गिरिराज चौक का बोर्ड फ्लैक्स पर अंकित करके लगा दिया गया। उसके अगले दिन जिले के सभी लोगों के बीच अखबार के माध्यम से यह खबर मिली कि कुछ असामजिक तत्वों के द्वारा ऐसा कार्य किया गया है।यह खबर देख कर ऐसा लगा कि बोर्ड को हटा दिया जाएगा लेकिन अगले एक सप्ताह के अंदर सरकारी बोर्ड जैसा बोर्ड लगा दिया गया। यह बोर्ड देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि सच में इस चौक का नाम अब गिरिराज चौक कर दिया गया है।

सरकार की अच्छी पहल पशुपालको के द्वार अब पहुंचेगा पशु चलंत अस्पताल

मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा ने हरी झंडी दिखाकर पशु चिकित्सा चलंत अस्पताल को किया रवाना जिले के सुदूर क्षेत्रो मे भी बीमार पशुओं को अब त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध. बीमार पशुओ को चिकित्सालय लाने मे लगने वाले समय और खर्च की होगी बचत. चलंत पशु अस्पताल मे डॉक्टर पैरा वैट के साथ दवा लघु शल्य चिकित्सा टीकाकरण के साथ कृत्रिम गभाधांन की भी होगी व्यवस्था.कॉल सेंटर के टॉल फ्री नंबर 1962 पर पशुपालक करें संपर्क आपके द्वार तक पहुंचेगी पशु चिकित्सा की व्यवस्था है।

योजनाओं को समय सीमा के अंदर पूरा किया जाए : प्रो विनय चौधरी

प्रात : किरण संवाददाता

बेनीपुर(दरभंगा)। विधायक प्रो विनय कुमार चौधरी ने कहा कि सरकारी योजनाओं को समय सीमा के अंदर गुणवत्तापूर्ण कार्य पूरा किए जाने से ही आम लोगों को समुचित लाभ मिल सकता है। सोमवार को प्रखंड क्षेत्र के शिवराम गांव में मुख्यमंत्री क्षेत्र विकास योजना अंतर्गत विधायक एच्छिक कोष से पांच लाख रुपए की लागत से नवनिर्मित छठ घाट का लोकार्पण कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने आम लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि आज बिहार में नीतीश कुमार के नेतृत्व में न्याय के साथ विकास का काम द्रुति गति से चल रही है जिसमें सभी जाति धर्म वर्ग के लोगों को समान अवसर प्रदान किया जा रहा ह। हर क्षेत्र में तेजी से कार्य किया जा रहे हैं चाहे सड़क का मामला हो, स्वास्थ्य का मामला हो,शिक्षा का मामला हो,या फिर समाज कल्याण का कार्य ही क्यों ना हो।विधायक श्री चौधरी ने आम लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि आपका यह विधायक एक सेवक और आपके भाई के रूप में उपस्थित है ।जिसके समक्ष आप अपनी समस्या सीधे रख सकते हैं यथासंभव समाधान करने का प्रयास किया जाएगा।इस अवसर पर प्रमुख चौधरी मुकुंद कुमार राय ,पंचायत समिति सदस्य प्रेम कुमारी,अंजू देवी, मुखिया शत्रुघ्न महतो,उप प्रमुख नूनू महतो ,सजनपुरा के मुखिया कुंदन सिंह ,पप्पू सिंह समिति सदस्य प्रेम मिश्र धीरज झा रामकुमार राम लालबाबू झा राहुल झा कार्यक्रम अध्यक्षता मंटू चौधरी ,कारी लालदेव ,बासुकी जी ,पारस देव गुरुदेव श्रीकांत जी ब्रह्मचारी ,बब्लू राय ,बेचन झा ,लालबाबू यादव ,गोविंद चौधरी ,बी पी सिंह ,मिट्ठू झा ,मोहम्मद तनवीर ,श्याम साह ,स्वागत गान डब्लू नजरिया और मंटू चौधरी के द्वारा किया गोविंद चौधरी श्याम सहित कई गनमान्य और समस्त ग्रामीण उपस्थित लोग थे।

जल जीवन हरियाली अभियान को लेकर हुई समीक्षा बैठक,दिये निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। डॉ.भीमराव अम्बेडकर सभागार में जिलाधिकारी राजीव रौशन के निदेर्शानुसार उप विकास आयुक्त, दरभंगा चित्रगुप्त कुमार की अध्यक्षता में जल जीवन हरियाली अभियान के अन्तर्गत निर्धारित 11 अवयवों पर किए जा रहे कार्य प्रगति की समीक्षा बैठक हुई।

बैठक में जल स्त्रोतों को अतिक्रमण मुक्त करने, नए जल स्त्रोतों का निर्माण,आहर,पईन का जीर्णोद्धार,सार्वजनिक कुआँ का जीर्णोद्धार, चापाकल एवं कुआँ के समीप सोख्ता का निर्माण,चेक डैम, छत वर्षा जल संचयन का निर्माण, पौधारोपण,टपकन सिंचाई, सौर ऊर्जा एवं जैविक खेती की समीक्षा की गई।उप विकास आयुक्त ने सभी प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी एवं पीओ मनरेगा को जीर्णोद्धार कराए गए कुआं एवं चापाकल के समीप सोख्ता निर्माण कराने के निर्देश दिए और जल-जीवन-हरियाली पोर्टल पर मार्क करने के भी निर्देश दिए।भवनों पर छत वर्षा जल संचयन की संरचना का निर्माण सभी पंचायत सरकार भवन पर कराने के निर्देश प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी को दिए।

बैठक में बताया गया की शिक्षा एवं स्वास्थ्य के द्वारा वर्षा जल संचयन की संरचना का निर्माण शत-प्रतिशत करा लिया गया है।उप विकास आयुक्त ने सभी कार्यक्रम पदाधिकारी को एक सप्ताह के अंदर सार्वजनिक जल संचयन संरचना का सर्वेक्षण करवा कर प्रतिवेदन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया।उन्होंने सार्वजनिक जल संचयन संरचनाओं यथा- तालाबों, पोखरों,आहरों, पईनों का अतिक्रमण मुक्त कराने को लेकर सभी संबंधित पदाधिकारी को की आवश्यक निर्देश दिए।

बैठक में बताया गया कि चापाकल एवं कुआँ के समीप सोख्ता निर्माण के कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए गए।चेक डैम के संबंध में बताया गया कि मनरेगा के माध्यम लघु सिंचाई विभाग के माध्यम से चेक डैम का निर्माण करवाया गया है।बैठक में जिला मिशन प्रबंधक जल-जीवन-हरियाली ऋतुराज, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी आमना जोहरा,प्रखंड पंचायती राज अधिकारी आदि उपस्थित थे।

बरनवाल जाति को ओबीसी की सूची में शामिल करने को लेकर 20 को महाधरना

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

शहर के सारी स्थित रविंद्र बरनवाल (गोयल) के कृति राज निवास में भारत वर्षीय बरनवाल वैश्य महासभा की बैठक की गई। इस बैठक में महासभा के प्रदेश अध्यक्ष राजू बरनवाल व वरीय उपाध्यक्ष प्रिंस कुमार राजू उपस्थित थे। वहीं बैठक को संबोधित करते हुए राजू बरनवाल ने कहा कि बिहार में बरनवाल कि संख्या 30 लाख से ऊपर है। वैश्य समाज को छोटे-छोटे जाति में बांटकर कमजोर करने का काम किया गया है। सभी राजनीतिक पार्टियां अपने वोट बैंक के लिए वर्णवाल जाति का इस्तमाल करती है, परन्तु बरनवाल जाति को न तो बिहार में न ही भारत में ओबीसी का दर्जा दिया जाता है। यहां तक कि जब ईबीसी बनाने जाते हैं तो एबीसी भी बरनवाल जातियों का नहीं बनता क्योंकि बिहार में ओबीसी एनेक्चर 2 में बनिया जाति के साथ हमलोगो को मिला दिया गया है। जबकि बिहार में छोटी-छोटी जातिया जिनकी संख्या नग्न है, उन जातियों को नाम के साथ ओबीसी में आरक्षण दिया गया है। यह हमलोगों के बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड हो रहा है। इसी सब को देखते हुए बरनवाल जाति को बिहार तथा केन्द्र में ओबीसी सूची में शामिल करने के लिए आगामी 20 अक्टूबर को एकदिवसीय पटना के गर्दनीबाग में महाधरना का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें भारी संख्या में पहुंच कर अपनी आवाज बुलंद करनी है। वही अन्य वक्ताओं ने भी संघ के मजबूती पर जोर देते हुए दबे कुचले लोगों कि मदद कि बात करते हुए सभी को मिलजुल कर रहने और समय समय पर रणनीति बना कर जाति को एक पहचान दिलाने कि बात कही। मौके पर बरनवाल सेवा समिति के अध्यक्ष नंदकिशोर बरनवाल, सचिव रविंद्र कुमार बरनवाल, उपाध्यक्ष प्रमोद प्रसाद, उप सचिव मुकेश कुमार बरनवाल सहित सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित थे।

मशरूम उत्पादन प्रशिक्षणार्थियों के बीच प्रमाणपत्र वितरित

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर ।डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण के समापन समारोह में आज विभिन्न राज्यों से आए 50प्रशिक्षणार्थियों के बीच प्रमाणपत्र वितरण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. संतोष ठाकुर, सह निदेशक अनुसंधान ने विभिन्न राज्यों के पचास से अधिक प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र दिया। आयोजक डॉ. दयाराम ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए आयोजित किया गया था। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण से किसानों को मशरूम उत्पादन की तकनीक सिखाने में मदद मिलेगी और वे अपने क्षेत्र में इसका उत्पादन कर सकेंगे।मुख्य अतिथि डॉ. संतोष ठाकुर ने कहा कि मशरूम उत्पादन एक लाभकारी व्यवसाय है और यह किसानों की आय में वृद्धि कर सकता है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से किसानों को मशरूम उत्पादन की तकनीक सिखाने में मदद मिलेगी और वे अपने क्षेत्र में इसका उत्पादन कर सकेंगे।इस अवसर पर विभिन्न राज्यों के पचास से अधिक प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र दिया गया। प्रशिक्षणार्थियों ने कहा कि इस प्रशिक्षण से उन्हें मशरूम उत्पादन की तकनीक सिखाने में मदद मिलेगी और वे अपने क्षेत्र में इसका उत्पादन कर सकेंगे।

नदियों की पंचायत 11 सितम्बर को मुक्ति धाम सिकंदरपुर में

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। सिकन्दरपुर बूढी गण्डक के तट पर स्थित मुक्ति धाम में 11सितम्बर को आयोजित नदियोंकी पंचायत को लेकर आज प्रेस वार्ता की गई । प्रेस वार्ता में मुजफ्फरपुर में गंगा मुक्ति आंदोलन के प्रणेता एवं पर्यवारणविद,सामाजिक चिंतक अनिल प्रकाश ने बताया कि 11 सितम्बर को होने वाली नदियों की पंचायत में नदियों की दुर्दशा रोकने पर विचार विमर्श किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बागमती, गंडक, बूढ़ी गंडक,लखनदेई, अधवारा समूह की नदियों, करेह, नून आदि नदियां अपनी जालनुमा उपस्थिति से जन जीवन को सदियों से सुखमय बनाती रही हैं लेकिन विकास के नाम पर बन रहे तटबन्धों,बराजों, फैक्ट्रियों, मिलों और थर्मलपावर स्टेशनों से बह रहे जहरीले, काले, पीले जहरीले कचरे के कारण हमारी जीवनदायिनी नदियों का दम घुट रहा है। नदियों पर अपनी जीविका के लिए आश्रित नाविक, मल्लाह, किसान, सब्जी उगानेवाले,भैंस पाल कर, बैल पालकर सुख से जीने वाले करोड़ों स्त्री- पुरुषों की आजीविका और सांस्कृतिक जीवन बड़े गम्भीर संकट में है। अब तो गंगा एवं उससे जुडी तमाम नदियों को बड़ी बड़ी देशी- विदेशी कम्पनियों के हाथ मे सौंपने की शुरूआत हो चुकी है। सोंस को बचाने के नाम पर मल्लाहों को नदियों से खदेड़ने की चाल चली जा रही है। नदियों के किनारे के सौंदर्यीकरण के बहाने किसानों की बेशकीमती जमीनों पर भी लुटेरी कम्पनियों की बुरी नजर है। इन्ही सवालों को लेकर यह नदियों की पंचायत 11 सितम्बर को मुक्तिधाम, सिकन्दरपुर (बूढी गण्डक) नदी के तट पर, मुजफ्फरपुर में आयोजित की गई हैं। इन सवालों पर वर्षों से लड़ रहे संगठनों के प्रतिनिधि आमन्त्रित हैं।यह नदी पंचायत नदी मुक्ति आभियान की शुरूआत करेगी। प्रेस वार्ता में मुख्य रूप से नरेश सहनी (कार्यक्रम संयोजक) राजेंद्र पटेल, शाहिद कमाल, विजय कुमार जयसवाल,सेवादार अविनाश कुमार, समीरा खातून, हसमत अली उर्फ काले खां,संगीता सुभाषिनी,जयचंद्र कुमार,सुनील सरला(मीडिया सलाहकार) मौजूद थे।

सात दिवसीय गणेश पूजनोत्सव पर लगाया गया भव्य मेला

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी। बरदेपुर में श्री श्री 1008 श्री गणेश पूजा समिति द्वारा वर्ष 1996 से लगातार श्री गणेश पूजा का आयोजन किया जा रहा है। विगत वर्षो के तरह इस वर्ष भी गणेश चतुर्थी के अवसर पर पूरे वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सात दिवसीय श्री गणेश की पूजा की शुरूआत किया गया। बताते चले कि गणेश पूजा से उठ रहे धार्मिक चर्चाओ से कलुआही प्रखंड क्षेत्र भक्तिमय माहौल हो गया जहां दुसोएक कुमारी कन्याओ द्वारा कलश शोभा यात्रा के साथ पूजा शुभारंभ किया गया सुबह-शाम भगवान गणेश की आरती की जा रही है, तो वही पूजा स्थल पर भव्य पंडाल बनाकर उसमे गणेश जी रिद्धि सिद्धि शाहित अन्य देवी देवताओ के मूर्ति की पूजा की जा रही है। आयोजन समिति ने बताया कि यहां लगातार लगभग 28 वर्षो से गणेश चतुर्थी के अवसर पर श्री गणेश जी का मूर्ति स्थापित कर पूजा अर्चना करते है। इस बार सात सितंबर से लेकर 13 सितम्बर तक पूजा का आयोजन किया जा रहा है यहां की मान्यता है की जो भी श्रद्धालु सच्चे मन से गणपति बप्पा के दरबार में आते है, उनका मनोकामनाएं पूर्ण होती है तथा इस दरबार में विभिन्न जिले के साथ- साथ पड़ोसी देश नेपाल से भी काफी संख्या में श्रद्धालुओं का आना होता है।

सीओ को पागडोपता पुष्पमाला से किया गया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी । खजौली अंचल कार्यालय के सभागार में सोमवार को वर्तमान सीओ डेजी सिंह के अध्यक्षता में प्रभारी सीओ मुकेश कुमार सिंह का सम्मान समारोह का आयोजन किया गया.इस सम्मान समारोह के दौरान वर्तमान सीओ डेजी सिंह एवं सभी राजस्व कर्मचारी द्वारा प्रभारी सीओ मुकेश कुमार सिंह को पाग डोपता पुष्पमाला एवं समान देकर सम्मानित किया गया.इस दौरान सीओ डेजी सिह ने कहा की मेरे अवकाश पर चले जाने पर 6 महीने के लिए कलुआही सीओ मुकेश कुमार सिंह प्रभार के रूप मे अंचल कार्यालय खजौली में योगदान कर अंचल क्षेत्र में बेहतर रूप से कार्य किए.उन्होने कहा कि प्रभारी सीओ द्वारा अंचल कर्मियों के साथ लेकर अंचल कार्यालय क्षेत्र में भूमि लगान की राजस्व की वसूली बेहतर रहा है. वही अंचल निरीक्षक आशीष देव कुमार ने बताया कि प्रभारी सीओ हम सभी राजस्व कर्मचारी को मार्ग दर्शन देकर कार्य की प्रगति लाया गया.उन्होने प्रभारी सीओ मुकेश कुमार सिंह को कहा कि आप की श्रेय हमेशा यादगार रहेगी.वही सभी राजस्व कर्मचारी ने प्रभारी सीओ को भेट प्रदान कर सम्मान सहित अंचल खजौली से विदाई दी.इस सम्मान समारोह मौके पर प्रभारी सीआई आशीष देव कुमार,प्रधान सहायक प्रभात चौधरी सहायक दीपक कुमार उमेश माझी राजस्व कर्मचारी प्रदीप कुमार,अरविंद कुमार,राजेश चौधरी,प्रखंड शिक्षक नरेंद्र झा,फकीर मंडल,राहुल झा,जय प्रकाश यादव सहित सभी अंचल कर्मी मौजूद थे.

महिला विकास मंच के चार वर्ष हुए पूरे

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी । महिला विकास मंच की मधुबनी इकाई के गठन के चार वर्ष पूरे हो गए है। इन चार वर्षो मे महिला विकास मंच की मधुबनी जिलाध्यक्षा दीपशिखा सिंह के नेतृत्व में संस्था ने सैकड़ो महिलाओ को इंसाफ दिलाया,उन्हे आत्मनिर्भर बनाया और उन्हें जीने की एक नई उम्मीद प्रदान की। बता दे कि महिला विकास मंच मुख्यतः महिलाओ पर हो रहे अत्याचार एवं घरेलू हिसा के विरुद्ध कार्य करती है और साथ ही महिलाओ को आत्मनिर्भर सशक्त, शिक्षित एवं समृद्ध बनाने के लिए समय-समय पर अभियान भी चलाती है। इसी कड़ी में मधुबनी इकाई ने सफलता पूर्वक अपने चार वर्ष पूरे कर लिए है और इस दौरान उन्होंने ग्रामीण एवं सुदूर क्षेत्र की हजारों महिलाओं तक अपनी पहुंच बनाई उनकी समस्याओ को सुना समझा और उसके समाधान के दिशा मे प्रयास किया। चार वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर जिलाध्यक्षा दीपशिखा सिंह ने अपने सभी सदस्यो एवं सहयोगियो के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि आप सभी लोगो ने हमारा साथ और सहयोग बनाए रखा। जिस कारण सभी के सहयोग से आज चार वर्ष का कार्यकाल पूर्ण हुआ साथ ही उन्होने सभी सहयोगियो से निवेदन करते हुए कहा कि आपसे अपेक्षा है कि ऐसे ही आने वाले समय मे अपना सहयोग बनाए रखियेगा। आपके सहयोग से ही हम हमेशा महिलाओ के अधिकार एवं सशक्तिकरण के लिए आवाज उठाते रहेंगे। आगे उन्होने कहा कि बीते चार वर्षो में जिले के विभिन्न गाँव से आये कई मामले जो महिला अपराध से जुड़ा हो या महिला-पुरुष प्रताड़ना से जुड़ा हो उसे संज्ञान में लेकर संस्था द्वारा उचित न्याय दिलाने का कार्य किया गया है।महिला विकास मंच के कार्यो को उल्लेखित करते हुए मीडिया प्रभारी मनीष सिंह यादव ने बताया कि महिला विकास मंच अलग अलग समय पर कई सामाजिक कार्यो को भी करती है। भारत-नेपाल सीमा पर तैनात एसएसबी के जवानो के साथ दीवाली रक्षाबंधन का त्योहार मनाना पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण करना गरीब-असहाय लोगो के बीच भोजन वितरण करना चिकित्सकों एवं समाज में सकारात्मक कार्य करने वालो को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन करना आदि मुख्य गतिविधियो मे शामिल है। चार वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर महिला विकास मंच मधुबनी के सभी सदस्यो ने रोटी बैक जयनगर के सहयोग से जयनगर रेलवे स्टेशन परिसर में केक काटकर गरीबो के बीच भोजन वितरण किया। इस अवसर पर रोटी बैक जयनगर के सदस्यो ने महिला विकास मंच के सभी सदस्यो को मिथिला की परंपरा के रोटी बैंक का चीन देकर स्वागत किया।महिला विकास मंच मधुबनी टीम के गठन के चार वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर जिलाध्यक्षा दीपशिखा सिंह एवं सभी सदस्यो को जिला प्रशासन पुलिस प्रशासन के आला अधिकारियो एवं सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र के कई प्रतिष्ठित हस्तियो ने बधाई एवंशुभकामनाएं प्रेषित की है।

वक्फ संपत्तियों की हिफाजत की जिम्मेवारी नई पीढ़ी पर : मोहम्मद इश्तेयाक

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।बिहार स्टेट सुन्नी वक्फ बोर्ड, पटना द्वारा नव स्वीकृत मुजफ्फरपुर जिला के स्थानीय पंखाटोली कब्रिस्तान के प्रबंध समिति की पहली बैठक कब्रिस्तान के अहाते में हुई जिसमे समिति के सभी सदस्य सहित शहर के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में समाज और मिल्लत के सेवा में सक्रिय रहने वाले युवाओं ने भाग लिया । बैठक की अध्यक्षता पंखाटोली कब्रिस्तान कमिटी के उपाध्यक्ष और ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिस ए मुशावरत के जिला महासचिव मोहम्मद इश्तेयाक ने किया । मोहम्मद इश्तेयाक ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि पूर्वजों द्वारा संरक्षित मौजूदा वक्फ संपत्तियों की हिफाजत , संवर्धन और विकास की जिम्मेदारी अब नई पीढ़ी पर है । उन्होंने कहा कि हम उन पुवजों के नस्लों में से जिन्होंने अपनी निजी संपत्तियों को पूरे भारत में जन कल्याण हेतु ईश्वर को समर्पित कर वक्फ किया है , जिसकी हिफाजत की जिम्मेदारी हम युवाओं पर है। मोहम्मद इश्तेयाक ने कहा कि बिहार स्टेट सुन्नी वक्फ बोर्ड के दिशा निर्देश का पालन प्राथमिकता से किया जाए जिसके तहत वक्फ संपत्तियों के दस्तावेजी प्रक्रिया एवं प्रखंड अंचल के जमाबंदी पंजी में वक्फ स्टेट नंबर को दर्ज कराया जाना है । कब्रिस्तान प्रबंध समिति के अध्यक्ष मोहम्मद इकबाल ने सभी नव निर्वाचित सदस्यों का परिचय कराया और सामाजिक कार्यकर्ता सरफराज खान ने सभी उपस्थित लोगों से कब्रिस्तान के मौजूदा स्थिति पर चर्चा कर ,इसके रख रखाव और संवर्धन पर अपना मशविरा देने का आग्रह किया। सचिव मोहम्मद जाहिद ने पिछले सात वर्षों के पूर्व के प्रबंध समिति के कारगुजारी का ब्यौरा पेश किया और छूटे हुए कामों को आज के बैठक में तय एजेंडा के अतिरिक्त नए विचारों पर भी उपस्थित लोगों से राय मांगा । शहर के विभिन्न हिस्सों यथा स्थानीय पंखाटोली ,सैदपुरा नीम चौक , कल्याणी ,दीवान रोड, छोटी कल्याणी, बहलखाना रोड,अमर सिनेमा रोड, के एन रोड, इस्लामपुर, छाता बाजार, छोटी सरैयागंज , अब्दुल कय्यूम अंसारी मार्ग (बैंक रोड) , तिलक मैदान रोड , छाता चौक, सराय सय्यद अली , इमाम गंज ,नई बाजार से आए उपस्थित युवाओं में अपने विचार रखे । इमाम गंज जुमा मस्जिद के सक्रिय कार्यकर्ता शाहनवाज अहमद ने प्रबंध समिति का बैंक एकाउंट खोलने की बात कहीं जिस सर्वसहमति से स्वीकृत किया गया, अंजुम रब्बानी ने कब्रिस्तान के विकास के लिए धन संचय कब्रिस्तान के संपत्ति से ही कैसे किया जाए इस बिंदु पर विस्तार से अपनी बातें रखी । सर्व सहमति से तय हुआ कि प्रबंध समिति को आत्मनिर्भर बनाने हेतु कब्रिस्तान में वावसायिक वृक्ष लगाया जाए, सहित एक दर्जन विचारों को पारित किया गया जिसमे कब्रिस्तान के धसें हुए हिस्से में मिट्टी भराई ,जिला औकाफ कोमिटी एवं जिला अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के निदेर्शानुसार कब्रिस्तान के मुख्य द्वार पर वक्फ स्टेट नंबर सहित वक्फ संपत्ति एवं प्रबंध समिति के विवरण का बोर्ड लगाया जाना , चारो तरफ बागवानी, एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक बायपास अप्रोच पथ का निर्माण, कब्रिस्तान के चबूतरे के बचे हुए हिस्से पर शेड का निर्माण , कब्रिस्तान के लैंड रिकॉर्ड के शेष सभी दस्तावेजी प्रक्रिया पूरा किया जाना, एक ऑफिस इंचार्ज की नियुक्ति किया करना , कब्रिस्तान के चारो कोना एवं बीच में वेपर लाइट लगाया लगाया जाना, मय्यत्त के कब्र खुदाई का शुल्क 2000.रुपया तय किया गया और गरीब और असहाय लोगों के लिए रियायत का प्रावधान तय किया गया एवं कब्रिस्तान के एक और चार कटठे के दूसरे भाग के विकास का प्रस्ताव भी स्वीकृत किया गया ।बैठक में उपस्थित युवा साथियों में प्रबंध समिति के सदस्य मोहम्मद सहीम, नजरे आलम, शादाब खान, मोहम्मद आदिल,नदीम मुस्तफा, मोहम्मद नकी, आरिफ मुगल, मोहमद गुलाब,ताहीर हुसैन, मोहम्मद अकबर, शाह फैसल आदि सहित दर्जनों युवा सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद थे ।

बज्जिका भाषा वर्तनी-विमर्श सह पुस्तक लोकार्पण समारोह आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। स्थानीय थियोसॉफिकल लॉज के सभागार में रविवार कै पूनम सिन्हा श्रेयसी की काव्य पुस्तक बतकही के लोकार्पण समारोह के साथ-साथ बज्जिका भाषा एवं साहित्य में एकरुपता हेतु भाषा विमर्श का आयोजन किया गया। बज्जिका विकास मंच, मुजफ्फरपुर के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता मंच के अध्यक्ष साहित्यकार जितरंजन सिन्हा कनक ने किया। डॉक्टर शारदाचरण एवं शहर के साहित्य जगत के प्रतिष्ठित साहित्यकारौ के साथ-साथ मंच पर उपस्थित अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। बज्जिका माधुरी के संपादक स्मृति शेष डॉ सुरेंद्र मोहन प्रसाद की पुत्री व प्रतिष्ठित लेखिका डॉक्टर शैलेजा रोला की सरस्वती वंदना के बाद लोकार्पित पुस्तक बतकहीं की लेखिका श्रेयसी ने मंचस्थ अतिथि को अंगवस्त्र और माला देकर सम्मानित किया ।उपस्थित साहित्यकारो बुद्धिजीवियो के प्रति आभार सहस्वागत करते हुए डॉक्टर शारदाचरण ने कहा कि यह एक एतिहासिक और स्वर्णिम पल है, जिसमें बज्जिका साहित्य की सभी विधाओ में अनवत लिखने वाली साहित्य साधिका डा पूनम सिन्हा श्रेयसी की पुस्तक बतकही के लोकार्पण समारोह के साथ ही भाषा विमर्श पर भी सारगर्भित चर्चा हो रही है। मुख्य वक्ता ज्वालासांध्यपुष्प ने पुस्तक पर प्रकाश डालते हुए कहा कि - बज्जिका भाषा और साहित्य का विकास गद्य लेखन में तेजी लाकर ही संभव है। ह्ल बतकही ह्न को उन्होंने बज्जिका की कालजयी कृति बताते हुए इसे मील का पत्थर भी कहा। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में बज्जिका भाषा की एकरुपता के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए बज्जिका पतोखा के संपादक अमिताभ कुमार सिन्हा ने कहा कि- बज्जिका साहित्य में व्याकरण, छंद शास्त्र, महाकाव्य, आलोचनात्मक ग्रंथ, कथा काव्य, डायरी, संस्मरण आदि गद्य विधा के साथ-साथ पद्य की किताबें भी भरपुर मात्रा में उपलब्ध है और तेजी से छप भी रही है। ऐसे में भाषा में अनुशासन आवश्यक है। भाषा विमर्श पर विचार व्यक्त करने में डा शारदाचरण, डॉ रविंद्र बिनोद कुमार सिन्हा, उदय नारायण सिंह, प्रेम कुमार वर्मा, मणिभुषण प्रसाद सिंह, डॉ हरि किशोर सिंह,शंभु शरण मिश्र, डॉ सतीश चन्द्र भगत, मधु मंगल ठाकुर सुरेश वर्मा ज्वालासांध्यपुष्प आदि उपस्थित होकर विचार व्यक्त किया। मंच के महामंत्री को इस विषय पर एक कमिटी बनाने के लिए अधिकृत किया गया। धन्यवाद ज्ञापन उदय नारायण सिंह ने किया।

अंतराष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर कई प्रतियोगिता का किया आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। महिला एवं बाल विकास निगम,बिहार पटना एवं जिला प्रोग्राम पदाधिकारी आई.सी.डी. एस दरभंगा के दिशा निर्देश में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना अन्तर्गत अंतराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर दो दिवसीय कार्यक्रम दरभंगा जिला अंतर्गत प्रखंड के सभी कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय के छात्राओं के बीच पेंटिग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिला से दरभंगा ग्रामीण अंतर्गत रानीपुर के कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय ने भाग लिया। निर्णायक मंडली के द्वारा अच्छे पेंटिंग करने वाले समूहों को क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान दिया गया। रानीपुर विद्यालय में साधना कुमारी को प्रथम तथा मौसम कुमारी को द्वितीय पुरस्कार दिया गया। बाल विकास परियोजना पदाधिकारी दरभंगा सदर ,प्रधानाध्यापक एवं उपस्थित सभी पदाधिकारी द्वारा बच्चों को कॉपी,कलम,पेंसिल उपहार के रूप में दिया गया। प्रखंड स्तर पर बहादुरपुर के मुस्कान कुमारी,दुर्गा कुमारी ,बहेड़ी से राधा कुमारी,नेहा कुमारी,बेनीपुर से सालिया प्रवीन,रानी कुमारी,मनीगाछी बलौर से रजनी कुमारी,वैष्णवी कुमारी,मनीगाछी राघोपुर पश्चिम से निशा कुमारी,सोनाक्षी कुमारी,तारडीह से स्नेहा कुमारी,खुशबू कुमारी,घनश्यामपुर से मनसु कुमारी,ललिता कुमारी,बिरौल से मुस्कान खातून,सोनाक्षी कुमारी ,केवटी से राधा कुमारी,मेघा कुमारी,गौड़ाबौराम से रुना कुमारी,उषा कुमारी,हनुमाननगर से खुशबू कुमारी,उर्मिला कुमारी,सिंहवाडा से शिवानी कुमारी,बेबी कुमारी जाले से राजलक्ष्मी कुमारी,रश्मि कुमारी,किरतपुर से चांदनी कुमारी,राधा कुमारी ,कुशेश्वरस्थान से प्रियंका कुमारी,देव नंदनी कुमारी को क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।सभी छात्राओं को जिला स्तर पर प्रस्तावित कार्यक्रम में जिला पदाधिकारी,दरभंगा द्वारा सम्मानित किया जाना है। सभी छात्राओं के बीच बाल विवाह उन्मूलन से संबंधित पम्पलेट का भी वितरण किया गया।मौके पर जिला मिशन समन्वयक ऋषि कुमार, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी दरभंगा सदर निभा कुमारी ,जिला परियोजना प्रबंधक जयवंती सिन्हा ,जिला मिशन समन्वयक ऋषि कुमार,केंद्र प्रशासक अजमतुन निशा,कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय,रानीपुर के प्रधानाध्यापक गोविन्द प्रसाद यादव ,वार्डेन पल्लवी कुमारी ,एवं शिक्षक सम्मी ,श्रीनी तरन्नुम ,दिलीप कुमार ,ममता कुमारी सहित दर्जनों छात्रा मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

जमीन को लेकर दो पक्षों के बीच हुई मारपीट में तीन लोग हुए घायल

जमुई [झाझा] एक डिसमिल जमीन को लेकर डुमरमोह गांव में दो पक्षों के बीच मारपीट हो गई जिसमें दोनो पक्षों की ओर से कुल तीन लोग घायल हो गया। एक पक्ष से घायल की पहचान शिबू मरांडी और उसकी पत्नी ननकी मुर्मू तथा दूसरे पक्ष से घायल की पहचान देवकी देवी के रूप में हुई। मारपीट की सूचना डायल 112 की पुलिस को दी गई जिसके बाद मौके पर पुलिस टीम पहुंचकर घायलों को इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाया जहां सभी घायलों का इलाज किया गया। एक पक्ष से घायल दंपति की स्थिति नाजुक रहने पर डॉक्टर ने उसका प्राथमिक उपचार करने के बाद बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल जमुई रेफर कर दिया। घायल शिबू मरांडी ने बताया कि मै और मेरी पत्नी घर पर थे कि तभी लालू साव और उसके घर के अन्य तीन सदस्य जमीन को लेकर विवाद करने लगा जिसका विरोध किया तो वे लोग लाठी डंडा आदि से मारपीट करते हुए हमदोनो को घायल कर दिया। जबकि दूसरे पक्ष से घायल महिला के पुत्र लालू साव ने बताया कि पहले पक्ष के लोगों ने झगड़ा शुरू करते हुए मेरी मां के सिर पर घास काटने वाला हसुआ से वार कर घायल कर दिया।

28 सितंबर को युवाओं, विद्यार्थियों के बीच होगा यूथ एक्सपो कार्यक्रम

जमुई [झाझा] जीवन को शिक्षा से जोड़कर सफल जीवन बनाने को लेकर आगामी 28 सिंतबर को आदर्श युवा प्रकोष्ठ गायत्री परिवार के द्वारा विद्यार्थियों के बीच यूथ एक्सपो का कार्यक्रम झाझा नगर क्षेत्र स्थित न्यू टाउन हॉल में किया जाएगा। जानकारी देते आदर्श युवा प्रकोष्ठ प्रभारी आशीष कुमार ने बताया कि विद्यार्थियों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने को लेकर मुख्य वक्ता के रूप में नेशनल यूथ मोटिवेशनल, को ऑडिनेटर पीवाईपी बिहार के मनीष कुमार कार्यक्रम में शामिल होगे जो विद्यार्थियों, युवाओं को तनावमुक्त होकर सिफ शिक्षा के प्रति कैसे अपना ध्यान लगाना है उसके बारे में जानकारी देगे। इसके अलावे उनके द्वारा युवाओं, विद्यार्थियों को कैसे अपने आप को बेहतर बनाने, समय अनुपालन सहित अन्य कई बिंदुओं पर विशेष जानकारी देगे।

साक्षरता स्वर्ग की सीढ़ी तो निरक्षरता नर्क का द्वार : प्रो.गौरी शंकर

● साक्षरता ज्ञान और समझ की कुंजी है

प्रात : किरण संवाददाता

डॉ.गौरी शंकर पासवान

प्रो.डी.के. गोयल

प्रो.कैलाश पंडित

जमुई:-विश्व साक्षरता दिवस के अवसर पर नगर परिषद जमुई स्थित आनंद विहार कॉलोनी,सिरचन्द नवादा में साक्षरता का महत्व विषय पर एक परिचर्चा आयोजित की गई। परिचर्चा कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केकेएम कॉलेज के पीजी अर्थशास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ. गौरी शंकर पासवान ने अपने अध्यक्षीय प्रबोधन में कहा कि साक्षरता सफलता और स्वर्ग की सीढ़ी है, तो निरक्षरता नर्क का द्वार। साक्षरता इसलिए स्वर्ग है क्योंकि साक्षरता रूपी स्वर्ग का द्वार जब खुलता है तो जीवन की असीम संभावनाओं का अनुभव किया जा सकता है। जबकि निरक्षरता नर्क का द्वारा इसलिए है क्योंकि यह व्यक्ति के जीवन को कठिन बना देता है और उसे सुख- समृद्धि तथा विकास के अवसरों से कोसों दूर रखता है। साक्षरता वह खिड़की है, जिससे झांककर मनुष्य देश दुनिया को देख सकता है। उन्होंने कहा कि साक्षरता ज्ञान और समझ की कुंजी होती है। व्यक्ति जब साक्षर होता है, तो वह ज्ञान, शिक्षा, जानकारी की दुनिया में प्रवेश करता है, जो उसकी व्यक्तिगत,सामाजिक और मानसिक विकास के लिए आवश्यक है। साक्षरता व्यक्ति के हाथ में वह हथियार है,जिससे जीवन रूपी नैया को अपनी इच्छा के अनुरूप मोड़ सकता है।

उन्होंने कहा कि साक्षरता विकास की कुंजी और सशक्त माध्यम है। क्योंकि यह व्यक्ति और समाज दोनों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आजादी के समय भारत की साक्षरता दर करीब 12% थी, जो 2011 की जनगणना के अनुसार साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत हो गया। इसमें पुरुष साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 65.46% थी। हालांकि भारत सरकार ने अभी तक 2021 की जनगणना नहीं करा पाई है बहरहाल 2021 में भारत की साक्षरता दर 77.7% तक पहुंच गई है। सबसे ज्यादा साक्षरता दर केरल में 96% है, तो सबसे कम बिहार में 61.8 प्रतिशत है। शिक्षा की स्थिति में राष्ट्रीय स्तर पर सुधार हुआ है। किंतु अभी भी शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। हमारे देश का श्लोगन- साक्षरता जन-जन के दुवार, निरक्षरता नर्क का द्वारह्ल होना चाहिए। राजनीतिक विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ देवेंद्र कुमार गोयल ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस प्रतिवर्ष 8 सितंबर को मनाया जाता है. यह दिवस विश्व में साक्षरता के लिए व्यापक अभियान का संदेशवाहक है, जो जन जन में पढ़ाई और ज्ञान के प्रति लगाव, महत्व और रुचि को जागृत करता है। उन्होंने कहा कि साक्षरता मनुष्य का सशक्तिकरण है। इसका सही मतलब है वह ज्ञान जिससे हम अपने जीवन में आए शुभ अवसरों की पहचान कर सकें और उन्हें हासिल करके अपनी रुचि के अनुसार जीवन जी सकें तथा जीवन के हर आयाम को अपने हित में ढाल सकें। हिंदी के विभागाध्यक्ष प्रो. कैलाश पंडित ने कहा कि साक्षरता सिर्फ पढ़ने और लिखने से ही नहीं आती है, बल्कि अनुभवी लोगों से बातें कर, सत्संग द्वारा, अच्छी दोस्ती तथा अच्छी पुस्तक पढ़ने से भी आती है। हमारा देश वैश्विक साक्षरता दर (86.5 प्रतिशत) की तुलना में अभी पीछे है। वैश्विक पुरुष साक्षरता दर 90% तो महिला साक्षरता दर 83 प्रतिशत है। भारत में साक्षरता दर करीब शत प्रतिशत करने की जरूरत है।

कार्यालय सहायक रवीश कुमार सिंह ने कहा कि भारत सरकार ने लोगों को साक्षर बनाने का संकल्प लिया है। इसकी पूर्ति के लिए राष्ट्रीय साक्षरता मिशन देश में चलाया जा रहा है। इसके माध्यम से भारत में साक्षरता दर बढ़ रही है। साक्षरता एक दीप की तरह है, जो मनुष्य की जीवन के अंधेरे को मिटाकर ज्योति बिखेरने का काम करता है। मौके पर कई बुद्धिजीवी और छात्र-छात्राओं ने शत प्रतिशत साक्षरता की वकालत की है। बिहार सरकार को शिक्षा पर ज्यादा खर्च करने की मांग की है।

घर में चोरी हो जाने को लेकर थानाध्यक्ष को दिया आवेदन

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। थाना क्षेत्र के कुन्धुर पंचायत के पहाड़पुर गांव निवासी बृजनंदन मिश्रा के पुत्र आर्यन कुमार ने गिद्धौर थाना में आवेदन दिया था। आवेदन में उन्होंने बताया कि मैं सभी परिवार के साथ देवघर में रहते हैं रविवार को समय सुबह 6 बजे करीब मेरे चाचा के द्वारा फोन किया और बताया कि आपके घर में चोरी हो गया है। चोरी के सूचना मिलने पर समय 11 बजे घर आए तो देखें कि मेरे घर का दरवाजा टूटा हुआ है। और सभी सामान जमीन पर बिखरा पड़ा है। वन प्लस कंपनी का एलईडी टीवी को चोरी कर लिया गया मेरे घर में चोरी हुए सामान का पता लगाने एवं पुलिस को सूचना देने के लिए समय करीब 3 बजे संध्या में गिद्धौर थाना जा रहा था तो देखा कि चौरा चौक के पास संजय इलेक्ट्रॉनिक दुकान में दो लड़का टीवी लेकर खड़ा है। संजय इलेक्ट्रॉनिक के दुकान पर गए टीवी को देखा तो मेरा ही टीवी था टीवी लिए दोनों लड़का से नाम पता पूछे तो अपना नाम भीम मांझी पिता सुरेश मांझी,मिथुन मांझी उर्फ कारू मांझी पिता शुक्रर मांझी अपना नाम बताया और घर पहाड़पुर बताया टीवी के संबंध में दोनों लड़का से पूछे तो बताया कि हम दोनों एवं गौरव मांझी पिता महेंद्र मांझी घर पहाड़पुर थाना गिद्धौर जिला जमुई तीनों मिलकर पहाड़पुर में रात में चोरी किया था तब पश्चात पुलिस को सूचना देकर चौरा चौक संजय इलेक्ट्रॉनिक दुकान के पास बुलाए और उक्त दोनों लड़का एवं टीवी के साथ गिद्धौर पुलिस को सुपुर्द कर दिया।

खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

जमुई [झाझा] 7 सितंबर से मुंगेर विश्वविद्यालय अंतर्गत अंतर महाविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन मुंगेर मुख्यालय में आयोजित किया जा रहा है जिसमें कई तरह के खेलकूद की स्पर्धा में डीएसएम कॉलेज झाझा के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और कीड़ा सचिव प्रो. राकेश पासवान, कॉलेज प्राचार्य डॉ. अजफर शमशी की उपस्थिति में प्रतिभागियों ने अपना बेहतरीन प्रदर्शन किया। वही महिला बैडमिंटन प्रतियोगिता में मे कोच अमित कुमार पासवान की अगुवाई में बैडमिंटन एकल में कॉलेज की छात्रा खुशबु और सुखदा भारती जेआरएस महाविद्यालय जमालपुर के विरूद्ध उपविजेता रही तथा बैडमिंटन डबल्स में रूना कुमारी एवं स्वाति कुमारी ने जेआरएस महाविद्यालय जमालपुर को हराते हुए विजय प्राप्त किया।

डांस प्रतियोगिता में काव्या और हर्ष ने प्रथम स्थान किया हासिल

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] गणेश पूजा के उपलक्ष्य में शिव बाजार में श्रीकेशरवाणी वैश्य पंचायत के दो दिवसीय डांस प्रतियोगिता का समापन रविवार की देर शाम को किया गया। दूसरे दिन भी 15 प्रतिभागियों के बीच डांस का कार्यक्रम हुआ जिसमें प्रतिभागियों ने एक से बढ़कर अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत किया। दो दिवसीय डांस प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल में सुनील केशरी, जयनारायण केशरी ने किया। प्रतियोगिता का संचालन शिवम केशरी के द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। दो दिवसीय डांस प्रतियोगिता में शनिवार को हुए प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर काव्या टंडेसी, दूसरे स्थान पर गुंजन कुमारी और तीसरे स्थान पर विनायक कुमार तथा दूसरे दिन हुए प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर हर्ष वर्मा, दूसरे स्थान पर अनन्या कुमारी और तीसरे स्थान पर किटटी कुमारी रही। विजेता प्रतिभागी को अध्यक्ष कपिलदेव केशरी, उपाध्यक्ष पवन केशरी, मंत्री शंशाक केशरी, कोषाध्यक्ष पंकज टंडेसी के द्वारा पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इसे अलावे समाज में बेहतर कार्य करने वाले केशरवाणी समाज के कई लोगों को भी सम्मानित किया गया। मौके पर कुणाल केशरी, कुणाल टंडेसी, रामू केशरी, सुजीत केशरी, अमित केशरी सहित कई लोग मौजूद थे।

कैंप लगाकर एसबीआई ने पचास किसानों का बकाया ऋण किया माफ

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] एसबीआई बैंक चला गांव की ओर अभियान के तहत सोमवार को करहरा पंचायत के परसा गांव में किसानों के उपर बकाया ऋण माफ करने को लेकर आरबीआई के प्रावधान के तहत एसबीआई की ओर से कैंप लगाया गया। कैंप में वैसे किसान जो ऋण लिए हुए थे और वे बकाया राशि जमा करने में असमर्थ हो रहे थे वैसे ऋणकर्ता को बैंक की ओर से कैंप में ऋण माफ किया गया। कैंप का उदघाटन शाखा प्रबंधक जीपी सिंह के द्वारा फीता काटकर किया गया। शाखा प्रबंधक ने इस दौरान किसानों की समस्याओं को सुना। जिसमें किसानों ने अच्छी तरह से खेती न होने सहित अन्य समस्या सुनाई। शाखा प्रबंधक ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि किसान खेती पर ही निर्भर रहता है। ऐसे में किसानों की समस्याओं को बैंक अच्छी तरह से समझता है। जिसको लेकर कैंप लगाकर उनके ऋण को माफ किया जा रहा है। शाखा प्रबंधक ने बताया कि कैंप लगने से किसान लोक अदालत जाने से बचेगे। शाखा प्रबंधक ने किसानों को पूर्ण आश्वासन दिया कि किसान के हित के लिए जो भी कार्य बैंक की ओर से दिए जाने का प्रावधान आएगा उनका लाभ किसानों को दिया जाएगा।

वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ विराजमान हुए गणपति , श्रद्धालुओं ने की पूजा अर्चना

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/लक्ष्मीपुर : गणपति बप्पा मोरया अगले बरस में जल्दी आह्वदेश राज्य जिला सहित लक्ष्मीपुर प्रखंड वासियों का सब दुःख दर्द से दूर कर जा।गणेश महोत्सव भगवान गणेश की पूजा-अर्चना का पर्व है। जिसे पूरे भारत में बड़े हर्षोल्लास और धूमधाम के साथ मनाया जाता है। यह महोत्सव विशेष रूप से महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, और गोवा में लोकप्रिय है, उसके बाद बिहार में भी उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। वहीं जमुई जिले के लक्ष्मीपुर प्रखंड मुख्यालय में अवस्थित बजरंगवली मंदिर के प्रांगण में भी बड़े धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ कई वर्षो से मनाने की परम्परा है। वहीं शनिवार को लक्ष्मीपुर चौक गोड्डी रोड में युवाओं एवं गणेश पूजा समिति ने भव्य पंडाल का निर्माण कर प्रतिमा स्थापित किया। जिसमें विद्वान युवा पंडित शशि कांत पाण्डेय ने पूरे विधि-विधान से वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ गणेश प्रतिमा को स्थापित किया। साथ ही कई लोगों ने अपने घरों में ,दुकानों में भी गणेश जी का पूजा वैदिक विधान के साथ किया गया। रविवार को धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। वहीं युवा सम्राट, समाजसेवी संजीव साह ने फीता काट कर कार्यक्रम की आगज की। वहीं जागरण की शुरूआत आरती वंदना से आनन्द राज और पल्लवी झा ने की। भक्ति जागरण के द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। जिन्होंने गणेश पूजा समिति को हरेक कार्यक्रमों में भरपूर सहयोग दिया। गणेश पूजा समिति के पियूष राज, जयप्रकाश, संतोष, सुमन, दीपक,अनुप,छोटू, नीतीश,अभिराज,विक्कू, रविरंजन, सूरज ध्रुव एवं अन्य कार्यकताओं ने एक जूट होकर प्रतिमा को स्थापित किया,भक्ति जागरण, भण्डारा एवं मूर्ति विसर्जन का सफल क्रियान्वयन में महती भूमिका निभाई।

तकनीक- ग्रामीण विकास विभाग ने जारी किया निर्देश, कार्य के शुरू व अंत का लिया जाएगा फोटो

ड्रोन से मनरेगा योजना के कार्यों की होगी निगरानी

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। मनरेगा योजना को पारदर्शी बनाने के लिए ग्रामीण विकास विभाग की ओर से नित्य नए नियमों को लागू किया जा रहा है। पहले एमएसएमएस पोर्टल को लांच किया गया। जिसमें मजदूरों का कार्य शुरू होने और अंत का फोटो लेकर अपलोड किया जाएगा। उसके बाद बायोमेट्रिक,आधार बेस्ट पेमेंट सिस्टम इत्यादि नवीन तकनीक को किया गया। अब ग्रामीण विकास विभाग ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के तहत कार्यों की निगरानी के लिए ड्रोन के उपयोग के लिए नई नीति तैयार की है। ड्रोन की मदद से जारी कामों की निगरानी,पूरे हो चुके काम की जांच,काम का आकलन और शिकायत मिलने पर मामले की जांच की जाएगी। इसकी खरीदारी के लिए कोई अतिरिक्त फंड उपलब्ध नहीं कराया जाएगा। बल्कि मनरेगा के लिए दी जाने वाली राशि में ही आकस्मिक खर्च के लिए होने वाले आवंटन से ही ड्रोन के लिए राशि तय की जाएगी। मनरेगा में लगातार भ्रष्टाचार की शिकायतें मिल रही है। इनमें मजदूरों के स्थान पर मशीनों का इस्तेमाल किया जाना और बिना काम किया कुछ लोगों को वेतन मिलना शामिल है। ऐसे मामलों में ड्रोन सबूत जुटाने में मददगार होंगे। मुख्य परिचलन पदाधिकारी संजय कुमार सिंह के द्धारा डीएम को इससे संबंधित पत्र भी भेज दिया गया है। वही ड्रोन का संचालन डीआरडीए कर सकेंगे। इसके लिए मनरेगा डीपीओ व पीओं को जिम्मेदारी दी जाएगी। साथ ही शिकायत का 30 दिनों के अंदर निदान भी करना है। मनरेगा में अधिकांश यही होती है गड़बड़ी मनरेगा योजनाओं में नहरे का जीर्णोद्धार व नए निर्माण कार्य के समय ज्यादा मजदूर दिखाकर मजदूरी निकाल ली जाती है। जबकि मजदूर को मालूम नहीं कि उनसे संबंधित योजना में काम किया। उसके जगह जेसीबी से काम को निपटा दिया जाता है। वही तालाब, पोखर,नहर की मिट्टी कटाई का शिकायत भी विभाग को मिलता है। बिना काम कराये योजना को पूरा दिखाया गया है। जांच का आदेश मिलने में बहुत देर होने से लीपापोती हो जाती है। अब ड्रोन के इनपुट से ऐसी शिकायत पर तुरंत कार्रवाई का शिकायत दूर किया जा सकता है। जमुई में कई मनरेगा से जुड़ी भ्रष्टाचार की शिकायते फाइलों में ही दम तोड़ रही है। भ्रष्टाचार को काम करने के लिए ग्रामीण विकास विभाग के द्वारा लगातार प्रयास किया जा रहा है। लेकिन भ्रष्टाचार मनरेगा में रुकने का नाम नहीं ले रहा है।ग्रामीण सूत्र बताते हैं कि जिला के गिद्धौर,झाझा,चकाई एवं खैरा क्षेत्र में मनरेगा योजना के तहत कई अनियमितता हुआ है। इन प्रखंडों के साथ पूरा जिला में मजदूरों का ऑनलाइन हाजिरी बनाने में एवं स्थल का फोटो अपलोड करने में भी काफी गड़बड़ियां किया गया है उसके बावजूद भुगतान हुआ है।

स्थानीय विधायक राजीव कुमार सिंह ने हरी झंडी दिखाकर तीर्थ यात्रियों के बस को विदा किया

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)।बलिया पंचायत की मुखिया सारिका सिंह के द्वारा महादलित परिवार की महिलाओं को अयोध्या धाम तीर्थ यात्रा पर जा रहे बस को स्थानीय विधायक राजीव कुमार सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।मुखिया संघ जिलाध्यक्ष सारिका सिंह भी इस यात्रा में महादलित परिवारों के साथ बस से अयोध्या जा रही है। यात्रा के इस मंडली में 30 महादलित महिलाएं एवं पुरुष शामिल हैं।परिवारों के लिए यह यात्रा बिल्कुल निशुल्क है। उनके भोजन और रहने की भी व्यवस्था पंचायत के मुखिया सारिका सिंह के द्वारा की गई है। इस मौके पर स्थानीय विधायक राजीव कुमार सिंह ने कहा कि अयोध्या में श्री राम के भव्य मंदिर का निर्माण हुआ है। संपन्न लोग तो अपने खर्चे से प्रभु श्री राम का दर्शन करने तू चली जाते हैं परंतु गरीब महादलित परिवारों के लिए पंचायत की मुखिया सारिका सिंह के द्वारा किए गए इस कार्य की जितनी भी सराहना की जाए वो कम है। महा दलित परिवारों के साथ यात्रा पर रवाना हो रही है पंचायत की मुखिया सारिका सिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके मन में बहुत दिन से यह विचार था की महादलित परिवार की महिलाओं के साथ तीर्थाटन पर जाया जाए। इस समय अयोध्या में प्रभु श्री राम का विशाल एवं भव्य मंदिर बनकर तैयार है।ऐसे में इन महादलित परिवारों के साथ खासकर महिलाओं के साथ तीर्थ यात्रा पर जाना एक अलग ही सुकून देता है। इस मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी अनीश रंजन, प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी अमरजीत साबरी, मुखिया वीर कुंवर, सामाजिक कार्यकर्ता ललन सिंह, निर्मल सिंह कुशवाहा, प्रखंड जदयू अध्यक्ष कमलनयन सिंह इत्यादि उपस्थित थे।

एनसीपी शरदचंद्र पवार ने जारी किया प्रीपेड मीटर पर श्वेत-पत्र

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर (बिहार)।आम-अवाम ही असली लोकतंत्र में असली मालिक-मुख्तार होता है और न्यायपालिका, विधायिका, कार्यपालिका तथा पत्रकारिता यानी लोकतंत्र के चारो स्तंभ इनके संवैधानिक अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करते हैं लेकिन बिहार में तथाकथित सुशासन की सरकार में विधायिका और कार्यपालिका पूरी तरह से आम आदमी को लूटने में लगी हुई है जिसका ज्वलंत उदाहरण है इंडियन एसेम्बल्ड चाईनीज प्रीपेड मीटर। उपर्युक्त बातें एनसीपी (शरदचंद्र पवार) के प्रदेश महासचिव सह प्रवक्ता संजय केशरी ने विद्युत अधीक्षण अभियंता कार्यालय के सामने हिंदी, अंग्रेजी एवं मराठी भाषा में प्रीपेड मीटर पर श्वेत-पत्र जारी करते हुए कहा। श्री केशरी ने कहा कि लूट की हड़बड़ाहट में ब्लैकलिस्टेड कंपनी मे० जीनस पावर इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड को भी बिहार में प्रीपेड मीटर लगाने का ठेका दे दिया गया है। मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश उपाध्यक्ष इन्द्र देव दास ने कहा कि एनसीपी (शरदचंद्र पवार) प्रीपेड मीटर मुक्त बिहार का शंखनाद कर रहा है क्योंकि अगर प्रीपेड मीटर इतना ही स्मार्ट होता तो इसे सबसे पहले मुख्यमंत्री और ऊर्जा मंत्री सहित तमाम उच्चाधिकारियों के यहां लगाया जाता। विशिष्ट अतिथि प्रदेश सचिव मो० आलम नेता ने कहा कि प्रीपेड मीटर की आड़ में करोड़ों-अरबों रुपए का घोटाला किया जा रहा है जिसका खुलासा संजीव हंस के यहां ईडी की छापेमारी से हो चुका है। महिला नेत्री संयुक्ता सिंह चौहान ने कहा कि हमलोग पहले ही संजय केशरी के नेतृत्व में तीव्र आंदोलन करके मुंगेर में प्रीपेड मीटर लगना बंद करा चुके हैं और अब पूरे बिहार में प्रीपेड मीटर लगना बंद करायेंगे। श्वेत-पत्र जारी करने के बाद इसकी एक-एक प्रति ज्ञापन के साथ मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और ऊर्जा मंत्री बिजेंद्र यादव को विद्युत अधीक्षण अभियंता के माध्यम से भेजा गया। इस अवसर पर वरीय नेता अजय प्रसाद सिंह, मो० रहमत अली, पप्पू मंडल, शंकर यादव, सोनी सिन्हा, किरण देवी, बेबी देवी, राकेश चौरसिया, गोबिंद साहनी एवं बबलु गुप्ता सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

सरकारी मध्य विद्यालय के जीर्णोद्धार एवं नवीकरण कार्य का उद्घाटन जिला पदाधिकारी ने किया

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर(बिहार)। आईटीसी मिशन मुंगेर के मिशन सुनहरा कल द्वारा जिले में चलाई जा रही विभिन्न शिक्षा परियोजनाओं के अन्तर्गत जमालपुर प्रखंड के गैवी मध्य विद्यालय गौरीपुर, इन्दरूख में अवस्थित सरकारी मध्य विद्यालय के जीर्णोद्धार एवं नवीनीकरण कार्य का उद्घाटन जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह द्वारा किया गया। इस विद्यालय को आधुनिक शिक्षा संयंत्रों द्वारा सुसज्जित किया गया है। इस अवसर पर आईटीसी के महाप्रबंधक वैभव गुप्ता, वाईपी सिंह, वरीय प्रबंधक गिरिराज साह, प्रबंधक एवं मिशन सुनहरा कल की सहयोगी संस्था के कार्यकर्ता, डीपीओ शैलेन्द्र कुमार आदि उपस्थित थे। उद्घाटन के पश्चात जिलाधिकारी द्वारा पूरे विद्यालय परिसर का भ्रमण किया गया तथा वृक्षारोपण भी किया गया। उन्होनें इस विद्यालय में बने एस्ट्रोलैब को देख कर काफी प्रसन्नता व्यक्त की तथा उसका विधिवत उदघाटन दीप प्रज्वलित कर किया। इस लैब के गुणवत्ता पर संतोष व्यक्त किया। उन्होनें कहा की इस तरह की प्रयोगशाला जिले में एकमात्र विद्यालय में उपलब्ध हुई है जो काफी सराहनीय है। किसी भी निजी एवं सरकारी विद्यालयों में यह प्रयोगशाला उपलब्ध नहीं है। उन्होंने डीपीओ स्थापना से कहा कि जिले के सभी सरकारी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों से इस विद्यालय का भ्रमण कर यहां बने एस्ट्रोलैब एवं बाला पेंटिंग आदि को देख अपने अपने विद्यालय में भी कराने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि यह विद्यालय जिले भर में अत्यंत ही आकर्षक है और आईटीसी द्वारा किए गए गुणवत्तापूर्ण कार्य भी सराहनीय है। पूरे विद्यालय परिसर में रेनी वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम की भी व्यवस्था की गई है, जिससे बारिश के पानी का भी सदुपयोग किया जा सकेगा। जिलाधिकारी द्वारा विद्यालय के विभिन्न कक्षाओं का भी निरीक्षण किया गया, जहां उन्होंने छात्र छात्राओं से शिक्षा संवाद भी किया। विद्यालय के शिक्षकों और प्रधानाध्यापक की कार्यशैली पर भी उन्होंने संतोष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था भी संतोषजनक है और शिक्षकों द्वारा छात्र छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जा रही है।

जिलाधिकारी ने विद्यालय के बेंच डेस्क, बाला पेंटिंग, मध्यान भोजन रसोई, कीचन गार्डेन, डायनिंग हॉल , पुस्तकालय, दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष शौचालय, वाटर फिल्टर को भी निरीक्षण किया। उन्होंने दिव्यांगों के लिए बने विशेष शौचालय को भी देख कर उसकी प्रशंसा करते हुए कहा कि इस शौचालय से दिव्यांगजन छात्र छात्राओं को काफी लाभ मिलेगा। कुल मिलाकर विद्यालय निर्माण में पूरी गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है जो सराहनीय है।

शाहिद रामफल मंडल के प्रतिमान निर्माण के आधारशिला रखते ही दो गांव में मचा बवाल

प्रात : किरण संवाददाता

बरियारपुर (मुंगेर)। शहीद रामफल मंडल के प्रतिमा निर्माण के आधारशिला रखते ही दो गांव में जमकर बवाल पुलिस के हस्तक्षेप से मामला टला।मामला बरियारपुर थाना क्षेत्र के बहादुरपुर व मिर्जाचक के मोड़ पर मिर्जाचक के ग्रामीणों द्वारा शहीद रामफल मंडल के प्रतिमा निर्माण का आधारशिला रखते ही बहादुरपुर के ग्रामीणों ने जमकर किया हंगामा।घटना स्थल पर स्थित बिगड़ते देख बरियारपुर पुलिस को. सुचित किया गया। मौके ऐ बरदात बरियारपुर पुलिस निरीक्षक सह थानाध्यक्ष राजेश कुमार ने सदलवल घटनास्थल पर पहुंचे जहां दोनो गाँव के लोगों द्वारा देख लेने की धमकी देकर कहा हम निर्माण करेंगे तो क्या होगी।इस सम्बन्ध मे स्थिति के नजाकत को देखते हुए थाना अध्यक्ष ने दोनो पक्षों को थाना बुलाया गया। जहां अपने अपने पक्ष को रखा।बहादुरपुर ग्रामीणों ने बडी वाहनों के आवाजाही मे व्यवधान होने की बात कहां वही मिर्जाचक के ग्रामीणों ने अतिक्रमण मुक्त कराने की बात किया।क्योंकि मन्दिर के बगल में गन्दगी फैलाना दंण्डनिय अपराध बताया। काफी जद्दोजहद के बाद दोनों पक्षों द्वारा अपना स्विकृति प्रदान करते हुए दोनो गांव के लोगों को निर्माण कार्य पर रोक लगाते हुऐ कहा पहले मिट्टी भर कर बड़ी वाहनों के जाने आने पर किसी तरह का निर्माण कार्यों पर रोक लगा दिया गया है। इस सम्बन्ध में अंचलाधिकारी रविना गुप्ता से पुछने पर बतायी दोनों गांव के लोगों द्वारा निर्माण नही करेंगे तथा सरकारी भूमी पर निर्माण नही कर सकते है।अगर कोई गांव के लोगों ने किसी तरह के गैरकानूनी हरकत करते पाये जायेंगे उस पर शक्ति से निपटा जायेगा।

झाझा विधायक दामोदर ने किया गिद्धौर पावर ग्रिड का निरीक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर।गिद्धौर पावर ग्रिड में अनियमित विद्युत आपूर्ति की शिकायत पर स्थानीय झाझा विधायक दामोदर रावत ने गिद्धौर पावर ग्रिड पहुंच कर औचक निरीक्षण किये। निरीक्षण के क्रम कनीय अभियंता धीरेंद्र कुमार को कड़े निर्देश देते हुए कहा कि ग्रामीणें की शिकायत विद्युत आपूर्ति में हो परेशानी को शीघ्र निदान करें। साथ ही उन्होंने विद्युत भवन,यार्ड एवं स्मार्ट मीटर संबंधित सभी चीजों की गहनता से निरक्षण किये। प्रखंड क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति दुरुस्त हो इसको लेकर गिद्धौर पावर ग्रिड के जेई को सख्त निर्देश दिया कि किसानों को कोई भी दिक्कत ना हो और ससमय पर बिजली आपूत्ति मिलते रहे।इस मौके पर प्रखंड जदयू अध्यक्ष विवेकानंद सिंह,जेई धीरेन्द्र कुमार,डाटा अपरेटर बिटू कुमार मानव वल धर्मेंद्र मेहता,सुजीत रावत,रवि कुमार,सुशील सिंह,राकेश कुमार मौजूद थे।

सम्पादकीय

हरियाणा : बैकफुट पर भाजपा

90 विधानसभा सीटों वाला हरियाणा प्रदेश आगामी 5 अक्टूबर को विधानसभा के आम चुनावों का सामना करने जा रहा है। गत वर्षों में हुये किसान आंदोलनों में अपनी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाला हरियाणा, किसान आंदोलनों के बाद पहली बार विधानसभा चुनावों से रूबरू होने जा रहा है। चूंकि हरियाणा विगत दस वर्षों से भाजपा शासित राज्य रहा है इसलिये यहाँ की हरियाणा सरकार पर ही यह सबसे बड़ी जिम्मेदारी थी कि किसान आंदोलन के दौरान राज्य सरकार किसी भी तरह से दिल्ली जाने की गरज से पंजाब से आने वाले किसानों को भी हरियाणा में प्रवेश करने से रोके और साथ ही हरियाणा -दिल्ली सीमा पर इन्हें दिल्ली प्रवेश से भी रोके। जाहिर है हरियाणा की तत्कालीन खट्टर सरकार ने केंद्र की उम्मीदों पर खरा उतारते हुये ऐसा ही किया। खट्टर सरकार को राज्य की पंजाब व दिल्ली की सीमाओं पर भारी पुलिस तैनाती करनी पड़ी। किसानों पर लाठी चार्ज, आंसू गैस, वाटर कैनन का इस्तेमाल किया। यहाँ तक कि गोलियां भी चलानी पड़ीं। इसी गोलीबारी में कई लोग घायल हुये और एक युवा किसान की हत्या भी हो गयी। परन्तु किसानों से की गयी इस जोर आजमाइश के कारण भाजपा को राज्य व केंद्र सरकार को भारी किसान असंतोष का सामना भी करना पड़ा। किसानों की नाराजगी पिछले दिनों हुये लोकसभा 2024 के चुनाव में भी स्पष्ट हो गयी थी। क्योंकि जिस हरियाणा में 2019 में भाजपा को राज्य की सभी दस लोकसभा सीटों पर जीत हासिल हुई थी वहीं इस बार 2024 के चुनाव में उसे 5 सीटें ही मिल सकीं जबकि कांग्रेस भाजपा से 5 सीटें झटकने में कामयाब रही। हालांकि पिछले लोकसभा चुनाव से पूर्व मनोहर लाल खट्टर को मुख्यमंत्री पद से हटाकर केंद्र में भी इसी मकसद से ले जाया गया है ताकि शायद किसानों का गुस्सा कुछ कम हो सके। गौरतलब है कि खट्टर के मुख्यमंत्री रहते उनकी सरकार ने कई बार न केवल किसानों पर दमनात्मक कार्रवाई की थी बल्कि स्वयं खट्टर ने ही अपने समर्थकों को किसानों के विरुद्ध हिंसा करने के लिये भी भड़काया था। आज भी हरियाणा सरकार ने शंभु बॉर्डर पर किसानों को रोकने के लिये बैरियर बना रखे हैं जिसकी वजह से राजस्थान, कश्मीर व पंजाब की तरफ से दिल्ली हरियाणा व उत्तर प्रदेश की ओर जाने वाले वाहनों को भारी परेशानी व जाम का सामना करना पड़ रहा है। पिछले दस वर्षों की सत्ता विरोधी लहर होने के साथ ही इस बार चुनावों में भाजपा के महिला सुरक्षा के दावे और उसकी हकीकत भी एक बड़ा मुद्दा बनने जा रहा है। खास तौर पर ऐसे वक़्त में जब देश का विश्व में नाम रोशन करने वाली विश्व प्रसिद्ध पहलवान विनेश फोगाट और बजरंग पुनिया जैसे ओलम्पियंस कांग्रेस में शामिल हो चुके हैं। विनेश फोगाट को राज्य की जुलाना विधानसभा सीट से पार्टी प्रत्याशी घोषित किया गया है जबकि बजरंग पुनिया को किसान कांग्रेस का कार्यकारी अध्यक्ष बनाकर उन्हें संगठन में और भी बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गयी है। जहाँ किसान नेता, भाजपा सांसद व कुश्ती महासंघ के तत्कालीन अध्यक्ष बृज भूषण सिंह के खिलाफ उसके नारी शोषण के विरुद्ध किये जा रहे आंदोलन में इन ओलम्पियन्स के साथ खड़े थे वहीं यह ओलम्पियन्स भी किसान आंदोलन का समर्थन करते देखे गये थे। क्योंकि यह पहलवान भी दरअसल किसान घरानों से ही आते हैं और किसानों की जायज मांगों से बखूबी वाकिफ हैं। हालाँकि इन खिलाड़ियों के कांग्रेस का दामन थामने के बाद बृज भूषण सिंह ने जोर शोर से यह कहना शुरू कर दिया है कि पहलवानों द्वारा उनके विरुद्ध शोषण का आरोप लगाना कांग्रेस द्वारा दो वर्ष पूर्व लिखी गयी स्क्रिप्ट का हिस्सा थी। राज्य में भाजपा पर कांग्रेस की जबरदस्त बढ़त के दो और भी कारण हैं। एक तो यह कि राहुल गाँधी द्वारा कन्याकुमारी से कश्मीर तक तय की गयी भारत जोड़ो यात्रा, हरियाणा से होकर गुजरी थी। इस यात्रा ने न केवल राज्य के मतदाताओं पर अपना प्रभाव छोड़ा था बल्कि राज्य के कांग्रेस जनों में भी जोश व उत्साह का संचार किया था। जिसका नतीजा लोकसभा चुनाव में 5 सीटें जीतने के रूप में सामने भी आया। अब जहां कांग्रेस 5 लोकसभा सदस्यों की जीत के साथ बुलंद हौसले से चुनाव मैदान में है वहीं भाजपा जिताऊ उम्मीदवार मैदान में उतारने के चक्कर में न केवल कई दलबदलुओं को भाजपा प्रत्याशी बना रही है बल्कि परिवारवाद के विरुद्ध लंबे चौड़े प्रवचन देने के बावजूद खुद भी कई ह्यपरिवारवादी सूरमाओंह्न पर दांव लगा रही है। क्योंकि भाजपा को अपने दल में योग्य व जिताऊ नेताओं की कमी महसूस हो रही है।

कब पीछा छोड़ेगा ये 370 का आंकड़ा?

कुछ चीजें जाने-अनजाने गले पड़ जातीं हैं तो पीछा नहीं छोड़तीं, ठीक उसी तरह जिस तरह की कुछ भूत मरने-मारने के बावजूद सर से नहीं उतरते। उन्हें उतरने के लिए लम्बी प्रतीक्षा करना पड़ती है। अनचाही चीजों से पिंड छुड़ाने के लिए भी लम्बी मशक्कत करना पड़ती है। इस समय भाजपा के सिर पर दस साल से कांग्रेस का भूत और गले में धारा 370 हड्डी की तरह फंसी हुई है। तीसरी बार देश की सत्ता में आई भाजपा के साथ पहली बार मेरी सहानुभूति उमड़ रही है। आखिर भाजपा ने सत्ता में आने के लिए, एक नया युग (मोदी युग) शुरू करने के लिए बहुत पापड़ बेले तब कहीं जाकर 34 साल बाद सत्ता में आयी थी। दुर्भाग्य ये है कि भाजपा लगातार पापड़ बेल रही है, लेकिन खुद खा नहीं पा रही। जिस धारा 370 को हटाने में भाजपा को एक लम्बी यात्रा करना पड़ी। वो ही धारा 370 अब फिर से जम्मू-कश्मीर विधानसभा के चुनावों के आते ही एक बार फिर गले पड़ गयी है। कांग्रेस समेत समूचा विपक्ष कह रहा है कि यदि राज्य में भाजपा सत्ता में न आयी तो जम्मू-कश्मीर को धारा 370 फिर से लौटा दी जाएगी। आपको याद होगा कि चार महीने पहले ही सम्पन्न आम चुनावों में भाजपा ने अपने लिए 370 और अपने गठबंधन के लिए 400 पार का लक्ष्य रखा था, किन्तु देश की जनता ने भाजपा को दोनों ही लक्ष्य पूरे नहीं करने दिए। भाजपा 240 पर ही अटक गयी। भाजपा ने जैसे-तैसे इस दर्द को, इस आंकड़े को भुलाने की कोशिश की थी किन्तु जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव घोषित होते ही समूचे विपक्ष ने एक बार फिर धारा 370 की वापसी का राग अलापकर भाजपा की मुश्किलें बढ़ा दीं हैं। मुश्किलें कम करने और मुश्किलें बढ़ाने में बड़ा अंतर है। भाजपा को लगा कि धारा 370 हटाने के बाद सीमा पर कर किसी खाई में गिराकर मर गयी होगी, लेकिन ऐसाहीं हुआ। वो तो जहाँ थी, वहीं आज भी है, केवल उसे जम्मू-कश्मीर से हटा दिया गया था। गृह मंत्री अमित शाह ने राहुल गांधी से सवाल करते हुए पूछा कि यह दर्जा कौन वापस दे सकता है? यह दर्जा तो सिर्फ भारत सरकार दे सकती है, प्रधानमंत्री दे सकते है। उन्होंने कहा कि मैं बाबा मन्हास के मंदिर की कसम खाकर कहता हूं कि हम आपको 370 वापस नहीं लाने देंगे। आपको दलित और गुज्जर बकरवाल भाइयों के रिजर्वेशन को समाप्त नहीं करने देंगे। अपने पुराने सियासी कश्मीरी दोस्तों को इंगित कर अमित शाह ने कहा कि कांग्रेस, अब्दुल्ला और मुफ्ती परिवार ने जम्मू कश्मीर को लूटा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और फारूक अब्दुल्ला को मत जिताना नहीं तो जम्मू कश्मीर का विकास रुक जाएगा। जम्मू कश्मीर के लिए यह चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एक ध्वज, एक संविधान के तहत पहला चुनाव हो रहा है। कांग्रेस तो छोड़िये अब जम्मू-कश्मीर के पूर्व सीएम रहे उमर अब्दुल्ला ने गृह मंत्री अमित शाह को सीधा चैलेंज देते हुए आर्टिकल 370 को वापस लाने की वकालत की है। उन्होंने कहा कि हम चुनाव जीते तो अनुच्छेद 370 को दोबारा लागू करेंगे। इसके लिए वक्त लगेगा, लेकिन यह होकर रहेगा। 370 हटने के बाद जब जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव पहली बार होने जा रहे हैं तब इसे राजनीति गूंज और जोर से सुनाई पड़ रही है। हमें पता है कि धारा 370 को हटाना न आसान था और अब तो दोबारा लागू करना और भी मुश्किल है। इसीलिए मई मुश्किल शब्द का इस्तेमाल कर रहा हूँ, असम्भव का नहीं। आपको याद होगा कि तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 5 अगस्त 2019 को सीओ 272 जारी किया था। राष्ट्रपति का यह आदेश था जिसके जरिए संविधान के अनुच्छेद 367 को संशोधित किया गया। इसमें कहा गया कि अनुच्छेद 370 (3) में उल्लेखित संविधान सभा की जगह इसे विधानसभा कहा जाएगा। इससे ही 370 हटाने का रास्ता साफ हुआ। लेकिन भाजपा ने धारा 370 को संविधान से विलोपित शायद नहीं किया है, और अब शायद ऐसा करने का समय भी नहीं है और कूबत भी नहीं है। इसलिए इस धारा को लेकर जम्मू -कश्मीर का अवाम देश की मुख्यधारा में वापस आएगा या नहीं, इसमें संदेह है। हम धाराओं के साथ बहने वाले लोग नहीं हैं। हमें धारा के विपरीत अपना रास्ता तय करने की आदत है, लेकिन हमें फिक्र भाजपा की है, उसके तनाव की है और उसकी चुनौतियों की है, क्योंकि पार्टी का नेतृत्व बूढ़ा हो चुका है।

मुफ्त की संस्कृति से पंजाब-हिमाचल की बढ़ी आर्थिक मुश्किलें

ब्रिटेन, इटली, जर्मनी, फ्रांस, डेनमार्क, स्वीडन, संयुक्त अरब अमीरात, बांग्लादेश, मलेशिया, कनाडा, अंगोला, कीनिया, कांगो, स्पेन, ऑस्ट्रेलिया सहित अनेक देश इस दौड़ में शामिल हैं। विकसित देश जहां अपनी जीडीपी का 0.5 प्रतिशत से 1 प्रतिशत तक लोककल्याण योजनाओं में खर्च करते हैं, तो विकासशील देश जीडीपी का 3 प्रतिशत से 4 प्रतिशत तक फ्रीबीज के नाम पर खर्च कर देते हैं। भारत में अब जब न्यायालय की चौखट पर यह मुद्दा विचाराधीन है, तो संभावना है कि सरकार पर अनावश्यक आर्थिक भार डालने वाली घोषणाओं पर नियंत्रण को लेकर कोई राह भारत ही दुनिया को दिखाए।

ललित गर्ग
लेखक विख्यात अर्थशास्त्री है

दिल्ली, पंजाब व हिमाचल सरकारों के सम्मुख वित्तीय संकट के धुंधलके छाने लगे हैं। सत्ता पर बैठी आम आदमी पार्टी एवं कांग्रेस की सरकारों के सामने चुनाव के दौरान वोटरों को लुभाने के लिए की गयी फ्रीबीज या रेवड़ी कल्चर की घोषणा आर्थिक संकट का बड़ा कारण बन रही है। मुफ्त की रेवड़ियां बांटने एवं लोक-लुभावन घोषणाओं के कितने भारी नुकसान होते हैं, इस बात को दिल्ली, पंजाब व हिमाचल सरकारों के सामने खड़ी हुई वित्तीय परेशानियों से समझा जा सकता है। इन सरकारों के लगातार बढ़ते राजस्व घाटा व बड़ी होती देनदारियां राज्य की अर्थव्यवस्था पर भारी पड़ रही हैं। विकास योजनाओं को तो छोड़े, इन राज्यों में कर्मचारियों को वेतन व सेवानिवृत्त कर्मियों को समय पर पेंशन देने में मुश्किलें आ रही हैं। इन जटिल होती स्थितियों को लेकर ह्यरेवड़ी कल्चरह्न पर न्यायालय से लेकर बुद्धिजीवियों एवं राजनीति क्षेत्रों में व्यापक चर्चा है। पंजाब के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक यानी कैग की हालिया रिपोर्ट में राज्य की वित्तीय प्राप्तियों और खर्चे के बीच बढ़ते राजकोषीय अंतर को उजागर किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मुक्त की संस्कृति पर तीखे प्रहार करते हुए इसे देश के लिए नुकसानदायक परंपरा बता चुके हैं। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने भी मुफ्त रेवड़ियां बांटने के चलन पर गंभीर चिंता जता चुके हैं। नीति आयोग के साथ रिजर्व बैंक भी मुफ्त की रेवड़ियों पर आपत्ति जता चुका है, लेकिन राजनीतिक दलों पर कोई असर नहीं है। कैग की रिपोर्ट बताती है कि कैसे पंजाब राज्य का राजस्व घाटा, सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 1.99 फीसदी लक्ष्य के मुकाबले 3.87 फीसदी तक जा पहुंचा है। यह बेहद चिंताजनक स्थिति है कि राज्य का सार्वजनिक ऋण जीएसडीपी का 44.12 फीसदी हो गया है। यदि अब भी सत्ताधीश वित्तीय अनुशासन का पालन नहीं करते एवं मुक्त की सुविधाएं देने से बाज नहीं आते तो निश्चित ही राज्य को बड़ी मुश्किल की ओर धकेलने जैसी बात होगी। जिसका उदाहरण सामने है कि बीते माह का वेतन निर्धारित समय पर नहीं दिया जा सका है। इसके बावजूद सत्ता पर काबिज नेता मुफ्त की रेवड़ियों को बांटने का क्रम जारी रखे हुए हैं तो उसकी कीमत न केवल टैक्स देने वालों को चुकानी पड़ रही है बल्कि आम लोगों के जीवन पर भी इसका प्रतिकूल असर पड़ रहा है। वहीं दूसरी ओर राज्य का खर्चा जहां 13 प्रतिशत की गति से बढ़ रहा है, वहीं राजस्व प्राप्तियां 10.76 फीसदी की दर से बढ़ रही हैं। जाहिर है, ये अंतर राज्य की आर्थिक बदहाली, आर्थिक असंतुलन एवं आर्थिक अनुशासनहीनता की तस्वीर ही उकेरता है। दिल्ली से लेकर पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकारें हों या हिमाचल प्रदेश से लेकर अन्य राज्यों में कांग्रेस की सरकारें तमाम तरह की मुफ्त की रेवड़ियां बांट कर भले ही वोट बैंक को अपने पक्ष में करने का स्वार्थी खेल खेला जा रहा हो, लेकिन इससे वित्तीय बजट लडखड़ाने ने इन राज्यों के लिये गंभीर चुनौती बन रहा हैं। दरअसल, जिस भी नागरिक सुविधा को मुफ्त किया जाता है, उस विभाग का तो भट्टा बैठ जाता है। फिर उसका आर्थिक संतुलन कभी नहीं संभल पाता। कैग की हालिया रिपोर्ट बताती है कि पंजाब में एक निर्धारित यूनिट तक मुफ्त बिजली बांटे जाने से राज्य के अस्सी फीसदी घरेलू उपभोक्ता मुफ्त की बिजली इस्तेमाल कर रहे हैं। ये और ऐसी ही अन्य मुफ्त सुविधाओं की भरमार के कारण सरकारों के सामने अपने कर्मियों को समय पर वेतन देने के लिये वित्तीय संकट है, जबकि वेतन पर आश्रित कर्मियों को राशन-पानी, बच्चों की स्कूल की फीस व लोन की ईएमआई आदि समय पर चुकाने में दिक्कत हो रही है। इन जटिल होते हालातों को देखते हुए अपेक्षा है कि राजनेता सस्ती लोकप्रियता पाने के लिये सब्सिडी की राजनीति एवं मुफ्त की संस्कृति से परहेज करें और वित्तीय अनुशासन से राज्य की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने का प्रयास करें। जब भी ऐसी लोक-लुभावन घोषणाएं की जाती हैं तो उन दलों को अपने घोषणापत्र में यह बात स्पष्ट करनी चाहिए कि वे जो लोकलुभावनी योजना लाने जा रहे हैं, उसके वित्तीय स्रोत क्या होंगे? कैसे व कहां से यह धन जुटाया जाएगा? साथ ही जनता को भी सोचना चाहिए कि मुफ्त के लालच में दिया गया वोट कालांतर उनके हितों पर भारी पड़ेगा। जनता को गुमराह करते हुए, उन्हें ठगते हुए देश में रेवड़ियां बांटने का वादा और फिर उन पर जैसे-तैसे और अक्सर आधे-अधूरे ढंग से अमल का दौर चलता ही रहता है। लोकलुभावन वादों को पूरा करने की लागत अंततः मतदाताओं को खासकर करदाताओं को ही वहन करनी पड़ती है-अक्सर करों अथवा उपकरों के रूप में। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने तेलंगाना विधानसभा चुनाव के समय मुफ्त रेवड़ियां देने के मुद्दे को उठाते हुए कहा था कि कई राज्यों ने अपनी वित्तीय स्थिति की अनदेखी करते हुए मुफ्त की सुविधाएं देने का वादा कर दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी कुछ समय पहले उन दलों को आड़े हाथों लिया था, जो वोट लेने के लिए मुफ्त की रेवड़ियां देने के वादे करते हैं। उनका कहना था कि रेवड़ी बांटने वाले कभी विकास के कार्यों जैसे रोड, रेल नेटवर्क आदि का निर्माण नहीं करा सकते। वे अस्पताल, स्कूल और गरीबों के घर भी नहीं बनवा सकते। रेवड़ी संस्कृति अर्थव्यवस्था को कमजोर करने के साथ ही आने वाली पीढ़ियों के लिए घातक भी साबित होती है। इससे मुफ्तखोरी की संस्कृति जन्म लेती है। मुफ्त की सुविधाएं पाने वाले तमाम लोग अपनी आय बढ़ाने के जतन करना छोड़ देते हैं। पंजाब में महिलाओं को नगद राशि देने की घोषणा हुई, जबकि वहां की महिलाएं समृद्ध है। दिल्ली में उन महिलाओं को भी डीटीसी बसों में मुफ्त यात्रा की सुविधा दी गई है, जिन्हें इस तरह की सुविधा की जरूरत नहीं। आधी आबादी को मुफ्त यात्रा की सुविधा देने से दिल्ली में डीटीसी को हर साल 15 करोड़ रुपये तक का नुकसान होगा। इस राशि का उपयोग दिल्ली के इन्फ्रास्ट्रक्चर पर किया जा सकता है। मुफ्तखोरी की राजनीति से देश का आर्थिक बजट लडखड़ाने का खतरा है। और इसके साथ निष्क्रियता एवं अकर्मण्यता को बल मिलेगा। हिंदुस्तान में लोगों को बहुत कम में जीवन निर्वहन करने की आदत है ऐसे में जब मुफ्त राशन, बिजली, पानी, शिक्षा, चिकित्सा मिलेगा तो काम क्यों करेंगे। गरीब की थाली में पुलाव आ गया है, लगता है शहर में चुनाव आ गया हैह्न भारत की राजनीति से जुड़ी विसंगतियों एवं विडम्बनाओं पर ये दो पंक्तियां सटीक टिप्पणी हैं। चुनाव आते ही वोटरों को लुभाने के लिए जिस तरह राजनीतिक दल और उनके नेता वायदों की बरसात करते हैं, यह शासन-व्यवस्थाओं को गहन अंधेरों में धकेल देता है। मुफ्त की संस्कृति को कल्याणकारी योजना का नाम देकर राजनीतिक लाभ की रोटियां सेंकी जाती रही है। भारत जैसे विकासशील देश के लिये यह मुक्त संस्कृति एक अभिशाप बनती जा रही है। सच भी है कि मतदाताओं का एक बड़ा वर्ग आज भी इस स्थिति में है कि कथित तौर पर मुफ्त या सस्ती चीजें उसके वोट के फैसले को प्रभावित करती हैं। मुफ्त ह्यरेवड़ीह्न व कल्याणकारी योजनाओं में संतुलन कायम करना आवश्यक है, परंतु वोट खिसकने के डर से राजनीतिक दल इस बारे में मौन धारण किये रहते हैं, बल्कि न चाहते हुए भी इसे प्रोत्साहन भी देते हैं। फ्रीबीजह्न या मुफ्त उपहार न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में वोट बटोरने एवं राजनीतिक धरातल मजबूत करने का हथियार हैं। मुफ्त उपहार के मामले में कोई भी देश पीछे नहीं है।

आधुनिक हिंदी पत्रकारिता के दधीचि रवि जी

ब्रह्मानन्द ठाकुर
लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार

रवीन्द्र नाथ ठाकुर ह्यरवि ह्य यही नाम था उनका। जब तक जीवित रहे, गांव से लेकर शहर तक अपने चाहने वालों, इष्ट मित्रों एवं प्रशंसको में ह्य रवि जी नाम से ही जाने जाते रहे। वे मुजफ्फरपुर जिले के पियर गांव के निवासी थे।सन- साठ के दशक में हिंदी से स्नातकोत्तर करने वाले रवि जी अपने शिक्षकों के बड़े ही प्रिय छात्र थे। तब के समय में सरकारी नौकरी पाना आज की तरह मुश्किल नहीं था। लेकिन उसके लिए तब भी पैरवी और पैसे की जरूरत होती थी। रवि जी ने इस सम्बंध में अपनी कविता ह्यएक कविता : बत्तीस संदर्भ में लिखा है,

कालेज के लिए अप्लाई किया

इंटरव्यू दिया --
मेरी कविता पर जमकर
प्रश्न चला
डटकर जवाब दिया --
पर मेरा नाम नहीं भेजा गया,
वह पद शिक्षामंत्री के
कैन्डडेट को मिला,
यह बाद में मालूम हुआ।

जाहिर है, यह एक कविता :बत्तीस संदर्भ उनके 32 साल के जीवन के 32 सोपान हैं।इसमें उनके युवा -जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव के साथ आर्थिक विषमता जनित सामाजिक, राजनीतिक विकृतियों के अनुभव भी हैं।यह अनुभव सिर्फ उनका नहीं, उन जैसे आत्मसम्मान और स्वाभिमान

की जिंदगी जीने की चाहत रखने वाले देश के हर युवा का है। उनके अनेक साथियों ने विभिन्न विभागों में अच्छी नौकरी ज्वाइन कर ली और आज पेंशन से अच्छी तरह जीवन यापन कर रहे हैं। रवि जी ने भी तब अनिच्छा से एक नव स्थापित गैर सरकारी कालेज में हिंदी प्राध्यापक के रूप में कुछ महीने के लिए योगदान किया। उस दौरान अपने अनुभवों को उन्होंने बड़े बेबाकी के साथ अपनी काव्य पुस्तक एक कविता बत्तीस संदर्भ में व्यक्त किया है। वे लिखते हैं ----

कालेज में पढ़ाने गया / सूर ,तुलसी पढ़ा न सका/निर्गुण ,सगुण और शास्त्र - पुरान की कथा गलत लगी /छात्रों को गलत बता न सका / शिक्षा पद्धति को अनुत्पादक बताकर /रिभोल्ट करा न सका/वापस लौट आया। रवि जी की कालेज से वापसी और पत्रकारिता में प्रवेश सत्तर के दशक में हुई। अपने जीवन के उत्तरार्द्ध , लगभग 47-48 सालों तक वे पत्रकारिता से जुड़े रहे। पटना से प्रकाशित अनेक साप्ताहिक ,अर्ध साप्ताहिक पत्रों का सम्पादन किया। कालान्तर मे उनके साथ पत्रकारिता करते हुए कई

युवा पत्रकारों ने दैनिक अखबारों में सम्पादक पद को भी सुशोभित किया। अपने सिद्धांतों से किसी भी कीमत पर समझौता नहीं करने वाले रवि जी कभी भी अपना दर्द किसी से साझा नहीं किया। तब रेडियो स्टेशन से अक्सर उनको काव्यपाठ के लिए बुलाया जाता था।मुझे याद है। वह इमर्जेंसी का जमाना था। एक दिन रेडियो पर सर्व भाषा कवि गोष्ठी आयोजित थी। इस कार्यक्रम में वे काव्य पाठ के लिए आमंत्रित थे।सेंसर बोर्ड के अधिकारियों ने उनकी कविता को पास कर दिया था।कविता बज्जिका भाषा में थी।वे सुना रहे थे , चद्दर तनले की सूतल छी /जागूं ,काम पर भागू अबेर होइय। उनकी यह कविता इमर्जेंसी के खिलाफ एक तरह से कहें तो जनता में जागरण का संदेश देती है।

कवि ने इस कविता के माध्यम से इमर्जेंसी की ज्यादतियों के खिलाफ जनता को जागृत कर दिया।सेंसर बोर्ड के अधिकारी गच्चा खा चुके थे। बाहर से बिल्कुल सरल और शांत , अंदर से अन्याय , अत्याचार और शोषण , भ्रष्टाचार के खिलाफ उबलते हुए रवि जी को समझना हो तो उनकी कविता की इन पंक्तियों से समझा जा सकता है।

पैसा कहां है ?/कुछ लोगों की बंद तिजोरी में है/बैंक में है/ मेरी जेब में न था,/न है/----------------।

ह्यलडे बिना कुछ नहीं होगा-- /न सम्पत्ति का स्वामित्व मिटेगा ,/न उसकी सीमा बंधेगी,/न भूमि मिलेगी /न रोजी मिलेगी/ लोकतंत्री सरकार में/संसदीय प्रणाली से।ह्न

रवि जी ने कभी भी किसी की चरण वंदना कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने की कोशिश नहीं की।जीवन पर्यंत समाज में उच्च सांस्कृतिक मानदंड स्थापित करने के लिए संघर्षरत रहे।इसका उदाहरण उनकी एक कविता की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है --

जब मिलता है आशीष यहां ,चरणों पर शीष झुकाने से,
मैं सिर सदा उठा ,चलने वाली, संस्कृति ही सोचूं ,सिरजूंगा।ह्नवे आजीवन इसी संस्कृति और मूल्यबोध के लिए समर्पित रहे।

ऐसी संस्कृति और जीवन मूल्य की स्थापना के लिए जो व्यक्ति जीवन पर्यंत तिल -तिल कर जलता रहा ,वह दधीचि नहीं तो और क्या हो सकता है ?

श्रीगणेशजी को अडहुल के पुष्प अर्पण करें

श्रीमती प्राची जुवेकर

देवताओं को पुष्प अर्पित करने का मुख्य उद्देश्य : देवताओं से प्रक्षेपित स्पंदन मुख्यतः निर्गुण तत्त्व से संबंधित होते हैं ।देवताओं को अर्पित पुष्प तत्त्व ग्रहण कर पूजक को प्रदान करते हैं, जिससे पुष्प में आकर्षित स्पंदन भी पूजक को मिलते हैं । पुष्प भी मनुष्य की भांति सत्त्व, रज एवं तम प्रवृत्ति के होना जिस प्रकार मनुष्य सत्त्व, रज एवं तम प्रवृत्ति के होते हैं, उसी प्रकार अन्य सजीव घटकों के (प्राणी एवं वनस्पतियों के) संदर्भ में भी होता है । देवतापूजन हेतु विहित पुष्प सत्त्वप्रधान होते हैं ।सजावट हेतु प्रयुक्त भारतीय पुष्प रजोगुणी होते हैं, जबकि सजावट हेतु प्रयुक्त विदेशी पुष्प तमोगुणी होते हैं । कौनसा पुष्प किस देवता का तत्त्व आकर्षित करता है ? कौनसा पुष्प किस देवता का तत्त्व आकर्षित करता है यह शास्त्रोंद्वारा निर्धारित है, उदा. अडहुल झ गणेशतत्त्व, मदारके पत्र एवं पुष्प झ हनुमानतत्त्व आदि । श्री गणेशपूजन में प्रयुक्त विशेष वस्तुएं लाल रंग की वस्तुएं श्री गणपति का वर्ण लाल है; उनकी पूजा में लाल वस्त्र, लाल फूल एवं रक्तचंदन का प्रयोग किया जाता है ।इस लाल रंग के कारण वातावरणसे गणपति के पवित्रक मूर्ति में अधिक मात्रा में आकर्षित होते हैं एवं मूर्ति के जागृतिकरण में सहायता मिलती है । चूंकि यह समझना कठिन है, इसलिए ह्यगणपतिको लाल वस्त्र, लाल फूल एवं रक्तचंदन प्रिय हैं, ऐसा कहकर यह विषय प्रायः समाप्त कर दिया जाता है । अडहुल के पुष्प में विद्यमान रंगकणों एवं गंधकणों के कारण ब्रह्मांडमंडल के गणेशतत्त्व के पवित्रक उसकी ओर आकर्षित होते हैं ।लाल अडहुल एवं अन्य रंग के अडहुल में भेद अ. लाल रंग के अडहुल के पुष्प में विद्यमान रंग एवं गंधकणों के कारण ब्रह्मांडमंडल में विद्यमान गणेशतत्त्व आकर्षित करने की क्षमता अधिक होती है, अन्य रंगों के अडहुल के पुष्पों की ओर ब्रह्मांडमंडल से गणेशतत्त्व आकर्षित करने की मात्रा अल्प होती है । आ. कलम (ग्राफ्टिंग) किए अडहुल के विविध रंगों के पुष्पों में अल्प मात्रा में मायावी स्पंदन आकर्षित होते हैं । पुष्प का कार्य . अडहुल के पुष्प के डंठल में गणेशतत्त्व आकर्षित होता है । पुष्प की पंखुडियों के मध्यभाग में वह सक्रिय होता है तथा पंखुडियों के माध्यमसे वातावरण में प्रक्षेपित होता है । आ. पुंकेसर पंखुडियों के बाहर रहनेवाले (पंखुडियों से बडे) अडहुल के पुष्प में ब्रह्मांड से आकर्षित देवता के निर्गुण तत्त्व का सगुण में रूपांतरण होकर वह पुष्प में संजोया रहता है और निरंतर प्रक्षेपित होता रहता है । शमी की पत्तियां ामी में अग्नि का वास है । अपने शस्त्रों को तेजस्वी रखने हेतु पांडवों ने उन्हें शमी के वृक्ष की कोटर में रखा था ।जिस लकडी के मंथनद्वारा अग्नि उत्पन्न करते हैं, वह मंथा शमी वृक्ष का होता है । मदार की पत्तियां ई एवं मदार में अंतर है ।रुई के फल रंगीन होते हैं तथा मदार के फल श्वेत होते हैं ।जैसे औषधियों में पारा रसायन है, वैसे मदार वानस्पत्य रसायन है ।

विस्फोटक के ऊपर बैठी दुनिया के चारों ओर आंतकी जमातें

डा. रवीन्द्र अरजरिया

देश-दुनिया में कट्टरपंथियों की जमातें ईश निंदा के आरोप लगाकर निरंतर हमलों को अंजाम दे रही है। शरिया कानून मानने वाले राष्ट्रों के अलावा अन्य गणतंत्र देशों में भी भीड की शक्ल में जमा होकर असामाजिक तत्वों के समूह न केवल मनमाने आरोपों का हल्ला मचाकर लोगों की जान ले रहा है बल्कि खास सम्प्रदाय में उन्माद फैलाकर काफिरों को नस्तनाबूत करने के लिए उकसाता भी है। साइबर युग में संचार साधनों का उपयोग करके आतंक को पनाह देने वाले देश फर्जी पोस्ट डालकर मजहब की दुहाई दे रहे हैं ताकि अमन, चैन और खुशहाली को दफन किया जा सके। राजस्थान के उदयपुर का मामला हो या फिर बंगलादेश के उत्सव मण्डल की जिन्दगी का सवाल। अमेरिका में कट्टरपंथियों की भीड का हिंसक होना हो या फिर ब्रिटेन में कानून तोडने की घटनायें। लाल सागर में समुद्री लुटेरों का लहू डूबा करतब हो या फिर इजराइल में इस्लामी हमला। समूची दुनिया में आतंक की इबारत तले जबरन गुलाम बनाने की सियासत चल रही है। असामाजिक तत्वों की जमातों व्दारा मजहब के नाम पर दुनिया भर में नफरत की आंधियां चलाई जा रहीं हैं। फिलिस्तीन में वहां के लोग मासूम जान की कीमत पर भी हमास को सुरक्षित कर रहे हैं। इजराइल से अपहरित करके लाये गये वहां के नागरिकों में से अधिकांश के शव बरामद हो चुके हैं। बाकी के जिन्दा होने के कोई भी सबूत न मिलने के बाद भी उम्मीद की रोशनी में ब्लैकमेलिंग चल रही है। ऐसा ही हाल बंगलादेश में हिन्दू आबादी के साथ हो रहा है। समूची दुनिया में सिरफिरे अपराधियों ने भीड की शक्ल अख्तियार कर ली है जो लोगों पर अपने पैगम्बर साहब पर टिप्पणी करने, ईश निन्दा करने, कुरान का अपमान करने, इस्लाम की खिलाफियत करने जैसे मनगढन्त आरोप लगाकर सरेआम कत्लेआम मचा रही है। बंगलादेश की सरकार के नुमाइन्दे तो ऐसे लोगों की खुलकर तरफदारी करने, उन्हें पूरे जोरशोर से बचाने तथा जुल्म की घटनाओं को बढावा देने का काम कर रहे हैं।

दूसरी ओर पडोसी की तर्ज पर ही देश के अन्दर मनमानी करने वाले वक्फ बोर्ड ने देश की राजधानी में ही 246 सरकारी सम्पत्तियों पर दावा ठोक दिया है। इस पर तीन मंत्रालयों के अधिकारियों व्दारा संयुक्त समिति के समक्ष वस्तुस्थिति स्पष्ट की तो विपक्षी सदस्यों ने स्पष्टीकरण देने वालों पर ही मनमाने प्रश्नों की बौछार कर दी। इतिहास गवाह है कि ब्रिटिश शासनकाल के दौरान 1911-12 में दिल्ली की नई राजधानी बनाने हेतु भूमि अधिग्रहीत की गई थी जिसे स्वाधीनता के बाद दिल्ली वक्फ बोर्ड ने अधिग्रहीत सम्पत्तियों में से कई को वक्फ सम्मत्ति घोषित कर दी थी। वर्तमान में 108 सम्पत्तियां भूमि एवं विकास कार्यालय तथा 138 सम्पत्तियां दिल्ली विकास प्राधिकरण के पास होने के बाद भी उन पर वक्फ बोर्ड अपना स्वामित्व निरूपित किये है। मालूम हो कि राष्ट्रीय राजधानी के निर्माण हेतु कुल 341 वर्ग किलोमीटर भूमि का अधिग्रहण किया गया था। उससे प्रभावित लोगों को उचित मुआवजे का भुगतान भी किया जा चुका था परन्तु वक्फ बोर्ड अपने असीमित अधिकारों का उपयोग करके निरंतर मनमानियां कर रहा है। कट्टरपंथियों व्दारा फैलाये जाने वाला आतंक जहां देश में अराजकता का वातावरण निर्मित कर रहा है वहीं दुनिया भर में हिजबुल्लाह, हूती, हमास, अलकायदा, आईएसआईएस जैसे संगठन तो निरंतर खूनी होली खेल रहे हैं। तिस पर हथियारों के सौदागरों ने पत्ते पर कुलाट खाने की अपनी आदत में इजाफा करके अब हवा में ही कुलाट खाना शुरू कर दिया है। दो देशों को आपस में लडाना, असुरक्षा का वातावरण निर्मित करना, वैमनुष्यता फैलाना तथा पर्दे के पीछे से विष पौध रोपित जैसे कृत्यों में लिप्त स्वार्थी देशों को केवल और केवल चिन्ता है ।

राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण

पटना, मंगलवार, 10 सितम्बर, 2024

संक्षिप्त खबरें

देसी शराब सहित दो व्यक्ति गिरफ्तार

बगहा। बगहा पुलिस जिला स्थित नौरंगिया थाना पुलिस ने गुप्त सूचना पर कार्यवाई करते हुए छापेमारी में देसी शराब सहित एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है।वहीं एक मद्यनिषेध कांड में फरार चल रहे अभियुक्त को भी गुप्त सूचना पर छापेमारी कर गिरफ्तार किया गया है।थानाध्यक्ष अजय कुमार ने बताया कि बेलहवा वार्ड नं 01 के निवासी बच्चन चौधरी को उसके घर पर छापेमारी के दौरान 10 लीटर चुलाई शराब 100 लीटर कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया गया है।बरामद शराब को उसी स्थान पर विनष्ट कर दिया गया है।वहीं मधनिषेध कांड 58/24 में फरार चल रहे अभियुक्त बेलहवा निवासी पूषा चौधरी को गुप्त सूचना पर गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।थानाध्यक्ष अजय कुमार ने आगे बताया कि एसआई रणजीत सिंह के नेतृत्व में एएसआई धर्मानन्द कुमार,पीएसआई प्रिया कुमारी एवम अन्य कर्मियों की पुलिस टीम ने कार्यवाई को अंजाम दिया है।

ट्रैप कैमरा लगाने का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर लगा

बगहा। वाल्मीकिनगर वन सभागार में वनप्रमण्डल 2 के वनकर्मियों को एक्सपर्ट द्वारा एक दिवसीय ट्रैप कैमरा लगाने का प्रशिक्षण दिया गया। रेंजर राजकुमार पासवान ने बताया कि जंगल की सुरक्षा व जंगल के वन जीवों की सुरक्षा के लिए ट्रैप कैमरा लगाने का वनकर्मियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। ट्रैप कैमरा से बाघों के मूवमेंट और जंगल मे हो रहे गतिविधियों की जानकारी मिल जाती है,इसलिए जरूरी होने पर उक्त स्थल पर कैमरा लगा दिए जाते हैं। कैमरा कहां,कैसे और किस एंगल पर लगाना है यह सब एक्सपर्टों द्वारा प्रशिक्षण के दौरान बताया गया है।वन कर्मियों को एक्सपर्ट प्रशिक्षु आईएफएस स्टालिना फिडेल,बायोलॉजिकल सौरभ वर्मा,डब्लूडब्लूएफ के पर्सनश मर्द्रम ने एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया।

मत्स्य पालक ने रेंजर से लगाई गुहार

बगहा। चंपापुर गोनौली निवासी मत्स्य पालक नंदकिशोर सहनी ने वनप्रमण्डल 2 के रेंजर राजकुमार पासवान से गुहार लगाई है।दरअसल मत्स्य कारोबारी सहनी के चंपापुर स्थित पोखर में मगरमच्छों ने डेरा जमा लिया है।जो तालाब के मछलियों को खाकर भारी नुकसान पहुंचा रहा है। साहनी ने बताया कि धोबहा से सटे त्रिहुत नहर के समीप पोखर में नहर से होते हुए 4 से 5 की संख्या में मगरमच्छ आ घुसा है जो पोखर में पाले जा रहे मछलियों को खा रहा है।रेंजर से हमने अनुरोध किया है कि अपने कर्मियों से पोखर में डेरा जमाए हुए मगरमच्छों का रेस्क्यू करे,ताकि मछली के कारोबार में घाटा नहीं उठाना पड़े। बतादें की नहर के किनारे पोखर में ये मगरमच्छ रेंगते हुए पहुंच जा रहे है।जो बड़े बड़े मछलियों का शिकार कर रहे हैं।जिससे कारोबारी को धंधे में घाटा उठाना पड़ रहा है।

फरार चल रहा वारंटी गिरफ्तार भेजा गया जेल

बगहा। बगहा पुलिस जिला स्थित नौरंगिया थाना पुलिस ने बगहा न्यायालय के 2 डंडा तारिक शमीम टीआर न.232/24 आईएफ 90/05 के आलोक में 54 वर्षीय रामायण चौधरी को गिरफ्तार कर लिया गया।थानाध्यक्ष अजय कुमार ने बताया की गिरफ्तार हुए अभियुक्त की तलाश की जा रही थी इसी दौरान गुप्त सूचना मिली।एसआई राणा रणजीत सिंह ने अपने सहयोगियों के साथ फरार चल रहे अभियुक्त रामायण चौधरी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

वाहन जांच के दौरान पुलिस पब्लिक में हाथापाई

बगहा वाल्मीकिनगर मुख्य सड़क मार्ग एनएच 727 स्थित एसएसबी कैम्प के समीप वाहन जांच के दौरान पुलिस पुब्लिक के बीच झड़प हो गई।सूत्रों की माने तो पुलिस पुब्लिक के बीच हाथापाई और धक्का मुक्की भी हुई है। घटना की सूचना पर कई थानों की पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर मोर्चा संभाल लिया है। पुलिस ने हल्का बल प्रयोग का सहारा भी लिया है। बतादें की बगहा प्रखंड 2 के नयागांव रामपुर के मुखिया पति शेषनाथ बिन पर सरकारी कार्य मे बाधा डालने का आरोप लगाते हुए उन्हें हिरासत ले लिया गया है। बताया जा रहा है कि वाहन जांच के दौरान मुखिया पति पुत्र से पुलिस की कहा सुनी हो गई जिसके बाद मुखिया पति शेषनाथ बिन और उसके समर्थक घटनास्थल पर पहुंच गए और पुलिस के साथ उलझ गए। घटना की सूचना पर कई थानों की पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर मामले को शांत कराने में जूट गई हैं। घटना के कारण कई घंटों तक सड़क पर यातायात बाधित रही।समाचार लिखे जाने तक मामला नियंत्रण में बताई जा रही है।

जीविका को सशक्त बनाने के लिए रुडी ने दिये सांसद निधि से 120 कंप्यूटर

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।ग्रामीण इलाकों में महिलाओं को सशक्त सक्षम और आत्मनिर्भर बनाने वाली जीविका समुह के लिए स्थानीय सांसद सह पूर्व केंद्रीय मंत्री राजीव प्रताप रुडी ने अपनी सांसद निधि से 120 कम्प्यूटर प्रदान किए। इसमें से अकेले सिद्धि जीविका महिला संकुल संघ, नयागाँव और मढ़ौरा के किसान जीविका महिला संकुल संघ को सांसद निधि से 35-35 कंप्यूटर प्रदान किये गये है। इसके अतिरिक्त जीविका के अमनौर, छपरा, गरखा, दरियापुर, दिघवारा, मकेर, मढ़ौरा, नगरा, परसा, रिविलगंज और सोनपुर प्रखंड स्तर के संकुल स्तरीय संघ, सामुदायिक पुस्ताकालय सह कैरियर विकास केंद्र को भी कंप्यूटर प्रदान किये गये है। बता दें कि लोकसभा चुनाव के पहले केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के कार्यक्रम में लाखों जीविका की लाखों महिलाओं ने हिस्सा लिया था। उस समय सांसद ने जीविका को कंप्यूटर देने की बात कही थी। अब

सांसद रुडी ने अपने सांसद कोष से 1 करोड़ 12 लाख 45 हजार के 120 कंप्यूटर प्रदान किये है। इस संदर्भ में सांसद ने बताया कि महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं हैं। महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए कई योजनाएं भी चलायी जा रही है। केंद्र और राज्य सरकार महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। आधी आबादी को लेकर सरकार समर्पित है। इसी कड़ी में जीविका को सांसद निधि से प्रदान किये गये कंप्यूटर भी है। जीविका की कार्य क्षमता कंप्यूटर मिलने से और सुदृढ़ और पारदर्शी होगी। जीविका की महिलाओं को तकनिकी ज्ञान मिले इसके लिए कम्प्यूटर प्रदान किए है। उन्होंने कहा कि कम्प्यूटर शिक्षा आज की महती आवश्यकता है, आज हर काम कम्प्यूटर के बीना संभव नहीं है ऐसे में कम्प्यूटर के माध्यम से जीविका समुह की महिलाएं अपना भविष्य बेहतर तरीके से संवार सकती है।

सांसद श्री रुडी ने बताया कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में जीविका आज देश में एक उदाहरण बनी हुई है। इनको डिजिटल और सशक्त बनाने की दिशा में मेरा यह छोटा सा प्रयास है। कार्यालय में कंप्यूटर सेट आने के बाद कार्य निष्पादन में पारदर्शिता के साथ तेजी आएगी। सभी प्रखंडो के जीविका संकुल स्तरीय संघ कार्यालय में कंप्यूटर सेट प्राप्त होने से सीधे फायदा जीविका के द्वारा कई तरह के रोजगार सम्बन्धी सृजनात्मक सराहनीय कार्य, और हितग्राही मूलक योजनाएं हमेशा चलाई जाती है। यह निर्धन व आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने के लिए हमेशा प्रयास करती रहती है। सांसद श्री रुडी की इस पहल से जीविका महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने के लिए सिलाई प्रशिक्षण के साथ कंप्यूटर का हुनर भी प्राप्त हो सकेगा। विदित हो कि जीविका समूह की शुरूआत साल 2006-07 में हुई थी जीविका समूह, बिहार सरकार की एक पहल है जिसके तहत महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) बनाए जाते हैं। इसका मकसद ग्रामीण गरीबों को सशक्त बनाना है। अब तक लगभग 1 करोड़ 50 लाख जीविका दीदी स्वयं सहायता समूह से जुड़ चुकी है।

गांजा और स्मैक की तस्करी करते युवक गिरफ्तार

प्रात: किरण संवाददाता

दिघवारा नगर।थाना क्षेत्र के मधुकॉन चेक पोस्ट के पास रविवार की रात्रि में वाहन जांच के दौरान गांजा और स्मैक के साथ एक युवक को गिरफ्तार किया गया वहीं एक युवक भाग निकला।गिरफ्तार युवक की पहचान दरियापुर थाना क्षेत्र के अकबरपुर गांव निवासी अशोक साह के पुत्र रवि कुमार के रूप में हुई है वहीं भागने वाले युवक की पहचान दरियापुर थाना क्षेत्र के पट्टीपुल कोठियां निवासी शत्रुध्न सहनी के पुत्र विक्कू कुमार के रूप में हुई है इस संबंध में थानाध्यक्ष रविशंकर कुमार ने बताया कि बीती रात मधुकॉन चेक पोस्ट के पास वाहन जांच की जा रही थी इसी दौरान एक बाइक पर सवार दो लोग पुलिस को देख भागने लगे पुलिस द्वारा पीछा करने पर गाड़ी के पीछे बैठा हुआ व्यक्ति अंधेरे का फायदा उठाकर भाग निकला वही बाइक सवार को पुलिस ने पकड़ लिया तथा उसकी तलाशी ली गई तलाशी के दौरान उस युवक के पास से गांजा की पुड़िया जिसका वजन 175 ग्राम तथा स्मैक की पुड़िया जिसका वजन 10 ग्राम था बरामद की गई। पुलिस ने युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

सुप्रसिद्ध बाल गायक को मिला स्केल चेंजर हारमोनियम का उपहार

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। पटना के होटल ऑरिगेनो रिजॉर्ट में आयोजित एक निजी कार्यक्रम ए भी आर होटल (जगदेव पथ) के ऑनर स्व ब्रम्हा सिंह के सुपुत्र श्सूर्यभुषण सिंह कि नातिन के जन्मोत्सव पर रौनक रतन कि गायकी से प्रभावित होकर श्री सिंह ने स्केल चेंजर हारमोनियम देने का वादा किया और दूसरे हीं दिन रौनक रतन के घर छपरा ताजपुर पहुंच के उनके पसंद कि दुकान जनता बाजार मनोज के यहां जो विशेष बाजा रतन के लिए कलकत्ता से मंगवाया गया था उन्हीं के पसन्द से ये उपहार रूपी आशीर्वाद प्रदान किया। रौनक रतन कि गायन प्रतिभा से प्रभावित पहले भी कई गणमान्य महानुभावों ने रतन को कई स्टूमेंट गिफ्ट किए हैं जैसे एमएलसी ई नसच्चिदानन्द रॉय जी द्वारा लेटेस्ट ऑर्गन एक्स पी एस थर्टी, ताजपुर पूर्व मुखिया श्री विजय सिंह जी के द्वारा गिटार और विश्वनाथ मिश्र (थल सेना सूबेदार) के द्वारा तबला उपहार और प्रोत्साहन के रूप में मिल चुका है।

महापौर के तय एजेंडे में नगर आयुक्त द्वारा छेड़ छाड़ को ले 10 को होने वाली बैठक स्थगित

प्रात: किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)। नगर निगम बोर्ड की 10 सितंबर को आहूत बैठक के एजेंडे में नगर आयुक्त द्वारा छेड़ छाड़ को लेकर महापौर गरिमा देवी सिकारिया के स्तर से उक्त बैठक स्थगित कर दिया है। महापौर द्वारा नगर आयुक्त को लिखे संबंधित पत्र में कहा है कि उनके द्वारा निर्धारित एजेंडे में नगर आयुक्त शंभू कुमार द्वारा एक बार फिर से अनाधिकार छेड़ छाड़ कर के उनके द्वारा निर्धारित चार एजेंडों में नियम के विरुद्ध अपने स्तर से बड़ी खरीदारी एवं नई एजेंसी चयन आदि का छह एजेंडा और जोड़ दिया गया है। इसके कारण नगर निगम बोर्ड की उक्त बैठक को स्थगित करते हुए महापौर के द्वारा पूर्व निर्धारित सिर्फ चार एजेंडे पर ही आगामी 23 सितंबर को नगर निगम बोर्ड की बैठक आहूत करने की कार्रवाई का निर्देश दिया है। अपने उक्त पत्र की प्रति नगर विकास एवम आवास विभाग के प्रधान सचिव से लेकर जिलाधिकारी तक को नगर आयुक्त के स्तर से संबंधित स्वेच्छाचारिता का विस्तार से वर्णन किया है। महापौर श्रीमती सिकारिया ने अपने पत्र में लिखा है कि - बड़ी खेद के स्पष्ट करना है कि आपकी स्वेच्छाचारिता के कारण बेतिया नगर निगम के बोर्ड की बैठकों का विधि सम्मत व्यवस्था के तहत आयोजन और संचालन नहीं हो पा रहा है। इसका उदाहरण देकर उन्होंने नगर आयुक्त को लिखा है कि आप अवगत हैं कि विगत 20 जुलाई 2024 को अधोहस्ताक्षरी द्वारा निर्देशित नगर निगम बोर्ड की बैठक आपकी असमर्थता जताने के कारण नहीं हो सकी। पुनः 13 अगस्त को निर्धारित बैठक आपके द्वारा अनाधिकार एजेंडा बढ़ा दिए जाने के कारण बोर्ड में निर्णय के आलोक में उक्त बैठक को स्थगित करना पड़ा और उसी बोर्ड की बैठक में ही लिए गए निर्णय के आलोक में अधोहस्ताक्षरी द्वारा पूर्व से निर्धारित चार एजेंडे पर ही बैठक करने हेतु पुनः17 अगस्त को निर्धारित बैठक आहूत करने में आपने असमर्थता जताते हुए बैठक आहूत नहीं होने दिया। इसके बाद अधोहस्ताक्षरी के द्वारा पुनः उन्ही चार एजेंडों पर 10 सितंबर को बैठक बुलाने के लिए पत्र दिया गया। उक्त बैठक के लिए आपके स्तर से शनिवार दिनांक 7 सितंबर को प्राप्त पत्र में अपने स्तर से बड़ी खरीदारी, नई एजेंसी चयन आदि का छह एजेंडों को पुनः जोड़ कर स्वेच्छाचारिता की प्रकाष्ठा पार करने का कार्य किया गया है। जबकि बिहार नगर पालिका अधिनियम 2007 के 27अ(4) में स्पष्ट उल्लेख है कि महापौर/मुख्य पार्षद के निर्देशन में ही बैठक के लिए विचारणीय विषय तैयार किये जाएगें। इसको लेकर महापौर ने लिखा है कि पुनः निर्देशित किया है कि अधोहस्ताक्षरी द्वारा पूर्व से निर्धारित चार एजेंडे पर ही नगर निगम बोर्ड की सामान्य बैठक आगामी 23 सितम्बर नगर निगम बोर्ड की आहूत करने की विहित प्रक्रिया पूरी करने का निर्देश दिया है।

वन विभाग और भारतीय थारू कल्याण महासंघ व जटाशंकर मठ समिति के बीच वार्ता संपन्न

प्रात: किरण संवाददाता

बगहा। वाल्मीकिनगर स्थित वीटीआर वन सभागार में भारतीय थारू महासंघ और जटाशंकर मठ समिति के साथ वन विभाग के अधिकारियों की रविवार को बैठक हुई।जिसमें कई मुद्दों पर पर विचार विमर्श किया गया।साथ ही बिचार विमर्श के पश्चात कई मुद्दों पर सहमति बनी।बतादें की वीटीआर जंगल के बीच पौराणिक मान्यता प्राप्त आस्था का केंद्र मंदिर जटाशंकर है जो एक मठ भी है।इस मठ के अंतर्गत कई और भी मंदिर है।साथ ही मठ का अपना लैंड भी है। इधर वन विभाग चाहता है कि मंदिर अपने सीमित जगह में अपने संसाधन का उपयोग करे। ताकि वह संपदा को सुरक्षित रखा जा सके। रेंजर राजकुमार पासवान ने बताया कि जटाशंकर मंदिर के आसपास पूर्व से चयनित जगह पर सोलर लाइट लगाए जाएगा।साथ में जटाशंकर मठ के पशुओं की संख्या को समिति सीमित करें। बतादूँ की जटाशंकर मंदिर और कौलेश्वर मन्दिर को श्रद्धालुओं के द्वारा दान में दिए गए गाय बैलों की संख्या दर्जनों में है।जो जंगल के बीच खुले में विचरण करते है। ईडीसी अध्यक्ष राजेश काजी ने बताया भारतीय थारू महासंघ समिति के प्रतिनिधि के साथ वन विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक में फिलहाल जटाशंकर मंदिर के आसपास समरकेवल और सोलर लाइट लगाने पर सहमति बनी है। इस बैठक में प्रशिक्षु आईएफएस स्टालिन फिडेल,रेंजर राजकुमार पासवान,वनपाल आशीष कुमार, बायोलॉजिकल सौरभ वर्मा,पशु चिकित्सक मनोज कुमार डब्लूडब्लूएफ के प्रशस मर्द्रम,वनरक्षी सुनील कुमार व ओमप्रकाश कुमार,भारतीय थारू कल्याण महासंघ के अध्यक्ष महेश्वर काजी,सचिव रविन्द्र प्रसाद,समाजसेवी कृष्णमोहन खतैइत,जिला परिषद शेषनाथ चौधरी,ईडीसी अध्यक्ष राजेश काजी समेत बड़ी संख्या में थारू जनजाति के प्रतिनिधि शामिल हुए।

शिवकुमारी सिंह आईटीआई में छात्रों के बीच बैग का वितरण

प्रात: किरण संवाददाता

माँझी सारण माँझी प्रखंड के चकिया में चल रहे शिव कुमारी सिंह आईटीआई में सोमवार को सत्र 2024-26 के छात्रों के बीच निःशुल्क स्कूली बैग का वितरण किया गया। कालेज के डायरेक्टर पृथ्वीराज सिंह ने एक सभा का आयोजन कर बच्चों के बीच बैग वितरण किया। इस अवसर पर पृथ्वीराज सिंह ने कहा कि शिवकुमारी सिंह आईटीआई में बच्चों को दी जा रही तकनीकी शिक्षा के बदौलत इसका नाम सारण जिला सहित पूरे बिहार में प्रसिद्ध है। यहां देश के मशहूर कम्पनी प्रतिवर्ष हमारेआईटीआई परिसर में कैम्प लगा कर कैम्पस सेलेक्शन करती हैं जिसके द्वारा हमारे आईटीआई के सैकड़ो छात्र आज नौकरी कर रहे हैं। उन्होंने कहा की नये सत्र में प्रतिवर्ष निःशुल्क बैग वितरण छात्रों के बीच होता है। मौके पर प्रिंसिपल अनिसुर रहमान शमी , तथा मुख्य अनुदेशक बड़ी संख्या में अभिभावक मौजूद रहे।

कविवर कन्हैया के जन्मशती वर्ष पर इप्टा की ऐतिहासिक श्रद्धांजलि होगी

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। कविवर कन्हैया जन्मशती वर्ष पर 15- 17 सितम्बर को रामजंगल सिंह कॉलेज, छपरा में बिहार इप्टा द्वारा आयोजित कविवर कन्हैया जन्मशती समारोह के आयोजन समिति की अशोक कुमार सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की गयी और आवश्यक सुझाव दिए गये। बैठक में राष्ट्रीय महासचिव तनवीर अख्तर बतौर पर्यवेक्षक मौजूद रहे। उक्त बैठक में निर्णय लिया गया कि समारोह के अंतिम दिन 17 सितम्बर को सुबह 9 बजे से इप्टाकर्मियों द्वारा कविवर कन्हैया की जन्मस्थली दिघवारा के मानोपुर की सांस्कृतिक यात्रा को भव्य और यादगार स्वरुप प्रदान किया जाएगा। दो सौ से ज्यादा इप्टा कर्मियों का दल राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध विचारको, साहित्यकारों, रंगकर्मियों के नेतृत्व में कविवर कन्हैया के गाँव में जनसंवाद करेगा, उनके करीब आधा दर्जन क्रांतिकारी कविताओं गीतों कीमत प्रस्तुति की जाएगी।

प्रखंड मुख्यालय पर जुट रही है जमीन सुधार की जानकारी लेने वालों की भीड़

प्रात: किरण संवाददाता

माँझी। बिहार में जमीन बंदोबस्ती कानून 2024 से लागू होने के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के बीच अपनी जमीन के कागजात जुटाने को लेकर ऊहापोह की स्थिति बन गई है। लोगों को अपनी जमीन के कागजात की सही जानकारी नही होने के कारण प्रखंड के अंचल कार्यालय के डाटा सेंटर कार्यालय का चक्कर काटना पड़ रहा है। डाटा सेंटर कार्यालय में प्रतिदिन सैकड़ों लोगों की भीड़ उमड़ रही है। भोले-भाले ग्रामीण सुबह से ही पंचायत के कर्मचारियों अथवा अमीन के पीछे पीछे उचित मार्गदर्शन के लिये घूमते नजर आ रहे हैं। जमीन से जुड़े तकनीकी जानकार लोगों की आजकल चांदी कट रही हैं। वहीं दूर दराज के पंचायतों से अंचल कार्यालय पहुँचे लोगों ने बताया पंचायत के मुखिया सरपंच के पास जाने पर संतोषजनक मार्गदर्शन नही मिलता है। अगर पंचायत में कर्मचारियों के साथ अमीन प्रतिदिन बैठते तो सभी प्रकार की जानकारी पंचायत में ही मिल जाती। प्रखंड मुख्यालय का चक्कर लगाना नही पड़ता। बताते चलें कि राज्य सरकार की स्पष्ट गाईड लाइन है ।

हेल्थ एंड वेलनेस सेंटरों पर विकसित होगा टीकाकरण कॉर्नर, मिलेगी गुणवत्तापूर्ण टीकाकरण की सुविधाएं

- 15 सितंबर को स्वास्थ्य मंत्री करेंगे उद्घाटन

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा। राज्य सरकार ने टीकाकरण कार्यक्रम को मजबूत बनाने के लिए बड़ा कदम उठाया है। नियमित टीकाकरण कार्यक्रम के सुदृढीकरण के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सभी जिलों के प्रत्येक प्रखंड के दो-दो हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर इम्यूनाइजेशन कॉर्नर विकसित किया जायेगा। इसको लेकर जिला स्तर पर तैयारी शुरू कर दी गयी। जिले के प्रत्येक प्रखंड के दो-दो हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर को चिन्हित किया गया है जहां टीकाकरण कार्नर खोला जायेगा।जहां पर सप्ताह में तीन दिन (सोमवार, मंगलवार व गुरुवार) को शून्य से पांच साल तक के बच्चों के साथ साथ गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण किया जाएगा।

सरकार ने फिलहाल पायलट प्रोजेक्ट के तहत इसे शुरू किया है। यदि, टीकाकरण कॉर्नर के माध्यम से संबंधित पंचायतों के लाभुकों को शत-प्रतिशत टीकाकृत किया जाता है तो इसे जिले के सभी हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर में संचालित किया जाएगा।

15 सितंबर को स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय के द्वारा वर्चुअल मोड टीकाकरण कॉर्नर का उद्घाटन किया जायेगा। पूर्ण टीकाकरण के लक्ष्य को हासिल करने के लिए विभाग की पहल : सिविल सर्जन डॉ सागर दुलाल सिन्हा ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य पूर्ण टीकाकरण के 95 प्रतिशत आच्छादन लक्ष्य की प्राप्ति करना है। सरकार ने कहा है कि यह कदम टीकाकरण कार्यक्रम को मजबूत बनाने और गुणवत्तापूर्ण टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए उठाया गया है। इस पहल से टीकाकरण कार्यक्रम को और मजबूत बनाने में मदद मिलेगी और लोगों को गुणवत्तापूर्ण टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध होगी। यह पहल राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए उठाए जा रहे कदमों का हिस्सा है।

दो दिवसीय डाक टिकट प्रदर्शनी हुआ संपन्न, प्रतिभागी छात्र -छात्राएं हुए पुरस्कृत

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा ' डाक टिकट प्रदर्शनी के अंतिम दिन चिराँद पर विशेष आवरण का विमोचन गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया' बता दें कि चिराँद बिहार के सारण जिले में पवित्र नदी सरयू (जिसे घाघरा नदी भी कहा जाता है) के तट पर स्थित एक पुरातात्विक महत्वपूर्ण स्थल है भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण टीम द्वारा इस जगह की खुदाई से पता चला कि नवपाषाण युगीन संस्कृति पूरे भारत मे सर्वप्रथम यही प्रकट हुई थी। चिराँद में एक बड़ा पूर्व ऐतिहासिक टीला है,जो नवपाषाण यूग लगभग 2500-1345 ईसा पूर्व से पाल राजवंश तक के पुरातात्विक अवशेष के लिए प्रसिद्ध है ' इस अवसर पर पवन कुमार निदेशक डाक सेवा बिहार सर्कल पटना, डा.प्रमेन्द्र कुमार वाजपेयी कुलपति जयप्रकाश विश्वविद्यालय छपरा, पुनीत कुमार गर्ग जिला एवं सत्र नयायधीश छपरा द्वारा संबोधित करते हुए ऐतिहासिक पुरातत्व चिरांद एवं फिलाटेली के महत्वों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला ' भिखारी ठाकुर सभागार सह प्रेक्षा गृह में चल रहे दो दिवसीय डाक टिकट प्रदर्शनी के समापन के अवसर पर जिले के लगभग 10 विद्यालयों के 450 से अधिक विभिन्न आयु वर्ग के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न तरह की प्रतियोगितायें आयोजित की गई ' जिसमें टिकट डिजाइन, क्विज,निबंध एवं भाषण प्रतियोगिता शामिल है ' प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन करने वाले मेधावी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया गया। जबकि समारोह में प्रवर डाक अधीक्षक द्वारा मुख्य अतिथि एवं आगंतुक अतिथियों को मोमेंटों भेट किया गया

मृत्यु भोज अंधविश्वास और पाखंड : बुद्ध प्रकाश

प्रात: किरण संवाददाता

मांझी। भारतीय संविधान के अधिनियम 1960 के तहत मृत्यु भोज कानूनी अपराध है। यह अंधविश्वास और पाखंड है जो देश में गरीबी भुखमरी का कारण है। यदि मृत्यु भोज को बंद कर दिया जाए तो देश की गरीबी,भुखमरी एवम बेरोजगारी खत्म हो जाएगी। उक्त बातें अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व सदस्य सह साइंस फॉर सोसायटी पटना के भंते बुद्ध प्रकाश ने कही। श्री भंते बुद्ध प्रकाश सोमवार को मांझी प्रखंड के ताजपुर गांव में वीर बहादुर मांझी की माता के परिनिर्वाण निवारण दिवस के अवसर पर आयोजित शोक सभा को सम्बोधित करते हुए कही। इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने भाग लिया और पाखंड का जोरदार विरोध किया। भंते बुद्ध प्रकाश ने कहा की बड़े लोग माध्यम वर्गीय लोगों का श्राद्ध कर्म कराते हैं। लेकिन गरीब मजदूर लोग श्राद्ध के बोझ से दबे होने के कारण अपने बच्चों को शिक्षित नहीं कर पाते हैं। भंते ने कहा कि आदमी जब मर जाता है तो इसे जला दिया जाता है अथवा दफना दिया जाता है। अंतिम संस्कार वहीं पर खत्म हो जाता है। लेकिन ढोंगी व पाखंडियों के द्वारा श्राद्ध के नाम पर डर फैला कर गाय दान,पलंग दान आदि अंधविश्वास फैलाया जाता है। आदमी जब मर जाता है तो उसे जलाने अथवा दफना देने के बाद भौतिक शरीर पंचतत्व में विलीन हो जाता है इसके बाद कोई क्रिया कर्म की जरूरत नहीं है। भंते बुद्ध प्रकाश ने कहा कि अंधविश्वास भगाओ देश बजाओ जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है। अन्यथा इन पाखंडियों के चलते गरीब व मजबूर लोग एक तो मौत से दुखी रहने के अलावा कर्ज के बोझ से दब जाते हैं। इस मौके पर दर्जनों गणमान्य लोग शामिल हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता लक्ष्मण माँझी ने किया।

इसुआपुर के प्रभारी बीडीओ बने पंकज कुमार

इसुआपुर । प्रखंड के नए बीडीओ के रूप में मशरक प्रखंड में कार्यरत बीडीओ पंकज कुमार ने इसुआपुर प्रखंड के बीडीओ के रुप में अतिरिक्त प्रभार लिया । मालूम हो कि इसुआपुर प्रखंड कार्यालय में कार्यरत बीडीओ संतोष कुमार मिश्रा का विभागीय अपग्रेडेशन के साथ स्थानांतरण हो गया था। जिसके बाद उन्होंने विगत 12 जुलाई को इसुआपुर प्रखंड में कार्यरत राजस्व पदाधिकारी पूजा रॉय को बीडीओ का प्रभार दिया । हालांकि उन्हें कानूनी पेंच के चलते वित्तीय प्रहार नहीं मिला था। जिससे प्रखंड के विकास का कार्य बाधित हो रहा था। जिसको लेकर बिहार प्रशासनिक सेवा के पदाधिकारी इसुआपुर अंचल में कार्यरत सीओ करुण करण को यह पद प्रभार के रूप में मिला।

प्रखंड मुख्यालय पर जुट रही है जमीन सुधार की जानकारीलेनेवालोंकीभीड़

प्रात: किरण संवाददाता

माँझी। बिहार में जमीन बंदोबस्ती कानून 2024 से लागू होने के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के बीच अपनी जमीन के कागजात जुटाने को लेकर ऊहापोह की स्थिति बन गई है। लोगों को अपनी जमीन के कागजात की सही जानकारी नही होने के कारण प्रखंड के अंचल कार्यालय के डाटा सेंटर कार्यालय का चक्कर काटना पड़ रहा है। डाटा सेंटर कार्यालय में प्रतिदिन सैकड़ों लोगों की भीड़ उमड़ रही है। भोले-भाले ग्रामीण सुबह से ही पंचायत के कर्मचारियों अथवा अमीन के पीछे पीछे उचित मार्गदर्शन के लिये घूमते नजर आ रहे हैं। जमीन से जुड़े तकनीकी जानकार लोगों की आजकल चांदी कट रही हैं। वहीं दूर दराज के पंचायतों से अंचल कार्यालय पहुँचे लोगों ने बताया पंचायत के मुखिया सरपंच के पास जाने पर संतोषजनक मार्गदर्शन नही मिलता है। अगर पंचायत में कर्मचारियों के साथ अमीन प्रतिदिन बैठते तो सभी प्रकार की जानकारी पंचायत में ही मिल जाती।

मोबाइल पशु चिकित्सा वैन को डीएम ने दिखाई हरी झंडी

प्रात: किरण संवाददाता

रक्सौल। पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के तत्वावधान में मुख्यमंत्री द्वारा मोबाइल पशु चिकित्सा वैन एवं कॉल सेंटर का लोकार्पण पटना में आयोजित समारोह में किया गया। पूर्वी चम्पारण जिला हेतु सभी प्रखंडों के मोबाइल पशु चिकित्सा वैन को जिलाधिकारी सौरव जोरवाल ने समाहरणालय परिसर से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। जिलान्तर्गत प्रत्येक प्रखंड हेतु एक-एक मोबाइल पशु चिकित्सा वैन उपलब्ध कराया गया है। इस मोबाइल पशु चिकित्सा वैन के माध्यम से सम्बंधित प्रखंड में रोस्टर के अनुसार प्रतिदिन दो गाँवो में पशु चिकित्सा शिविर आयोजित कर पशुओ का उपचार किया जायेगा। पशुपालक द्वारा अपने पशुओ की पशु चिकित्सा हेतु विभाग के टोल फ्री नंबर 1962 पर संपर्क कर सुविधा का लाभ लिया जा सकता है। कार्यक्रम में डॉ. विनोद कुमार, जिला पशुपालन पदाधिकारी पदाधिकारी,डॉ अतुल कुमार श्रीवास्तव, पशु शल्य चिकित्सक मोतिहारी सहित प्रखंड पशु चिकित्सा पदाधिकारी एवं पशुपालन शाखा के कर्मीगण उपस्थित थे।

सभी स्वास्थ्य केंद्रों पर हुई गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की जाँच

प्रात: किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)।पश्चिमी चंपारण जिले के बगहा 02, हरनाटांड, मधुबनी, सिकटा, मैनाटांड, नौतन, ठाकरहाँ, पिपरासी समेत कई अन्य स्वास्थ्य केंद्रों पर सोमवार को गर्भवती व अन्य महिलाएँ स्वास्थ्य जाँच कराने को उमड़ पड़ी। बगहा 02 शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भी महिलाओं की काफी भीड़ देखी गईं है। यहाँ 150 से ज्यादा गर्भवती महिलाओं की एएनसी जाँच की गयी। इस दौरान डॉ सरिता कुमारी, डॉ राजेंद्र, डॉ रविंद्र कुमार, एएनएम संगीता कुमारी, रंजू, निर्मला द्वारा गर्भवती महिलाओं की जाँच के दौरान उनका वजन, बीपी, एचआईवी, ब्लड शुगर, एफएचएस, बच्चे के दिल की धड़कन व अन्य शारीरिक जाँच की गयी। उन्हें आयरन, कैल्शियम व अन्य दवाएं निःशुल्क उपलब्ध कराई गई। प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ राजेश कुमार सिंह ने बताया कि सोमवार को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व योजना के तहत गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य जांच के साथ ही धात्री महिलाओं की भी जाँच की गई। ये विशेष जाँच महीने में 09 एवं 21 तारीख को स्वास्थ्य केंद्रों पर किया जाता है। इस दौरान उन्हें सुरक्षित गर्भवस्था हेतु आवश्यक बातें बताई जाती है। संतुलित भोजन, साफ-सफाई के साथ अपनी सेहत का पूरा ख्याल रखने के बारे में जागरूक किया जाता है।

संक्षिप्त खबरें

बालिका विद्यालय में पुनर्वास केंद्र का उद्घाटन

आरा। राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नवादा आरा के परिसर में सामाजिक दायित्व के अंतर्गत उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक द्वारा निर्मित संसाधन एवम पुनर्वास केंद्र का उद्घाटन सदर अस्पताल आरा के उपाधीक्षक डॉक्टर अरुण कुमार प्रधानाध्यापिका अनुपमा कुमारी एवम ई अविनाश मेमोरियल फाउंडेशन के सचिव नीलेश्वर उपाध्याय ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इस अवसर पर डॉक्टर अरुण ने कहा कि उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक द्वारा सामाजिक दायित्व के अंतर्गत संसाधन एवम पुनर्वास केंद्र का स्कूल के परिसर में निर्माण बहुत ही सराहनीय कार्य है।इस केंद्र की स्थापना से अल्प विकसित बच्चों को विकसित करने में यह पुनर्वास केंद्र मिल का पत्थर साबित होगा वही ये बच्चे आगे चलकर समाज में भी अपना योगदान दे सकेंगे। प्रधानाध्यापिका अनुपमा कुमारी और नीलेश्वर उपाध्याय ने भी बैंक के इस कदम की सराहना करते हुए कहा कि इस पुनर्वास केंद्र के माध्यम से कक्षा 1 से 12 तक के अल्पविकसित बच्चो के पुनर्वासन में काफी सहूलियत होगी।इस अवसर पर उपस्थित प्रमुख लोगों में उज्जीवन बैंक आरा के मैनेजर विनीत कुमार एरिया मैनेजर मनीष कुमार सी आर एम अभय कुमार, विद्यालय परिवार के शोभा गुप्ता, विना कुमारी, अनिता सिन्हा, सुधीर कुमार, रामप्रकाश सिंह, आशुतोष कुमार उपस्थित थे।

भाजपा द्वारा सदस्यता अभियान के तहत मोर्चो का होगा संयुक्त बेठक

आरा। भारतीय जनता पार्टी भोजपुर द्वारा सभी बूथ स्तर तक सदस्यता अभियान को जोर-शोर से चलाया जा रहा है। सदस्यता अभियान को सफल बनाने और लक्ष्य को पूर्ण करने हेतु लगातार विभिन्न बैठके हो रही ही। उसी मिशन के तहत दस सितम्वर को भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय मे युवा, किसान, पिछड़ा/अतिपिछड़ा, महिला, अनुसूचित जाति और अल्पसंख्यक मोर्चो का संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया। जिसकी तैयारी को लेकर जिलाध्यक्ष दुर्गा राज द्वारा सोमवार को तैयारी समीक्षा की बैठक की गई। जिलाध्यक्ष द्वारा बताया गया कि भाजपा द्वारा राष्ट्रव्यापी सदस्यता अभियान मे पार्टी के सभी मोर्चो का विशेष महत्व है। भोजपुर जिला भाजपा मोर्चा प्रभारी की जिम्मेदारी जिला उपाध्यक्ष ई. धीरेंद्र धीरेन्द्र सिंह को दिया गया है। कल संयुक्त मोर्चा बैठक मे प्रदेश के वरीय उपाध्यक्ष राजेन्द्र सिंह, प्रदेश महामंत्री शिवेश राम सहित अन्य नेतागण शामिल होंगे।

पूर्व के अपहरण के मामले में दो की हुई गिरफ्तारी

दावथ (रोहतास) शादी की नीयत से बहला फुसला कर लड़के को भगा ले जाने के आरोप में रविवार को दो लोगों को गिरफ्तार किया गया। बताया जा रहा है कि लड़का नाबालिग होने के कारण अवैध तरीके से भगाकर/अपहरण कर शादी कराने के मामले में गिरफ्तारी हुई है। इस मामले में लड़के वाले ने लड़की एवं उसके परिवार वालों पर शादी की नियत से बहला फुसलाकर भगा कर ले जाने का मामला दर्ज किया गया था।

मोथा विद्यालय के किचन का दरवाजा तोड़ समान की चोरी

काराकाट (रोहतास): काराकाट थाना क्षेत्र के मोथा गांव के उत्क्रमित कन्या उच्च विद्यालय में चोरी का मामला प्रकाश में आया है। स्कूल के प्रधानाध्यापक नौशाद खान ने थाना में अज्ञात चोरों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराया। बताया गया कि कन्या उच्च विद्यालय के स्कूल के किचेन रूम का दरवाजा तोड़ कर खाना बनाने का बर्तन सहित कई समान की चोरी कर ली गई है। बताया कि शनिवार को स्कूल बंद कर घर चले गये। रविवार को छुट्टी था, सोमवार को जब स्कूल पहुंचे तो किचेन रूम का दरवाजा टूटा हुआ था। किचेन रूम में रखा सभी सामान गायब था। गौरतलब हो कि वर्ष 2021 के बाद इस विद्यालय में नौ बार चोरी की जा चुकी है। 15 अप्रैल 2024 को स्कूल के कम्प्यूटर रूम का ताला तोड़कर कम्प्यूटर व कम्यूटर का सभी सामान, गीत संगीत का सारा सामान की चोरी की गई थी। अभिभावकों ने नाइट गार्ड की बहाली करने की मांग की है।

सासाराम में काफी मात्रा में अवैध शराब जब्त

सासाराम (रोहतास): रोहतास जिले अवैध शराब का करोबा का धंधा रुकने का नाम नहीं ले रहा है। सोमवार को भी सासाराम में भारी मात्रा में शराब बरामद किया गया। जानकारी के अनुसार सासाराम के दरिगांव थाना क्षेत्र के फोरलेन स्थित हुंडई शो रूम नजदीक एक गोदाम मे रखे काफी मात्रा में शराब बरामद किया गया है। गुप्त सूचना के आधार पर सासाराम अंचलाधिकारी के नेतृत्व में यह छापेमारी कर शराब बरामद किया गया है। इसकी जानकारी देते हुए अंचलाधिकारी ने बताया कि फोरलेन के नजदीक एक गोदाम में अवैध शराब स्टोर किया गया है।

पशुपालकों के द्वार पर अब पशु चिकित्सा होंगे उपलब्ध : उप विकास आयुक्त

प्रात: किरण संवाददाता

सासाराम (रोहतास)। पशुपालकों के द्वार परपशु चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु जिले के सभी 19 प्रखंडो में मोबाईल पशु चिकित्सा इकाई उपलब्ध कराया जाना है। जिले को अभीतक 09 मोबाईल पशु चिकित्सा इकाई उपलब्ध करायी गयी है। इसका शुभारम्भ उप विकास आयुक्त, रोहतास, सासाराम के द्वारा समाहरणालय, परिसर रोहतास में हरी झंडी दिखाकर किया गया। इस अवसर पर जिला पशुपालन पदाधिकारी, रोहतास डॉ राजेश कुमार चौबे, भ्रमणशील पशु चिकित्सा पदाधिकारी (चलन्त) डॉ प्रदीप कुमार निराला, सहायक कुक्कुट पदाधिकारी डॉ. सुनील कुमार बैठा एवं अन्य पदाधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। इस अवसर पर जिला पशुपालन पदाधिकारी, रोहतास डा० राजेश कुमार चौबे ने बताया की बिहार के पशु चिकित्सा इतिहास में यह एक ऐतिहासिक कदम है। पशुपालक टॉल फ्री नम्बर 1962 पर कॉल कर पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना में स्थापित कॉल सेन्टर से सम्पर्क कर अपने द्वार पर पशु चिकित्सा का लाभ उठा सकते है। कॉल सेन्टर के द्वारा संबंधित मोबाईल भेटनरी यूनिट को संबंधित पशुपालक को उनके द्वार पर पशु चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु निर्देशित किया जायेगा। मोबाईल भेटनरी यूनिट में एक पशु चिकित्सक एक पशु चिकित्सा सहायक तथा एक ड्राईवर सह परिचारी की व्यवस्था की गयी है। इसका परिचालन प्रत्येक कार्य दिवसों में सुबह 09 बजे से शाम 05 बजे तक किया जायेगा। प्रतिदिन 02 गाँवों में पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जायेगा साथ ही विभागीय योजनाओं की जानकारी दी जायेगी। रविवारीय एवं राजपत्रित अवकाश के दिनों में इसका परिचालन नहीं किया जायेगा। मोबाईल भेटनरी यूनिट के सौजन्य से दूरस्थ ईलाकों में वैसे पशु जो चलने-फिरने में अस्मर्थ है या काफी कमजोर है, की चिकित्सा हो पायेगी। जिनकों अस्पताल तक. लाने में काफी कठिनाईयों को सामना करना पड़ता है। इससे पशुपालकों को समय की बचत एवं ईलाज के व्यय में कमी आयेगी। जिससे की उत्पादकता में वृद्धि होगी।

आरा शहर में जाम से लोग होते हैं हर दिन परेशान

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। शहर में लगा महाजाम मठिया महावीर टोला महादेवा रोड सभी जगह देखने को मिला जाम ही जाम।

प्रशासन को भी जाम का सामना करना पड़ा। एंबुलेंस काफी देर से अपनी माइक से घोषणा भी कर रहा था, कृपया रास्ता को क्लियर कराया जाए मरीज को सदर अस्पताल लेकर जाना है। कोई भी ट्रॉफी पुलिस के जवान एंबुलेंस के पास जाम हटाने के लिए नहीं आया। उसी दरमियान नो एंट्री में एक ट्रैक्टर घुस गया वहीं लोगों कहना है कि आरा शहर का यातायात पूरी तरह तरफ फेल है। हर दिन सुबह 8 बजे से रात को 8 बजे तक महाजाम लगा रहता है। स्कूल के बच्चे भी बस में काफी देर से जाम फंसे हुए रहते है। किसी को सदर अस्पताल जाना था बच्चे अपने घर जाने का भी इंतजार कर रहे थे कब जाम मुक्ति मिले घर पहुंचे।

आरा में रक्तदान शिविर का आयोजन

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। जिले के आरा शहर के शांति मेमोरियल अस्पताल में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। अस्पताल के तत्वाधान में संचालित शांति मेमोरियल ब्लड बैंक में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अमर शहीद लाला जगत नारायण के 43वी पुण्यतिथि पर आयोजित इस कार्यक्रम में एक दर्जन से अधिक युवा समाजसेवी व्यवसायी और पत्रकारों ने अपना रक्तदान किया। इस मौके पर सम्बोधित करते हुए डॉ विकास ने कहा कि रक्तदान से बड़ा कोई दान नही है। एक स्वस्थ इंसान को रक्तदान जरूर करना चाहिए। उन्होंने बताया कि जिले का पहला ब्लड बैंक शांति मेमोरियल अस्पताल में संचालित किया जा रहा है जहां 24 घण्टे होल ब्लड, पीआरबीसी, प्लेटलेट्स, प्लाज्मा समेत अन्य सुविधाएं मौजूद रहेगी। वही इस कार्यक्रम के संयोजक और जिला संवाददाता राकेश राजपूत ने बताया कि ऐसे कार्यक्रमों से समाज मे एक बेहतर संदेश मिलता है। जबतक हमलोग रक्तदान नही करेंगे जरूरत पड़ने पर किसी जरूरतमन्द को रक्त कैसे उपलब्ध होगा। समय समय पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन होते रहना चाहिए। मौके पर मो वसीम, रवि, बिट्टू गुप्ता, विकास कुमार, आलोक भारती, दीपक गुप्ता समेत दर्जनों रक्तदाता मौजूद रहे।

भगवान बलभद्र की जयंती समारोह मनाया गया

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। भगवान बलभद्र की जयंती समारोह धूमधाम से मनाया गया सबसे पहले बलभद्र भगवान का पूजा अर्चना की गई उसके बाद झंडा तोलन किया गया इस बलभद्र पूजा में पूर्व सांसद मीना सिंह आरा नगर निगम की मेयर इंदु देवी आरा नगर विधायक अमरेंद्र प्रताप सिंह ब्याहुत कलवार सेवा संघ के अध्यक्ष जितेंद्र प्रसाद ब्याहुत की अध्यक्षता सभी आए हुए मुख्य अतिथियों को मोमेंटो एवं अंग वस्त्र से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री, मंत्री, सांसद, पूर्व सांसद, विधायक, एमएलसी, मेयर शामिल हुए जिन्हें समाज के द्वारा सम्मानित भी किया गया इतना ही नहीं भगवान बलभद्र जी की पूजा अर्चना के बाद बड़ी संख्या में समाज के जो बच्चे प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए व देश प्रदेश में जो बच्चे सरकारी, अर्धसरकारी व निजी संस्थानों में अपने समाज का परचम लहरा रहे हैं साथ ही जो बच्चे स्पोर्ट्स में मेडल प्राप्त कर चुके हैं उन्हें भी मेडल, प्रशस्ति पत्र, मोमेंटो एवं अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया इतना ही नहीं चयनित गरीब मेधावी बच्चों को पूरे कोर्स तक आर्थिक मदद भी दिया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि हमारे समाज के कई महिला व पुरुष ऐसे हैं जो पीड़ित मानवता की सेवा के लिए हमेशा तैयार रहते हैं उन्हें भी चिन्हित कर मंच से सम्मानित किया जाता है। बलभद्र जयंती समारोह का एक यह भी उद्देश्य होता है कि हम अपने कुल देवता की पूजा के साथ-साथ अपने समाज के लोगों के साथ मिलजुल कर आपसी प्रेम व भाईचारा कायम रखें, जिसमें जिले भर से लोग इस कार्यक्रम में पहुंचते हैं। आज के इस बैठक में भगवान बलभद्र की पूजा अर्चना से लेकर प्रसाद वितरण और सम्मान समारोह सहित कई बातों पर गहन चर्चा हुई। इस दौरान महासचिव गणेश प्रसाद ब्याहुत, पूर्व महासचिव सुरेश प्रसाद ब्याहुत, मीडिया प्रभारी राजू प्रसाद ब्याहुत सहित कई लोग उपस्थित रहे।

पत्रकार के घर पहुंचे लोजपा संसदीय बोर्ड के प्रदेश अध्यक्ष

आरा। लोजपा संसदीय बोर्ड के प्रदेश अध्यक्ष सह पूर्व एमएलसी हुलास पांडेय रविवार की शाम दिवंगत पत्रकार रामाकांत त्रिपाठी उर्फ रजनीश त्रिपाठी के घर शहर के चरखंभा गली पहुंचे। इस दौरान उन्होंने दिवंगत पत्रकार के शोक संतप्त परिवार एवं बड़े भाई से मुलाकात कर ढांढस बंधाया तथा दुःख की इस घड़ी में साथ रहने की बात कही। श्री पांडेय ने कहा कि रजनीश त्रिपाठी को मैं व्यक्तिगत रूप से जानता था। वे लेखनी के धनी व्यक्ति थे। वे निर्भीक पत्रकार के रूप में जाने जाते थे। अपनी लेखनी से हमेशा सत्य को उजागर करते थे। उनके असामायिक निधन से भोजपुर के पत्रकारिता जगत एवं समाज को अपूरणीय क्षति हुई है, जिसकी निकट भविष्य में भरपाई संभव नहीं है। इसके बाद वे शहर के नवादा स्थित होमियोपैथ चिकित्सक डॉ. पंकज शर्मा के घर पहुंचे। उन्होंने चिकित्सक की माता जी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त की। तत्पश्चात पूर्व एमएलसी चंदवा हाउसिंग कॉलोनी निवासी महेश राय के आवास पर गये। जहां उन्होंने महेश राय के दादा सुरेंद्र राय की सड़क दुर्घटना में मृत्यु होने पर संवेदना प्रकट की।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के अंतर्गत विभिन्न विद्यालयों में कार्यक्रम का आयोजन

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। महिला एवं बाल विकास निगम, बिहार पटना के दिशा-निर्देश में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना अंतर्गत अंतराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर जिला एवं प्रखंड स्तरीय विभिन्न विद्यालयों में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिला स्तर पर डॉक्टर नेमीचंद्र उच्च विद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए जिला मिशन समन्वयक मोहम्मद तैयब अहमद ने बताया कि देश के विकास के लिए अधिक-से-अधिक नागरिकों को साक्षर होना अति आवश्यक है। साक्षरता उन्नति और विकास का कारक बन सकती है। पढ़ने-लिखने में सक्षम व्यक्ति साक्षर है। जिसे अक्षरों का ज्ञान भाषा की मयार्दा सही व गलत में फर्क समझ आता है, वह साक्षर है।

साथ-ही-साथ राज्य एवं केंद्र सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएं यथा मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना, साइकिल योजना, संकल्प हब फॉर एंपावरमेंट ऑफ वीमेन, भारतीय न्याय संहिता के साथ भ्रूण हत्या एवं बाल विवाह को रोकने हेतु विशेष जानकारी दी। उपस्थित जिला परियोजना प्रबंधक श्री कुमार रोहित द्वारा शिक्षा के महत्व को विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आज के समय में प्रत्येक व्यक्ति को साक्षर होना अति आवश्यक है बिना शिक्षा हम समाज का ना विकास कर सकते हैं और ना ही निर्माण कर सकते हैं। वन स्टॉप सेंटर के केंद्र प्रशासन अनुपमा श्रीवास्तव एवं केस वर्कर अंजू कुमारी ने कहा कि हिंसा से महिलाओं एवं किशोरियों को बिल्कुल नहीं डरना है हिंसा के डर से अपने काम को छोड़ना नहीं बल्कि हिंसा के खिलाफ मुखर होकर विरोध करना है। आपकी मदद के लिए वन स्टॉप सेंटर एवं 181 हमेशा तत्पर है आप कभी भी उनका सहयोग ले सकती हैं। साथ ही जिला समन्वयक श्री पीयूष पराग यादव एवं जिला परियोजना सहायक नेकी आलम द्वारा पोषण माह के दौरान विभिन्न गतिविधियों का विस्तार पूर्वक जानकारी दी, उन्होंने एनीमिया से होने वाले नुकसान को बताया, जीवन में पोषण क्यों जरूरी है इसकी विस्तृत जानकारी दी साथ ही पोषण भी पढ़ाई भी थीम की बारे में बताया और उन्होंने कहा कि आज के पर्यावरण को सही रखने के लिए हम सभी को एक पेड़ लगाना अति आवश्यक है।

स्मार्ट मीटर की जानकारी देने के लिए होगा नुक्कड़ नाटक

बिक्रमगंज (रोहतास): साउथ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड के द्वारा स्मार्ट प्रीपेड मीटर जागरूकता अभियान के तहत 10 सितम्बर को सूर्यपुरा बड़ा तालाब के समीप नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया जायेगा। जिसमे सीनियर प्रोटोकॉल ऑफिसर ख्वाजा जमाल, विद्युत अधीक्षण अभियंता रोहतास इंद्रदेव कुमार, विद्युत कार्यपालक अभियंता सासाराम ब्राविम, सहायक विद्युत अभियंता बिक्रमगंज राज कुमार शामिल होंगे। सहायक विद्युत अभियंता बिक्रमगंज ने बताया कि आयोजित नुककड़ नाटक के माध्यम से सभी उपभोक्ताओं को स्मार्ट प्रीपेड मीटर की विशेषताएं बतायी जाएगी। प्रखंड सूर्यपुरा के सभी जन प्रतिनिधियों व समाजिक कार्यकर्ताओ को भी कार्यक्रम मे शामिल होने की अपील की है।

शराब विक्रेता महिला को किया गिरफ्तार

दावथ (रोहतास) रोहतास पुलिस द्वारा शराब धंधेबाजों के खिलाफ चलाए जा रहे सघन जांच अभियान के तहत अब पुरुष के अलावे महिलाएं भी काफी संख्या में इस धंधे में शामिल पाई जा रही है। अभी पिछले कुछ दिन ही दावथ प्रखंड मुख्यालय गांव से एक महिला को शराब बेचने के आरोप में जेल भेजा गया है कि वही आज पुनः शराब बेचते हुए एक महिला को गिरफ्तार दावथ पुलिस अग्रेतर करवाई हेतु दावथ थाने ले आई है। इस आशय की जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष दावथ कृपाल जी ने बतलाया कि ग्राम कोवाथ के डोम टोली से गीता देवी पति संजय डोम सा0 डोम टोली कोवाथ को घर से शराब बेचते हुए पकड़ा गया है।

अपराधियों ने दो सगे भाइयों को मारी गोली, एक की मौत दूसरा गम्भीर

प्रात: किरण संवाददाता

भोजपुर। सहार थाना क्षेत्र के पेरहाप गांव में अपराधियों ने दो सगे भाइयों को गोली मार दी है। जिससे एक भाई की घटना स्थल पर हीं मौत हो गई। दुसरा गंभीर रूप से जख्मी बताया जा रहा है। जिसको इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मृतक की पहचान पेरहाप निवासी 52 वर्षीय कमलेश राय के रूप में की गई है। वहीं मंनोरंजन राय गंभीर रूप से जख्मी हो गया है।

जानकारी के मुताबिक दोनों भाई बाइक से आरा जा रहे थे तभी अपराधियों ने गोली चला दी। वहीं मृतक कमलेश राय पर अप्रैल में भी अपराधियों के द्वारा उनके घर पर गोलीबारी की गई थी। जिसमें वे जख्मी हुए थे तथा उनका पुत्र आदित्य कुमार की मृत्यु हो गई थी। वहीं भोजपुर एसपी प्रमोद कुमार ने बताया कि आज पीरो अनुमंडल अंतर्गत सहार थाना के पेरहाप गांव में चचेरे भतीजे और चचेरे चाचा के बीच संपत्ति विवाद जो पूर्व से चल रहा था। उसी को लेकर चचेरे भतीजे प्रियांशु राय के द्वारा चचेरे चाचा कमलेश राय और मनोरंजन राय के ऊपर गोली चला दी गई। जिसमें कमलेश राय की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई तथा मनोरंजन राय को कंधे पर गोली लगी है। पुलिस के द्वारा अस्पताल में भर्ती कर दिया गया है। जहां उनका प्राथमिक उपचार चल रहा है, और फिलहाल वह खतरे से बाहर है। घटना की सूचना प्राप्त होते ही थाना अध्यक्ष के साथ अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी और अन्य वरीय पदाधिकारी घटना स्थल पर पहुंच गए हैं। तथा एफएसएल की टीम घटना स्थल पर रवाना हो गई है। जिससे वैज्ञानिक अनुसंधान हेतु साक्ष्य का संकलन किया जा सके।

एसपी प्रमोद कुमार ने बताया कि प्रारंभिक जांच में ज्ञात हुआ कि कमलेश राय के पिताजी तीन भाई थे, और उसमें एक चाचा की कोई संतान नहीं थी। और उनकी लगभग सारी संपत्ति कमलेश राय और उसके भाई ने अपने नाम कर ली थी। जिसके कारण चचेरे भाई प्रियांशु राय और उनके परिवार से विवाद चल रहा था। पूर्व में भी जमीनी विवाद और संपत्ति विवाद में ही दोनों परिवार में आपस में गोली चल चुकी है। पुराने ही एक मामले में आज कमलेश राय और मनोरंजन राय आरा कोर्ट जाने के लिए घर से निकले थे। पास में ही प्रियांशु राय और उसका एक साथी झाड़ी में घात लगाकर छिपे हुए थे। जैसे ही कमलेश राय और मनोरंजन राय घर से बाहर सड़क पर आते हैं। वैसे ही प्रियांशु राय और उसके साथी के द्वारा उनके ऊपर फायरिंग कर दी जाती है। जिसमें की कमलेश राय की घटना स्थल पर मृत्यु हो जाती है। वहीं प्रियांशु राय तथा उसके साथी अपराधी की गिरफ्तारी हेतु अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के नेतृत्व में एक विशेष पुलिस टीम का गठन कर दिया गया है। और पुलिस टीम जगह-जगह अभियुक्त की गिरफ्तारी हेतु छापामारी आरंभ कर दी है। परिजनों के बयान के आधार पर इस घटना में लाइनर का काम करने महिला अभियुक्त को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। और अन्य की गिरफ्तारी के लिए टीम जगह-जगह छापामारी कर रही है।

आगामी दुर्गा पूजा की तैयारी को लेकर बैठक, राहुल बने पूजा समिति के अध्यक्ष

गडहनी (एसएनबी)। नगर पंचायत गडहनी स्थित पुरानी बाजार शिव मंदिर के प्रांगण मे आगामी दुर्गा पूजा की तैयारी को लेकर पूजा समिति के मुख्य संरक्षक सुनय कुमार परमार उर्फ बब्लू सिंह की अध्यक्षता मे बैठक का आयोजन किया गया। संचालन पूर्व अध्यक्ष सुमन चौरसिया ने किया इस दौरान पूजा तैयारी की रूपरेखा तैयार करते हुए पुरानी पूजा कमिटी मे फेरबदल किया गया। इस दौरान सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि पुरानी कमिटि ही पूजा का कार्यभार संभालेगी। वहीं ग्यारह संरक्षण व ग्यारह संयोजक को रखते हुए कुछ पदों मे फेरबदल किया गया। जिसमे पूजा कमिटी के अध्यक्ष राहुल कुमार, सचिव दीपक केसरी, कोषाध्यक्ष भीम सोनी, उपाध्यक्ष समर गुप्ता उपकोषाध्यक्ष रजत गुप्ता, सुरक्षा प्रभारी सोलु कुमार और प्रकाश कुमार, पीर मोहमद को बनाया गया। बैठक मे मुख्य रूप से चंदन सोनी, पंकज गुप्ता, बिटु कुमार, सोनू कुमार, करिमन, प्रेम, शंभु बारी, दीपांशु, आशीर्वाद, संजय काका, बैजू साह आदि कई शामिल थे।

रोहतास में किया गया रक्तदान शिविर का आयोजन

प्रात: किरण संवाददाता

सासाराम। बिहार के रोहतास जिले की अग्रणी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था अभिनव कला संगम द्वारा महा रक्तदान शिविर का आयोजन स्वर्गीय लाला जगत नारायण जी की 43वें पुण्यतिथि पर जिले के प्रतिष्ठित चिकित्सा एवं शिक्षण संस्थान नारायण मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल जमुहार रोहतास बिहार के प्रतिनिधित्व में आयोजन संपन्न हुई। रक्तदान शिविर कार्यक्रम का उद्घाटन अभिनव कला संगम के निदेशक संजय सिंह बालाजी एवं नारायण मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के जनसंपर्क पदाधिकारी भूपेंद्र नारायण सिंह द्वारा संयुक्त रूप से फीता काटकर किया गया। उसके बाद शहीद लाला जगत नारायण जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर सभी लोगों ने उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित की। वही अभिनव कला संगम द्वारा प्रचार-प्रसार के माध्यम से दर्जनों रक्तवीरो ने अपना-अपना रक्तदान कर सामाजिक दायित्व का निर्वहन किया। इस दौरान संस्था के निदेशक संजय सिंह द्वारा ने कहा की स्वर्गीय लाला जगत नारायण जी के 43वीं पुण्यतिथि के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन हम सभी के लिए प्रेरणादायक है ऐसे में बहुत सौभाग्यशाली हैं हम इस अवसर पर इस तरह का आयोजन करने का अवसर प्राप्त हुआ है। वही अभिनव कला संगम की ओर से मिथिलेश कुमार उर्फ मुन्ना सिंह, विजय कुमार नाग, संजय कुमार अग्रवाल, मनीष प्रसाद, बृजेश मिश्रा सहित समाज की ओर से दर्जनों लोगों ने अपना रक्तदान किया। रक्तदान शिविर कार्यक्रम में शामिल नारायण मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल की ओर से भूपेंद्र नारायण सिंह, डॉक्टर संजीव कुमार पाराशर, संस्था की ओर से निर्देशक संजय सिंह बाला, सचिव नंदन कुमार, रविकेश उपाध्याय (पत्रकार), संतोष सिंह (पत्रकार), मुन्ना सिंह, विजय चौरसिया, कीर्तन श्रीवास्तव, विनोद गुप्ता, संतोष सिंह, मोहम्मद शादाब सिद्दीकी, उमेश कुमार सिंह, अजय कुमार सिन्हा, अनिकेत कुमार उर्फ मनीष, संजय कुमार अग्रवाल, मनीष प्रसाद बृजेश मिश्रा सहित कई रक्तवीरों ने अपना अपना रक्तदान किया।

खेल कूद प्रतियोगिता में छात्रों ने जीते गोल्ड व रजत पदक

प्रात: किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास): स्कूल गेम फेडरेशन ऑफ इंडिया के तहत रोहतास जिला स्तरीय पांच दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता में 0.5 कबड्डी एकेडमी बिक्रमगंज के विवेक और आयन को स्टेट स्तरीय (मधेपुरा) खेलने के लिए अंडर -17 में हुआ सलेक्शन।। 0.5 कबड्डी एकेडमी बिक्रमगंज के छात्रों ने अपनी शानदार प्रदर्शन दिखाई। वही गोल्ड व रजत पदक जीतकर अपने अनुमंडल एवम प्रखंड का नाम रौशन किया। विवेक कुमार +2 उच्च विद्यालय वेलवाइ व आयुष सीनियर सेकेंडरी हाई स्कूल बिक्रमगंज में पढ़ाई करते है। कबड्डी में +2 उच्च विद्यालय वेलवाइ अंडर -17 में +2 उच्च विद्यालय सरैया को 27 - 19 से हराकर विजेता टीम बनी।। रोहतास जिला कबड्डी संघ के संयुक्त सचिव गौतम कुमार ने बताया कि कबड्डी प्रतियोगिता में और कड़ी मेहनत की जरूरत है। आने वाले दिनों में कबड्डी में अपना जिला बिहार के नंबर वन टीम बने।। रोहतास जिला कबड्डी संघ के सचिव दिव्या पांडे ने पूरे टीम को बधाई दी। मौके पर मौजूद विक्की गुप्ता, बृज मोहन यादव, इरफान कुरैशी, आदर्श कुमार, अमन, मंजेश यादव एवम कृष्णा कुमार थे।।

स्वच्छता हमें रोगों से मुक्ति दिलाता है : नन्द

गडहनी। विभागीय निदेशालोक मे प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इसके तहत हाथ धुलाई कार्यक्रम की गतिविधियां आयोजित की गई। वहीं मध्य विद्यालय काउप के प्रधानाध्यापक नन्द जी सिंह ने बताया कि इस दौरान उपस्थित बच्चों को स्वच्छता के बारे में विशेष जानकारी उपलब्ध कराई गई साथ ही साबुन पानी से हाथ धुलवाया गया और हाथ धोने के फायदे को बताया गया। उन्होंने जानकारी देते हुए बच्चों को बताया कि जीवन जीने के लिए हमारे जीवन में स्वच्छता का होना नितांत आवश्यक है। स्वच्छता हमें रोगों से मुक्ति दिलाता है। हम सभी को मन के साथ-साथ अपने शरीर को भी स्वच्छ बनाना है। इसके लिए हम सभी को अपने घर के आसपास के जगहों के साथ-साथ कपड़े रहन-सहन को स्वच्छ और निर्मल बनाना होगा। अपने हाथों को साबुन से धोते रहना चाहिए जिससे हाथों की गंदगी पेट में नहीं जाए।

भाजपा ने जवाहर टोला में चलाया सदस्यता अभियान

प्रात: किरण संवाददाता

आरा: भारतीय जनता पार्टी, विधानसभा आरा के नगर मंडल अंतर्गत जवाहर टोला वार्ड न. 40 मे वार्ड पार्षद गुड्डू पासवान के आवास पर सदस्यता अभियान चलाया गया, जहाँ पर पार्टी से जुड़ने वाले सैकड़ो इक्षुको ने सदस्यता ग्रहण की। नगर अध्यक्ष जीतू चौरसिया की अध्यक्षता मे चलाये गए इस अभियान मे आरा विधायक सह-पूर्व कृषि मंत्री अमरेंद्र प्रताप सिंह जी ने लोगो को सदस्य बनाया। विधयाक जी ने आमजन को सम्बोधित करते हुए कहा की पुरे भारत मे हम ऐसे राजनैतिक पार्टी हैं जिसने देश की सभ्यता, संस्कृति की रक्षा के साथ-साथ बिना भेद-भाव के समाज के अंतिम पैदान पर रह रहें नागरिक को ख्याल रखते हुए विकास की गति को बनाये रखा। आज पूरा विश्व हमें सम्मान की दृष्टि से देख रहा हैं। हमारे सांसद दो थे या आज, हमने कभी भी अपने विचारधारा व विकास नीति से समझौता नहीं किया, इन सब का श्रेय पार्टी के कर्मठ कार्यकताओं के साथ देश की जनता को जाता हैं जिसने हमारे पार्टी पर विश्वास किया और हमें देश का दायित्व सौंपा। भारत माता को परम बैभव तक ले जाने के लिए भारतीय जनता पार्टी के सभी कार्यकर्त्ता निरंतर परिश्रम कर रहें हैं। अभियान मे जिला उपाध्यक्ष लव पाण्डेय, नगर सदस्यता प्रभारी विजय सिंह, प्रियांशु दीवान, धर्मेंद्र सिंह, सुधीर सिंह, मुन्ना सिंह, निशु वर्मा, अमित पाण्डेय, पंकज सिंह, मिथुन पाण्डेय, राजू शाहबादी, विकास कुमार, रोहित कुमार, प्रिय दीपक, कुणाल कुमार, विशाल विराट के साथ सैकड़ो लोग उपस्थित रहें।

रामलीला मैदान में अयोध्या नगरी के संत करेंगे राम कथा

आरा। नगर रामलीला समिति ट्रस्ट की बैठक सोमवार की शाम को की गई, जिसकी अध्यक्षता नगर रामलीला समिति ट्रस्ट की अध्यक्ष डॉ. अर्चना सिंह ने की। बैठक में शारदीय नवरात्र के अवसर पर 18 दिवसीय रामलीला व विजयदशमी के दिन रावण वध की तैयारी समेत विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की गई। अध्यक्ष डॉ. अर्चना सिंह ने कहा कि नगर रामलीला समिति के ट्रस्टियों ने यह तय किया है कि इस बार रामलीला और सभी तरह के कार्यक्रम के लिए किसी तरह की रसीद बाजार में नही भेजी जाएगी। समिति के ट्रस्टी, कार्यकारिणी सदस्य अपनी ओर से सहयोग राशि एकत्रित कर कार्यक्रम को संपन्न करेंगे। विश्वकर्मा पूजा के बाद पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य एवं कार्यकताओं के लिए नगर रामलीला समिति ट्रस्ट का बैंक अकाउंट नंबर एवं क्यू आर कोड सार्वजनिक किया जाएगा, जिस पर लोग डिजिटल ट्रांजक्शन के माध्यम से सहयोग करेंगे। इससे पैसे के लेने-देन में पुरी पारदर्शिता बनी रहेगी। सचिव विष्णु शंकर ने कहा कि 18 दिवसीय रामलीला के दौरान रामलीला मैदान में ही राम कथा का आयोजन किया जाएगा। अयोध्या नगरी के प्रख्यात संत द्वारा संध्या 4 बजे से 6 तक राम कथा का वाचन किया जाएगा। इसको लेकर तैयारी जोर-जोर से चल रही है। नवरात्र के मौके पर नगरवासियों को मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान राम के कथा से बहुत कुछ जानने और जीवन में आत्मसात करने का अवसर प्राप्त होगा। नगर रामलीला समिति ट्रस्ट के उपाध्यक्ष सह रामनवमी शोभा यात्रा समिति के महासचिव शंभू चौरसिया ने रामलीला मैदान में भगवान राम, माता सीता व वीर हनुमान का फोटो युक्त लगाए गए होडिंग को असमाजिक तत्वों द्वारा फाडने की निंदा की।

संक्षिप्त खबरें

राष्ट्रीय लोक मोर्चा के कार्यकर्ताओं की बैठक

अरवल ।इमामगंज बाजार में राष्ट्रीय लोक मोर्चा का एक बैठक आयोजन किया गया । बैठक में सदस्यता अभियान एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा का कुर्था आगमन की तैयारी को लेकर चर्चा किया गया ।जिसका अध्यक्षता जिला अध्यक्ष रविंद्र राम ने किया । बैठक में क्षेत्रीय प्रभारी इंजीनियर अजय कुशवाहा इंजीनियर अजय कुशवाहा प्रभारी बसंत चौधरी पटेल एवं बिहार प्रदेश अध्यक्ष व्यवसायिक आनंद गुप्ता, पूर्व परतेयासी पप्पू वर्मा पार्टी के जिला महासचिव सब प्रवक्ता मनीष कुमार,प्रखंड अध्यक्ष सुदर्शन जी , सदन कुशवाह , विकास कुशवाहा नरेन्द्र कुमार छात्र जिला अध्यक्ष सुजीत भारती , रामप्रवेश यादव कई नेता बैठक में शामिल हुए।

परासी थाना के पुलिस अवैध बालू लदे तीन ट्रैक्टर को किया जब्त

अरवल। जिले के परासी थाना के पुलिस ने अवैध बालू लोड तीन ट्रैक्टर किया जप्त इस मामले में परासी थाना अध्यक्ष पवन कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि अमरा बालू घाट से तीन ट्रैक्टर अवैध बालू लोड करके आ रही थी तभी पुलिस तत्पश्चात से कार्रवाई करते हुए गाड़ी को पीछा कर पिपरा बंगला के समीप तीनों ट्रैक्टर को जप्त कर थाना परिसर लाई है ।इसकी सूचना खनन विभाग को दी गई जहां खनन विभाग के अधिकारी पहुंचकर तीनों ट्रैक्टर के विरुद्ध खनन अधिनियम का मामला दर्ज किया गयो रात्रि के मौके के फायदा उठाकर चालक फरार होने में सफल रहे ।उन्होंने बताया कि किसी भी कीमत पर अवैध रूप से बालू की खनन नहीं करने दिया जाएगा ।जो भी खनन अधिनियम का उल्लंघन करेंगे उनके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई किया जाएगा

सांसद ने पीड़ित परिवार से फोन द्वारा बात कर बंधाया ढ़ाढस

गया ।औरंगाबाद लोकसभा क्षेत्र के टिकारी विधान सभा अंतर्गत कोंच प्रखंड के शाहगंज निवासी मोहमद सलीम मिया को इनका निधन शनिवार को 11:00 बजे रात्रि में हो गया था यह कैंसर बीमारी से ग्रसित है उनकी काफी मकसद के बाद इनको अस्पताल में भर्ती करके इलाज करवाए थे। दुखद दुर्घटना की खबर मिला जो काफी दुःखद है ।इसकी जानकारी मिलने उपरांत सांसद अभय कुशवाहा के निर्देश पर राजद नेता कुंडल वर्मा , किशोर यादव ,बबलू कुमार गुप्ता, गौतम कुमार मोहमद अली हुसैन मिया , मोहमद सफीक मिया एवं उनके निजी सचिव शिवनारायण के शाहगंज घर पर भेज कर पहुंच कर पीड़ित परिवार से फोन बात कर ढ़ाढस बंधाया है ।इस दुःख घड़ी में साथ है। इस दुःख की घड़ी में ईश्वर परिवार वालों को सहनशक्ति दे। मृतक के ईश्वर से आत्मा के शांति देने के लिए प्रार्थना करता हूं।

चर्चित एसिड हमले के दोषी की हुई सजा

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में एडिजे सह स्पेशल पोक्सो कोर्ट जज लक्ष्मीकांत मिश्रा ने कुटुम्बा थाना कांड संख्या -37/19 में निर्णय पर सुनवाई करते हुए एक मात्र अभियुक्त रवि किशन बलिया अम्बा को दस साल की सजा और दस हजार जुमार्ना लगाया है।स्पेशल पीपी शिवलाल मेहता ने बताया कि अभियुक्त को भादंवि धारा -326 ए में दस साल की सजा और दस हजार जुमार्ना लगाया है वहीं भादंवि धारा-354 में तीन साल की सजा सुनाई है दोनों सजाएं साथ साथ चलेगी।केस अज्ञात पर किया गया था अनुसंधान के क्रम में अभियुक्त का नाम आया एक अन्य अभियुक्त का वाद बाल न्यायालय औरंगाबाद में चल रहा था।अभियुक्त रवि किशन को 05/09/24 को दोषी ठहराया गया था और बंधपत्र विखंडित कर जेल भेज दिया गया था।अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि प्राथमिकी सूचक ने 10 मार्च 19 को प्राथमिकी दर्ज कराई थी जिसमें कहा था कि गांव से प्रतिदिन मेरी बच्ची एक निजी स्कूल साईकिल से जाती थी।

36 साल बाद पांच अभियुक्त रिहा

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में एडिजे दस सौरभ सिंह ने दाउदनगर थाना कांड संख्या -123/88,एस .टी. आर -73/92 में निर्णय पर सुनवाई करते हुए पांच अभियुक्त को दोषमुक्त कर दिया है। अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि प्राथमिकी सूचक राजन राय असलेमपुर दाउदनगर ने 25 जून 88 को प्राथमिकी दर्ज कराई थी जिसमें कहा था कि 12 अभियुक्तों ने सुबह 05 बजे सूचक के घर पहुंच कर 600 रू के दो बकरी जबरदस्ती ले जाने लगे तो सूचक ने विरोध किया और मारपीट करते हुए सूचक के घर में आग लगा दिया। अधिवक्ता ने बताया कि इस वाद में पांच अभियुक्तों की मृत्यु हो चुकी है। दो अभियुक्तों का पृथक वाद है। अन्य पांच अभियुक्त लखन राय,मदन राय,विशुनदयाल राय, दीनदयाल राय, मनोज राय असलेमपुर दाउदनगर को भादंवि धारा -436/34 में दोषमुक्त किया गया है।

बाल संरक्षण उन्मुखीकरण-सह-प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल । जिला पदाधिकारी के निदेशानुसार इंडोर स्टेडियम, अरवल में बाल संरक्षण विषय पर एकदिवसीय उन्मुखीकरण-सह-प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन अपर समाहर्ता की अध्यक्षता में की गई। इस दौरान कार्यक्रम का उद्घाटन अपर समाहर्ता एवं अन्य वरीय पदाधिकारियों द्वारा द्वीप प्रज्जवलित कर किया गया। इसी क्रम में सहयोगी पदाधिकारियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने हेतु वरीय पदाधिकारियों एवं उपस्थित गणमान्यों का पौधा देकर स्वागत किया गया। इस दौरान अपर समाहर्ता द्वारा उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए बताया गया कि बाल संरक्षण के सुदृढ़ीकरण एवं प्रत्येक बालक-बालिकाओं के संरक्षण को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर विभिन्न अधिनियमों एवं कल्याणकारी योजनाओं नियमों का निर्माण किया जाता रहा है। बच्चों के संरक्षण, सुरक्षा एवं उनके कल्याणार्थ केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा क्रमशः प्रायोजन एवं परवरिश योजना संचालित है। केन्द्र प्रायोजित प्रायोजन योजना अंतर्गत विधवा, तलाकशुदा, परित्यक्ता अथवा आर्थिक रूप से असक्षम अभिभावक पिता के 2 संतानों को जिनकी उम्र 18 वर्ष से कम को 4,000/- रूपया प्रतिमाह की सहायता राशि दिये जाने का प्रावधान है। वहीं राज्य सरकार द्वारा अनाथ बच्चों के लिए परवरिश योजना का संचालन किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत लाभुक को प्रतिमाह 1,000/- रुपए की राशि प्रदान की जाती है। बाल विवाह मुक्त भारत आईये हम सब मिलकर बाल विवाह एवं बाल श्रम को रोकने में अपनी भूमिका निभायें। विकास पथ विक्रम, अरवल बाल विवाह मुक्त भारत आईये हम सब मिलकर बाल विवाह एवं बाल श्रम को रोकने में अपनी भूमिका निभायें। इस कार्यशाला के आयोजन का मुख्य उद्देश्य इस मुद्दे से जुड़े हितधारकों यथा, विभिन्न विभागों के पदाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी एवं पंचायत प्रतिनिधियों को विभिन्न अधिनियमों एवं नियमों में वर्णित प्रावधानों की जानकारी देना एवं उन्हें संवेदनशील बनाना है ताकि वे बच्चे जो आने वाले समय में देश के विकास के सहभागी होंगे उनकी संरक्षण एवं सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। मौके पर नगर परिषद अध्यक्ष, उप किास आयुक्त, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, विभिन्न प्रखण्डों के प्रमुख, विभिन्न पंचायतों के मुखिया के साथ अन्य उपस्थित रहे।

मगही कला उत्सव बिहार में किलकारी के बच्चों ने लोकनृत्य से लगाया चार चांद

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।मगही कला उत्सव लगातार दो दिनों से सिजवार भवन बड़ा बगीचा चांद चौरा में हो रहा था इस आयोजन में बिहार के उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा बिहार सरकार मौजूद थे इस आयोजन में गया बिहार बाल भवन किलकारी के बच्चों ने गणेश वंदना नृत्य, और लोक नृत्य में बिहार के सांस्कृतिक नृत्य की प्रस्तुति दी इस प्रस्तुति में पूजा कुमारी के साथ खुशी कुमारी, निखिल कुमार गरिमा कुमारी, मुस्कान कुमारी, पल्लवी कुमारी, रुपाली कुमारी प्रियांशी कुमारी, रितिका कुमारी ,रागिनी कुमारी, खुशी कुमारी ,जिया,कुमकुम, मानसी कुमारी मौजूद थी नृत्य के निदेशक गौतम कुमार उर्फ गोलू ने बताया कि मगही कला उत्सव सांस्कृतिक कला को और मगह के कलाकार को एक अच्छा मंच देने का कार्य लागतार करते आ रही है इस आयोजन में उपस्थित थे बिहार बाल भवन किलकारी गया के प्रमंडल कार्यक्रम समन्वयक राजीव रंजन श्रीवास्तव ने बताया कि बिहार की धरोहर मगध की कला संस्कृति देखकर अति प्रसन्न हुए किलकारी प्रशिक्षक में संगीत विद्या से संदीप कुमार सिन्हा दिनेश कुमार ,क्राफ्ट से पिंटू कुमार, नृत्य से अंजली कुमारी गौतम कुमार उर्फ गोलू मूर्तिकला से सुरेंद्र कुमार और सभी बच्चों को प्रमाण पत्र, अंगवस्त्र , स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया बिहार के कई जगह के कलाकार इस आयोजन में उपस्थित थे !

डीएम ने अनुकंपा पर 3 होमगार्ड को दिया नियुक्ति पत्र

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। जिला पदाधिकारी वर्षा सिंह की अध्यक्षता में अनुकम्पा के आधार पर गृहरक्षक के रूप में नामांकन हेतु अनुकम्पा समिति की बैठक सम्पन्न की गई। जिसमें स्व० अमरेश कुमार रंजन गृहरक्षक संख्या 170867 के आश्रित पुत्र अमरजीत कुमार एवं स्व० रामजतन राम गृहरक्षक संख्या 171066 के आश्रित पुत्र सचिन कुमार का अनुकम्पा के आधार पर गृहरक्षक के रूप में नामांकन हेतु निर्धारित विभागीय अर्हता यथा उम्र, शैक्षणिक अर्हता, शारीरिक अर्हता एवं संबंधित प्रमाण पत्रों की जाँच एवं मिलान किया गया। जिसमें दोनों आश्रित उम्मीदवार निर्धारित शारीरिक अर्हता, शैक्षणिक अर्हता एवं उम्र को पूर्ण करते हैं। तद्नुसार दोनों आश्रित उम्मीदवारों को अनुकम्पा के आधार पर गृहरक्षक के रूप में नामांकन हेतु अनुकम्पा समिति द्वारा सर्वसम्मति से आदेश पारित किया गया। अभ्यर्थी शोभा कुमारी से प्राप्त अभ्यावेदन के आलोक में शैक्षणिक योग्यता प्रमाण पत्र की जाँच जिला शिक्षा पदाधिकारी अरवल एवं जिला कल्याण पदाधिकारी, अरवल के संयुक्त जाँच प्रतिवेदन के आधार पर समिति द्वारा सर्वसम्मति से गृहरक्षक में स्वच्छ नामांकन हेतु स्वीकृत करने का निर्णय लिया गया। फलस्वरूप जिला पदाधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा बैठक में सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। तीनों अभ्यर्थियों को जिला पदाधिकारी द्वारा चयन पत्र प्रदान किया गया तथा कर्तव्यनिष्ठा से कार्य करने हेतु निदेशित किया गया।

भाजपा नेता मुन्ना शर्मा की अल सुबह गोली मार हत्या

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। चौक थाना क्षेत्र के गुरु गोविंद सिंह पथ के मंगल तालाब के पास स्थित रामदेव महतो सामुदायिक भवन मोड़ के पास बाइक सवार तीन अपराधियों ने भाजपा नेता श्याम सुंदर शर्मा उर्फ मुन्ना बाबा की गोली मार हत्या कर दी। हत्या का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है। लोगों के बीच इस बात की खास चर्चा रही कि वह अपने घर के आसपास शराब बेचने, सेवन करने एवं उधर से लाने-ले जाने का विरोध किया करते थे। पुलिस को सूचित करने के बाद भी कार्रवाई नहीं हो पाई। अंततः उन्हें गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया गया। अपराधियों ने इस दौरान उनका मोबाइल भी झपट लिया और ले भागे। भाजपा नेता श्याम सुंदर शर्मा रामदेव महतो सामुदायिक भवन के पूरब गली में रहते हैं। वह भाजपा के दो बार मंडल अध्यक्ष और एक बार महानगर में उपाध्यक्ष रह चुके हैं। हालिया संपन्न एक जून को पटना साहिब लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में मारवाड़ी उच्च विद्यालय बूथ की कमान श्यामसुंदर शर्मा के साथ ही राजाराम शर्मा को सौंपी गई थी। उन्होंने तब संघर्ष में जीवन बिताया था। वह पिछले 8-10 साल से पूजा पाठ और कर्मकांड करने के साथ ही सामाजिक कार्यो में भी रुचि ले रहे थे। उन्हें कैंसर भी हो गया था, जिस पर एक हद तक काबू पा लिया गया था। फिलहाल उनकी पत्नी मोनिका शर्मा बीमार चल रही थीं।

पशुओ को डोर स्टेप सुविधा 1962 कॉल सेंटर के माध्यम से मुहैय्या होगा

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। जिला पदाधिकारी के निदेशानुसार समाहरणालय परिसर से तीन मोबाइल वेटेरिनरी यूनिट (एंबुलेंस) जो की अरवल सदर, करपी एवं कलेर प्रखंड में पशुपालकों को डोर स्टेप सुविधा 1962 कॉल सेंटर के माध्यम से मुहैय्या कराएगी, को संयुक्त रूप से अपर समाहर्ता एवं जिला पशुपालन पदाधिकारी द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। मोबाइल पशु चिकित्सा इकाई के बारे में जिला पशुपालन पदाधिकारी ने विस्तृत जानकारी साझा करते हुए बताया कि यह वाहन जीपीएस सुविधा युक्त एक सुसज्जित वाहन है, जिसमें प्रत्येक वाहन पर एक पशुचिकित्सक, एक पारावेट कर्मी एवं एक ड्राइवर को रखा गया है जिसका परिचालन आउटसोर्सिंग कंपनी के माध्यम से कराया जा रहा है। इसमें पशु रोगों की पहचान, पशु चिकित्सा एवं लघु सर्जरी, ऑडियो विजुअल प्रचार के लिए आवश्यक उपकरण के साथ पशुओं की चिकित्सा के लिए आवश्यक दवाएँ इत्यादि के साथ कृत्रिम गभार्धान की सुविधा भी उपलब्ध रहेगी।

'शब्दवीणा' की शानदार प्रतिभागिता से दर्शक हुए मंत्रमुग्ध

प्रात : किरण संवाददाता

गया। राष्ट्रीय साहित्यिक-सह-सांस्कृतिक संस्था "शब्दवीणा" के कलाकारों ने मगही कला महोत्सव में चित्रकला व पेंटिंग, एकल लोकगीत गायन तथा समूह लोकगीत गायन विधाओं में शानदार प्रतिभागिता द्वारा दर्शकों का मन मोह लिया है। शब्दवीणा की प्रस्तुतियों का संयोजन तथा समन्वयन शब्दवीणा की संस्थापक-सह-राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. प्रो. रश्मि प्रियदर्शनी ने किया है। शब्दवीणा संगीत कला मंच की युवा चित्रकार राखी कुमारी ने मगध की संस्कृति को दशार्ते अति सुंदर और जीवंत चित्र बनाये।

उन्होंने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बिहार के उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा को उनकी तस्वीर बनाकर भेंट की है। उप मुख्यमंत्री के आगमन पर शब्दवीणा की गया जिला साहित्य मंत्री चाँदनी बसोया के नेतृत्व में हर्षिता मिश्रा, प्रगति मिश्रा, अंजली, वैष्णवी, खुशी कुमारी, अंजली कुमारी एवं वैष्णवी श्रीवास्तव ने "पिया मेहंदी मंगा द मोती झील से, जाके साइकिल से ना" मगही लोकगीत की मंत्रमुग्ध कर डालने वाली सामूहिक प्रस्तुति दी है। चाँदनी बसोया ने मगही गीत "रेलिया बैरन पिया को लिये जाये रे, रेलिया बैरन" की एकल प्रस्तुति देकर खूब वाहवाहियाँ पायी है। तबले पर संगत दे रहे थे शब्दवीणा संगीत कला मंच के संचालक-सह-शब्दवीणा बिहार प्रदेश कोषाध्यक्ष प्रसिद्ध तबला वादक दिनेश कुमार ।संस्कार भारती की ओर से प्रो सुबोध कुमार झा, जीतेन्द्र कुमार एवं मानसी सिंह ने डॉ रश्मि प्रियदर्शनी, तबला वादक दिनेश कुमार एवं शब्दवीणा की पूरी टीम को संस्कार भारती की ओर से मेमेंटो प्रदान करके तथा प्रतिभागियों को प्रशस्ति प्रमाण पत्र एवं अंगवस्त्र प्रदान करके सम्मानित किया गया है। शब्दवीणा के युवा कलाकारों की प्रशंसनीय प्रस्तुति हेतु शब्दवीणा के राष्ट्रीय परामर्शदाता मंडल के वरिष्ठ सदस्य राजन सिजुआर, राष्ट्रीय संयोजक कौशल किशोर त्रिवेदी, राष्ट्रीय सचिव महावीर सिंह वीर, राष्ट्रीय उप सचिव राजमणि मिश्र, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष कन्हैयालाल मेहरवार, राष्ट्रीय प्रचार मंत्री डॉ. रवि प्रकाश, बिहार प्रदेश अध्यक्ष डॉ. वीरेन्द्र कुमार, उत्तर प्रदेश साहित्य मंत्री अनुराग सैनी 'मुकुंद', अजय वैद्य सहित समस्त शब्दवीणा परिवार ने हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

बारह पास अभ्यर्थी के लिए IT प्रोफेशनल बनने का सुनहरा मौका

गया ।विश्वविद्यालय नियोजन सूचना एवं मार्गदर्शन केंद्र, बोधगया के माध्यम से दिनांक 11 सितंबर को सिद्धि विनायक कंप्यूटेक प्राइवेट लिमिटेड* साहेबनगर, कुजापी , न्यू डेल्हा थाना के पास, टेकारी पंचानपुर रोड, गया में एक दिवसीय रोजगार शिविर का आयोजन किया जाएगा ।इस रोजगार शिविर में सिर्फ वही अभ्यर्थी भाग ले सकते है, जिन्होने वर्ष 2023-24 या वर्ष 2024-25 में साइंस सब्जेक्ट नन मेथिमेटिक्स से 12वीं पास किया हो ।इस शिविर के बारे में नियोजन पदाधिकारी आकृति कुमारी ने बताया की एच सी एल टेच प्रवाइट लिमिटेड कंपनी की तरफ से कुल 200 छात्रों का चयन किया जाएगा। यह चयन प्रक्रिया ऑनलाइन टेस्ट पर आधारित होगी। यह एक साल की ट्रेनिंग-सह-इंटर्नशिप प्रोग्राम है। जिसमे चयन के बाद अभ्यर्थियों को स्टाइपेंड के रूप में 10000 सैलरी दी जाएगी।

सीसीटीवी में घटना कैद, रेकी करने वाला बाद में बाइक पर बैठा

पटना सिटी (प्राकि) । श्याम सुंदर शर्मा सुबह चार बजे अपने घर से सड़क पर गुरु गोविंद सिंह पथ में आए। वे तिलकेश्वर महादेव मंदिर के पास पहुंचकर चाय पी। करीब 4.10 पर वहां से पैदल टहलते हुए वह रामदेव महतो सामुदायिक भवन मोड़ के उत्तर मनोज कमलिया स्टेडियम गेट के पास बैठ गए और मोबाइल देखने लगे। इस बीच एक अपराधी लगातार इनकी रेकी कर रहा था। शायद इसका आभास पंडित मुन्ना शर्मा को नहीं हो पाया। इसी बीच शहीद भगत सिंह चौक की ओर से एक बाइक पर सवार दो लोग आता है। तिलकेश्वर महादेव मंदिर के पास उस बाइक पर दो लोग सवार दिखता है। यहीं पर रेकी कर रहा तीसरा व्यक्ति भी दो सवार के बीचो-बीच बैठता है। इसके बाद मोटरसाइकिल पूरा दाहिने मोड़ कर श्याम सुंदर शर्मा के पास रोक दिया जाता है। हाथापाई करने के बाद उन्हें एक गोली मारी जाती है।

मंकीपॉक्स को लेकर गया एयरपोर्ट पर स्वास्थ्य विभाग की टीम तैनात

गया। जिला में मंकीपॉक्स संक्रमण को लेकर स्वास्थ्य विभाग सर्तक और सजग है। मंकीपॉक्स को लेकर गया एयरपोर्ट में यात्रियों की स्कीनिंग के लिए स्वास्थ्य विभाग की टीम को तैनात किया गया है। इस टीम में एक डॉक्टर, एक पारामेडिकल स्टाफ तथा एक नर्स हैं। मंकीपॉक्स संक्रमण के लेकर स्वास्थ्य विभाग डीपीएम नीलेश कुमार ने बताया कि एयरपोर्ट पर विशेषकर स्वास्थ्य विभाग की टीम तैनात की गयी है। बताया कि गया एयरपोर्ट पर हेल्थ लगाया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मंकी पॉक्स कों पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी बताया गया है। इसके मद्देनजर गया एयरपोर्ट पर आने वाले यात्रियों की जरूरी जांच की जायेगी। मंकीपॉक्स को लेकर सिविल सर्जन द्वारा भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के निदेशक को आवश्यक दिशा—निर्देश का अनुपालन करने के संबंध में कहा गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के सर्विलांस मेडिकल ऑफिसर डॉ कुणाल ने बताया कि गया एयरपोर्ट पर आने वाले अंतरराष्ट्रीय यात्रियों की बीते 21 दिनों की यात्रा इतिहास का विवरण लिया जाये। य

ात्रा इतिहास में यह देखा जाना है कि यात्री ने मंकीपॉक्स के एंडेमिक जोन में यात्रा किया है अथवा नहीं। साथ ही यात्री का ट्रैवल सेल्फ डिक्लारेशन फॉर्म भरा जायेगा। अगर कोई संदिग्ध मामला पाया जाता है तो मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल में उसे आइसोलेशन में रखा जायेगा ।मंकीपॉक्स एक वायरल जूनोटिक बीमारी है जो मुख्यतः मध्य पश्चिमी अफ्रीका में सामने आया है। यहां से यह कई अन्य देशों में फैला है। इस वर्ष अगस्त माह में मंकी पॉक्स के मामले दक्षिण अफ्रीका, केन्या, रवांडा, युगांडा, कांगो गणराज्य, बुरुंडी, मध्य अफ्रीका, कांगो, कैमेरून, नाइजीरिया, आइवरी कॉस्ट, लेबेरिया में आये हैं। इन देशों से मंकीपॉक्स के मामले स्वीडन तथा पाकिस्तान में भी पहुंचे हैं। भारत के केरल में मंकी पाक्स का एक मामला रिपोर्ट किया गया है। भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी एडवाइजरी के मुताबिक त्वचा पर चकते, बुखार और सुजे हुए लिम्फ नोड तथा सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द या थकावट, गले में खराश और खांसी इसके लक्षण हैं।

इनर व्हील क्लब गया ने शुरू किया प्रौढ़ शिक्षा केंद्र

एक प्रौढ़ शिक्षा केंद्र की शुरूआत सिद्धार्थ कंपैशन ट्रस्ट के भवन में किया गया है'

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।विगत इंटरनेशनल लिटरेसी डे के मद्देनजर इनर व्हील क्लब गया के बैनर तले एक प्रौढ़ शिक्षा केंद्र की शुरूआत सिद्धार्थ कंपैशन ट्रस्ट के भवन में किया गया है' इस मौके पर अध्यक्षता तृप्ति गुप्ता ने कहा कि रोजमर्रा की जिंदगी को आसान करने के लिए सामान्य पढ़ाई लिखाई महिलाओं के लिए जरूरी है, ताकि वह छोटी-छोटी जरूरत के लिए दूसरों पर आश्रित ना हो ' पढ़े लिखे ना होने की वजह से कई बार उन्हें ठगी का सामना भी करना पड़ता है ।चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष विवेक कल्याण ने बताया कि वहां सिलाई कढ़ाई और कंप्यूटर इत्यादि की मुफ्त शिक्षा महिलाओं को दी जाती है। अशिक्षा कई बार उनके कार्यो के लिए बड़ी बाधा बनती है ।इसी को ध्यान में रखते हुए इनर व्हील क्लब गया द्वारा प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खोला गया है जहां जिन महिलाओं और वयस्क लड़कियों को अक्षर ज्ञान नहीं है अभी अक्षर ज्ञान प्राप्त कर सकेंगी। इस मौके पर विवेक कल्याण जी ने आश्वासन दिया कि वह सभी महिलाएं को ट्रस्ट की शिक्षिकाओं द्वारा सुचारू रूप से कक्षाएं करवाई जाएगी ।इस अवसर पर क्लब द्वारा महिलाओं को स्लेट पेंसिल किताब फल तथा जलपान दिया गया है ।इस कार्यक्रम के अंत में क्लब की उपाध्यक्ष स्मिता पोद्दार ने ट्रस्ट के अध्यक्ष विवेक कल्याण जी शिक्षक को कर्मचारियों और कार्यक्रम में शामिल 20 महिलाओं को धन्यवाद दिया है। इस कार्यक्रम में अध्यक्षता तृप्ति गुप्ता उपाध्यक्ष स्मिता पोद्दार विनीता और अनामिका के अतिरिक्त सिद्धार्थ कंपैशनेट ट्रस्ट की अनेक शिक्षक कर्मचारी महिलाएं और लड़कियां भी शामिल हुई है।

हिंदी दिवस पाक्षिक पूर्व कार्यक्रम के नौवें दिन 1884 ई में जम्होर आने वाले भारतेंदु याद किए गए

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर में जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन औरंगाबाद के तत्वावधान में 14 सितंबर हिंदी दिवस पाक्षिक पूर्व कार्यक्रम के निमित नौवें दिन भारत के महान साहित्यकार, आधुनिक खड़ी बोली के सर्जक भारतेंदु हरिश्चंद्र जी के 174 वीं जयंती पर याद किया गया। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह, उपाध्यक्ष डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्र, महामंत्री धनंजय जयपुरी के आह्वान पर उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने बताया कि रीतिकाल के समय हिंदी साहित्य का जितना उन्नयन होना चाहिए था उतना नहीं हो सका तो ऐसी स्थिति में भारतेंदु जी ने आधुनिक खड़ी बोली की सर्जना की और अपने लेखनी के माध्यम से हिंदी साहित्य को शिखर पर पहुचाने का कार्य किया था। रीतिकाल के विकृत सामंती संस्कृति की पोषक वृतियों को छोड़कर स्वस्थ परंपरा की भूमि अपनाई और हिंदी साहित्य में नवीनता के बीज बोए। जिस समय भारतेंदु रचना की सर्जना कर रहे थे उस समय भारत पराधीनता की बेड़ियों से जकड़ी हुई थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने जो भी साहित्य रचे उनमें राष्ट्रवाद की झलक जरूर दिखाई पड़ती है ।भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी,सती प्रताप,श्री चंद्रावली, नील देवी उनकी कालजई साहित्यिक कृतियां हैं ।जिन्होंने,हिंदी साहित्य के विकास में विशेष योगदान दिए। 1884 ईस्वी में भारतेंदु जी का औरंगाबाद जिले के ऐतिहासिक एवं धार्मिक ग्राम जम्होर में आगमन हुआ था। जहां,उन्होंने पुनपुन महात्म्य की रचना करने में वहां के साहित्यकारों के साथ सहभागिता निभाई थी। हिंदी भाषा के विकास में इन्होंने सराहनीय कार्य किए ।उस समय के लोगों ने उनकी हिंदी की रचनाओं को जानने समझने के लिए हिंदी भाषा को अपनाया।

जब तक रिपोर्ट डीएम को नहीं भेजा जाएगा तबतक आंदोलन रहेगा जारी

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद । रफीगंज थाना कांड सं-266-23 में प्रशासन के स्तर से गड़बड़ी की जा रही है। बबन सिंह की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में छेड़छाड़ की गई और शिकायत के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई। सोमवार को अखिल भारतीय राहुल गांधी यूथ कांग्रेस बिग्रेड के सदस्यों के द्वारा सोमवार को सिविल सर्जन कार्यालय के पास सिविल सर्जन डा. रविभूषण श्रीवास्तव के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

मो. शाह नवाज रहमान उर्फ सल्लू खान, निखिल कुमार, लालू कुमार, विजेद्र सिंह, नरेश राम सहित लोगों ने कहा कि मामले को लेकर डीएम के यहां से 11 जुलाई 11 /2024 को सिविल सर्जन के पास अभियोजन स्वीकृति के लिए मांगा गया। सिविल सर्जन चुप्पी साधी है। अभी तक डीएम के यहां कोई रिपोर्ट नहीं सौंपी है। जिसको लेकर प्रदर्शन किया गया। लोगों ने कहा कि यदि यहां कि रिपोर्ट दो दिनों के अंदर सीएस द्वारा डीएम को नहीं भेजा गया तो सिविल सर्जन कार्यालय का घेरा किया जाएगा

बबन सिंह पोस्टमार्टम मामले में दोषी को चिकित्सक को सिविल सर्जन उन कमेटी के सदस्यों ने बचाने के जांच रिपोर्ट में बचाने का काम किया गया है। उनके खिलाफ जांच का आदेश डीएम द्वारा दिया गया लेकिन जांच भी उसी से कार्रवाई जा रही थी जिस पर आरोप था। 11 जनवरी 2024 की जांच प्रक्रिया के क्रम में पुलिस अवर निरीक्षक शिखा कुमारी, नगर थाना ने पोस्टमार्टम रिपोर्ट में छेड़छाड़ की पुष्टि की है। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सदर के कार्यालय को 29 मार्च 2024 को नगर थानाध्यक्ष के द्वारा जिसका ज्ञापांक संख्या 1035/24 दिनांक 29 मार्च 2024 से जांच रिपोर्ट भेजा गया है। मगर अबतक किसी तरह की कोई कार्रवाई नहीं की गई है।

कार्रवाई नहीं होने पर आरोपित चिकित्सक के खिलाफ एक परिवाद संख्या-492/24 दायर किया गया था। मामले में मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी ने अभियोजन स्वीकृति लाने का आदेश दिया था। आवेदन और अन्य कागजात डीएम को दिया गया लेकिन जान बूझ कर मामले को लटकाया जा रहा है। मगध प्रमंडल के क्षेत्रीय अपर निदेशक, स्वास्थ्य सेवा, गया को आवेदन भेजा गया है। 25 जून 2024 को दोनों जगहों पर डाक प्राप्त हो चुका है जिसकी रिसीविंग मिल गई है।

इसका मैसेज भी उन्हें मिला है जिससे यह पुष्टि होती है कि उन्हें डाक प्राप्त हुआ है। बावजूद भी औरंगाबाद के डीएम को मैंने स्वयं जाकर आवेदन दिया है जिसकी रिसीविंग भी कापी के रूप में संलग्न है। कहना है कि दोनों जगहों पर अभियोजन के लिए आवेदन दिया गया है और रिसीविंग संलग्न है। इसके बाद भी अभियोजन स्वीकृति अप्राप्त है।

भाजपा नेता श्याम सुंदर की हत्या से काफी मर्माहत हूं : नंदकिशोर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव ने भाजपा नेता श्याम सुंदर शर्मा की हत्या पर गहरा शोक संवेदना जताया है। उन्होंने कहा कि अपराधियों को किसी कीमत पर छोड़ा नहीं जाएगा। अपराधियों को हर हाल में सजा दिला कर रहूंगा। श्री यादव ने कहा कि अभी वे आवश्यक कार्यवश दिल्ली में हैं। इसलिए सशरीर उनके अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो पाया। इसका उन्हें गहरा दुख है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। श्री यादव ने कहा कि श्याम सुंदर उर्फ मुन्ना शर्मा मेरे भाई जैसे थे। इस दुख के समय उनके परिजनों के साथ खड़ा रहना उनका नैतिक दायित्व है। ईश्वर से प्रार्थना है इस दुख की घड़ी में उनके परिजनों को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें। गौरतलब है कि सोमवार को तड़के गुरु गोविंद पथ के रामदेव महतो सामुदायिक भवन के पास बाइक पर सवार तीन अपराधियों में से एक ने उसे पीछे से सिर में गोली मार दी, जबकि दूसरे ने तेज हथियार से प्रहार किया। इससे उनकी मौत ही हो गई। भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष और महानगर में उपाध्यक्ष रहे मुन्ना शर्मा को चौक थाना अंतर्गत सुबह लगभग पांच बजे अपराधियों ने गोली मार हत्या कर दी। घटना की निंदा करते हुए राजद के पूर्व प्रदेश महासचिव सह पूर्व पार्षद बलराम चौधरी, मोहम्मद जावेद, रजनीश राय, सीपीआई नेता देवरत्न प्रसाद, शंभू प्रसाद, माले नेता राम नारायण सिंह, डॉ इकबाल अहमद, बबलू जायसवाल, मुन्ना जायसवाल, एजाजुद्दीन उर्फ सानू, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता परवेज अहमद, राजकुमार राजन, इबरार अहमद रजा, विनोद अवस्थी, फारवर्ड ब्लाक के बलिराम विश्वकर्मा, वाल्मीकि प्रसाद आदि ने कहा है कि वर्तमान सरकार अपराधियों को लगाम लगाने में नाकाम साबित हो रही है। यह कौन सा राज है जहां सामाजिक एवं राजनीतिक दल के लोगों को भी दिनदहाड़े हत्या की जा रही है। सरकार मूकदर्शक बनी है। नेताओं ने पूछा है कि यह कौन सा राज है, जहां व्यवसायी, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिक दल के कार्यकर्ता सुरक्षित नहीं हैं। बीते दिन भारतीय जनता पार्टी के अजय साह एवं मुन्ना शर्मा जैसे सामाजिक कार्यकताओं को अपराधियों की गोली का शिकार होना पड़ा।

संक्षिप्त खबरें

गणेश पूजनोत्सव का फीता काट कर किया गया उद्घाटन

विभूतिपुर/समस्तीपुर। प्रखंड अंतर्गत नरहन स्थित श्री श्री 108 गणेश पूजा समिति द्वारा गणेश पूजनोत्सव का आयोजन किया गया। उद्घाटन समाजसेवी दिलीप नारायण सिंह उर्फ पप्पू जी एवं श्याम किशोर कुशवाहा ने संयुक्त रूप से फीता काट कर किया। मौके पर समिति के अध्यक्ष प्रभु नारायण राय, सचिव दिलीप राय उर्फ पुलिंदर राय, कोषाध्यक्ष अंकित कुमार, सदस्य सुमन कुमार, रितेश कुमार, संजीव कुमार,अजय, सोनू, सुशील, देवनारायण, तरुण कुमार, गिरीश कुमार, संजीत कुमार, ग्रामीण अरुण राय, सत्यनारायण राय, कमलेश राय, धनश्याम कुमार, अशोक साह, शेखर प्रसाद सिंह, राजीव रंजन, रंजीत राय, सुधांशु कुमार, क्रांति कुमार एवं पंडित के रूप में दिवाकर झा एवं पुजारी विक्रम, संदीप, देवांशु, विवेक, सचिन, राजू उपस्थित थे।

कल्याणपुर में खुला हीरो का फेस्टिवल काउंटर

विभूतिपुर/समस्तीपुर। ग्राहकों की बढ़ती मांग व त्योहारी सीजन को लेकर शिवा अमन हीरो के द्वारा विभूतिपुर प्रखंड के कल्याणपुर चौक से दक्षिण बैंतीपार पुल के बगल में हीरो का फेस्टिवल काउंटर धूमधाम के साथ खोला गया। संचालक अमन सोनी ने बताया कि दुर्गा पूजा, दीपावली एवं छठ महापर्व में ग्राहकों की सुविधा को देखते हुए यह काउंटर खोला गया है। इस काउंटर पर हीरो के सभी मॉडल ग्राहकों को उपलब्ध कराया जाएगा। मौके पर जिला पार्षद ममता देवी, हरिश्चंद्र पोद्दार, सुशील कुमार सुरेका, पूर्व मुखिया कपिलेश्वर कुंवर, रणवीर कुमार विनोद, आशुतोष कुमार, रवि किशोर,अभिषेक सोनी, अविनाश कुमार आदि मौजूद थे।

मार पीट की घटना में आधे दर्जन जख्मी

कल्याणपुर समस्तीपुर। थाना क्षेत्र के मनियारपुर गांव में आपसी विवाद को लेकर हुई मारपीट की घटना में आधे दर्जन लोग गंभीर रूप से जख्मी हो गए। जख्मी लोगों में अख्तरी खातून, फरहान ताज, मोहम्मद जावेद कैसर,नसीम,अनाम अल जावेद, मोहम्मद इरशाद कैंसर सहित आधे दर्जन लोग जख्मी हो गया। स्थानीय लोगों की मदद से सभी जख्मी का ईलाज पीएचसी कल्याणपुर में कराया गया। जहां तीन की गंभीर स्थिति को देखते हुए समस्तीपुर सरदार अस्पताल रेफर कर दिया गया है। रेफर में फरहान ताज, मोहम्मद जावेद कैसर,मोहम्मद नसीम है। वहीं पुलिस ने बताया कि जख्मी के परिजन द्वारा आवेदन मिलने पर आगे कार्रवाई किया जाएगा।

वारंटी गिरफ्तार

कल्याणपुर समस्तीपुर। चकमेहसी थाना क्षेत्र के दो गांव से कोर्ट के आधे दर्जन वारंटी को पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार वारंटी की पहचान मालीनगर गांव निवासी मोजे लाल पंडित,श्रिवेणी पंडित, उपेन्द्र पंडित, विपिन पंडित को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं दूसरी गांव श्रीनाथ पारण गांव निवासी दिनेश महतो शिवचन्द महतो को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। वहीं चकमेहसी थानाध्यक्ष दिव्य ज्योति कुमारी ने बताया कि वारंटी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

बकाये राशि की मांग को लेकर प्रखंड कार्यालय पर किया नारेबाजी

कल्याणपुर समस्तीपुर। प्रखंड क्षेत्र के सभी नल जल अनुरक्षक सोमवार को बीडीओ प्रकोष्ठ के आगे नारेबाजी करते हुए सरकार द्वारा दी जाने वाली मानदेय नहीं मिलने को लेकर नारेबाजी के साथ आक्रोश जताया। आक्रोशित अनुरक्षकों का कहना था कि अनुमंडल कार्यालय के पत्र अप्रैल 2023 तक मानदेय का भुगतान हो चुका है। जो अभी तक पोर्टल पर नहीं चढ़ा है। एक शिष्टमंडल प्रखंड विकास पदाधिकारी देवेंद्र कुमार से मिलकर अपने मांगों का ज्ञापन दिया। आक्रोश जताने वाले में विनोद बैठा राजेश्वर सिंह नागेंद्र नागमणि नागेंद्र ठाकुर रोशन कुमार जसविंदर कुमार सहित अनुरक्षण शामिल थे।

पूर्व वार्ड सदस्य हत्याकांड मामले में नामजद आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

कल्याणपुर समसतीपुर। थाना क्षेत्र के जटमलपुर ढाब गांव में विगत 26 अगस्त की देर रात पूर्व वार्ड सदस्य मोहम्मद गुलाब को अपने ही अर्ध निर्मित घर में सोए हुए अवस्था में अपराधियों ने गोली मार कर हत्या कर दिया था। जिस मामले में पुलिस ने घटना के 14 दिन बाद नामजद आरोपी गांव के ही मोहम्मद गुफरान को बंगरा थाना क्षेत्र के बाजितपुर सरसोंना गांव से गिरफ्तार कर लिया है। इस मामले को लेकर अपर थाना अध्यक्ष दीपक कुमार झा ने पुष्टि करते हुए बताया कि गिरफ्तार युवक से पूछताछ करते हुए अन्य नामजद आरोपी की गिरफ्तारी को लेकर छापामारी करने की बात कही है।

अधिकारी ने मोबाईल पशु चिकित्सा इकाई का किया शुभारंभ

पशुपालकों के द्वार पर पशु चिकित्सा सेवा प्रदान करेगा मोबाईल पशु चिकित्सा इकाई

प्रातः किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)। पशुपालकों के द्वार पर पशु चिकित्सा सेवा प्रदान करने हेतु मोबाईल पशु चिकित्सा इकाई का शुभारंभ आज जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया। जिलाधिकारी ने जिला पशुपालन पदाधिकारी सहित अन्य पशु चिकित्सकों से मोबाईल पशु चिकित्सा इकाई के संदर्भ में विस्तृत जानकारी ली।

उन्होंने कहा कि जिले को प्राप्त मोबाईल पशु चिकित्सा इकाई से पशुपालकों को काफी सहूलियत होगी। उन्हें घर पर ही पशुओं का ईलाज संभव हो सकेगा। उन्होंने जिला पशुपालन पदाधिकारी को निर्देश दिया कि विभागीय दिशा-निर्देश के अनुरूप पशु चिकित्सा इकाई का संचालन सुनिश्चित किया जाय। जिला पशुपालन पदाधिकारी ने बताया कि जिले में 18 पशु चिकित्सा इकाई कार्य करेंगे। इस इकाई में एक पशु चिकित्सक, एक पाराभेट, स्टॉफ मौजूद रहेंगे। इसके साथ ही कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा भी पशुपालकों को इस इकाई के माध्यम से उपलब्ध करायी जायेगी। साथ ही मौसमवार पशुओं में होने वाली संभावित बीमारियों की जानकारी भी पूर्व से ही दे दी जायेगी। इस अवसर पर विशेष कार्य पदाधिकारी, जिला गोपनीय शाखा सुजीत कुमार, जिला पशुपालन पदाधिकारी डॉ0 मृत्युंजय शरण सहित डॉ0 विजय कुमार, डॉ0 अवधेश कुमार आदि उपस्थित थे।

जनहित के कार्यों को बेहतर तरीके से करें कार्यान्वित : जिलाधिकारी

बेतिया(घनश्याम)। जिला पदाधिकारी दिनेश कुमार राय की अध्यक्षता में सोमवार को समाहरणालय सभाकक्ष में जिला समन्वय समिति की महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न हुयी। इस बैठक में भूमि विवाद/शनिवारीय जनता दरबार/पंचायत सरकार भवन, भवनहीन विद्यालय, आंगनबाड़ी, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र आदि की भूमि उपलब्धता की स्थिति/डीपीआरसी हेतु भूमि की उपलब्धता की समीक्षा की गयी। इसके साथ ही बायोमेट्रिक एटेंडेंस/संविदा पर विभिन्न विभागों में नियुक्ति हेतु रोस्टर क्लियरेंस की स्थिति, एचआरएमएस, मुख्यमंत्री की संभावित यात्रा के संबंध में गांवों का चयन, प्रधानमंत्री आवास योजना/मनरेगा योजना/एलएसबीए से संबंधित योजना, मतदान केन्द्रों के युक्तिकरण, पुल-पुलिया की स्थिति/बारिश के कारण टुटे सड़कों की स्थिति, विधायक द्वारा प्राथमिकता के आधार पर अनुशंसित पथों की स्थिति, अनाधिकृत धार्मिक संरचना, नल-जल योजना/सात निश्चय योजना/सोलर स्ट्रीट लाइट योजना, सीडब्ल्यूजेसी/एमजेसी, ओवरलोडिंग, खनन, प्रमादी मीलर, लोक शिकायत निवारण, कब्रिस्तान घेराबंद/मंदिर चहारदीवारी, आपदा (बाढ़, सुखाड़, अग्निशमन), अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण/सामुदायिक भवन, मद्य निषेध, आंतरिक संसाधन, आयुक्त तिरहुत प्रमंडल मुजफ्फरपुर के संभावित बैठक की पूर्व की तैयारी, जिला परिषद के हाट/बाजार/सैरात बंदोबस्ती, आगामी एक वर्ष के लिए प्राथमिकता, बेतिया शहर में यातयात व्यवस्था के सुचारू रूप से संचालन, बुडको/नगर निकाय द्वारा कार्यान्वित योजनाओं की समीक्षा की गयी। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि जनहित से जुड़े सभी कार्यों को बेहतर तरीके से कार्यान्वित करने हेतु सभी अधिकारियों को विशेष ध्यान देना है। जनहित के कार्यों में किसी भी प्रकार की कोताही कतई बर्दाश्त नहीं की जायेगी। उन्होंने कहा कि बेहतर तरीके से कार्यों को सम्पादित करने वाले अधिकारियों को पुरस्कृत भी किया जायेगा साथ ही अपेक्षाकृत कम उपलब्धि वाले अधिकारियों के विरूद्ध कार्रवाई भी की जायेगी।जिला समन्वय समिति की बैठक में जिलाधिकारी श्री दिनेश कुमार राय ने पदाधिकारियों से कहा कि सरकार के द्वारा किसी योजना के लिए क्या दिशा निर्देश है उसे अक्षरशः अमल में लाना है। साथ ही उसके लिए क्या समय सीमा निर्धारित है यह भी ध्यान में रखना है। काम कैसे होगा इसके लिए पूरी योजना के साथ आगे बढ़ाना है। अगर कहीं कोई दिक़्क़त आती है तो वरीय अधिकारियों से विमर्श करना है। जिलाधिकारी ने अधिकारियों से कहा कि अपनी शिथिलता, उदासीनता और निष्क्रियता दूर कर के मनोयोग के साथ काम करें।एक साल का कार्य योजना बना लें और उसे अमलीजामा पहनाये। जो मामले संवेदनशील है उसे ध्यान से हल करें। कोर्ट से जुड़े हुए जो मामले हैं उसका हल हुआ है कि नहीं इसे भी ट्रैक करते रहे। अगर वरीय पदाधिकारियों से किसी मदद की जरूरत हो तो बेझिझक बोले। जिलाधिकारी ने अधिकारियों से कहा कि वे मुख्यमंत्री का दौरा प्रस्तावित है और वह कभी भी हो सकता है। ऐसे में आप लोग ध्यान पूर्वक यह तय करें कि उनको कौन सा अनुमंडल, कौन सा गाँव तथा कौन सी योजना दिखाना चाहिए। जहाँ रोड खराब है उसे भी सुदृढ़ करने की दिशा में प्रयास करें। साथ ही हेलीपैड की व्यवस्था भी देखें जिससे की आने-जाने में कोई दिक़्क़त न हो।

जिलाधिकारी ने कहा कि पूरे ज़िले में 303 पंचायत है। हर पंचायत में पंचायत भवन बनने हैं। आप लोगों को यह देखना है कि कहाँ पंचायत भवन बन चुके हैं। कहाँ अभी बनना है और कहाँ के लिए स्वीकृति लेना है। जहाँ पंचायत भवन बनना है उस संबंधित पंचायत के बारे में अंचल स्तर पर सारे पदाधिकारियों को ज्ञान होना चाहिए जिससे कि समन्वय में आसानी हो। उन्होंने निर्देश दिया कि थानास्तर, अनुमंडलस्तर पर नियमित रूप से प्रभावी जनता दरबार का आयोजन कराना सुनिश्चित करें। थानास्तर के जनता दरबार में अंचलाधिकारी एवं थानाध्यक्ष एक साथ बैठक मामलों को सुनें और उसके निराकरण की दिशा में कारगर कार्रवाई करें। इसके साथ ही जनता दरबार के मामलों को भू-समाधान पोर्टल पर नियमित रूप से अपडेट भी कराएं। उन्होंने निर्देश दिया कि सभी सरकारी कार्यालयों में बायोमेट्रिक एटेंडेंस लगाना जरूरी है। इस संदर्भ में सभी कार्यालय प्रधान/आईटी मैनेजर इसका शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने कार्यपालक अभियंता, एनएच, पथ निर्माण विभाग, ग्रामीण कार्य विभाग को निर्देश दिया कि क्षतिग्रस्त सड़क, पुल-पुलियों की मरम्मति अनिवार्य रूप से कराएं। सड़क, पुल-पुलियों आदि के निर्माण में गुणवता का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करें। इसके साथ ही रख-रखाव पर भी विशेष ध्यान दें। जिलाधिकारी ने कार्यपालक अभियंता, एनएच को बगहा-वाल्मीकिनगर पथ में बगहा शहर से 3-4 किलोमीटर की क्षतिग्रस्त सडक को अविलंब दुरूस्त करने का निर्देश दिया। सभी अनुमंडल पदाधिकारी इस कार्य का अनुश्रवण करेंगे। उन्होंने निर्देश दिया कि अनाधिकृत धार्मिक संरचना निर्माण को लेकर अधिकारी सजग एवं सतर्क रहेंगे। नजर बनाकर रखेंगे। अनाधिकृत धार्मिक संरचना के निर्माण की सूचना मिलने पर तुरंत वरीय अधिकारियों को सूचित करते हुए अग्रतर कार्रवाई सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि यह महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील मामला है, इसमें लापरवाही नहीं बरती जाय।

सोलर स्ट्रीट लाइट योजना की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि लक्ष्य के अनुरूप सोलर स्ट्रीट लाइट का अधिष्ठापन नहीं करने अथवा धीमी प्रगति वाले एजेंसी को शोकॉज करें। सुधार नहीं होने की स्थिति में संबंधित एजेंसी को ब्लैकलिस्टेड करने की कार्रवाई करें। इस अवसर पर उप विकास आयुक्त सुमित कुमार, अपर समाहर्ता राजीव कुमार सिंह, अपर समाहर्ता-सह-जिला लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी अनिल कुमार सिन्हा, अपर समाहर्ता आपदा प्रबंधन रामानुज प्रसाद सिंह नगर आयुक्त, नगर निगम बेतिया शंभु कुमार अनुमंडल पदाधिकारी, बेतिया विनोद कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी, नरकटियागंज सूर्य प्रकाश गुप्ता अनुमंडल पदाधिकारी बगहा गौरव कुमार सहित सभी जिलास्तरीय पदाधिकारी, सभी कार्यपालक अभियंता, सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी, सभी अंचल अधिकारी, सभी बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, सभी प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी, सभी राजस्व अधिकारी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

आयुक्त के निर्देश पर पटना शहर में सातवे दिन अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। प्रमंडल, पटना मयंक वरवड़े के निदेश पर पटना शहर में सातवे दिन अतिक्रमण उन्मूलन मल्टी-एजेंसी विशेष अभियान चलाया गया। विगत सोमवार से इसकी शुरूआत हुई थी। विभिन्न नगर निकायों में यह अभियान चलाया जा रहा है। इस पर आयुक्त लगातार नजर रखे हुए हैं एवं नियमित समीक्षा कर रहे हैं।

प्रशासन, नगर निगम, ट्रैफिक पुलिस, परिवहन, राजस्व, पथ निर्माण, स्वास्थ्य, पुलिस, अग्निशाम, पुल निर्माण निगम, दूरसंचार, वन प्रमंडल, विद्युत सहित विभिन्न विभागों के पदाधिकारी एवं कर्मी अतिक्रमण हटाओ अभियान में शामिल हैं। जिला नियंत्रण कक्ष से प्राप्त सूचना के अनुसार आज पटना नगर निगम के नूतन राजधानी अंचल में आज दस बजे पूर्वाह्न से दो बजे अपराह्न तक अतिक्रमण उन्मूलन अभियान चलाया गया। आज यहाँ शेखपुरा मोड़ से राजा बाजार होते हुए रुपसपुर पुल (ड्रग प्वाईट तक) तक अस्थायी अतिक्रमण हटाया गया। आज इस अंचल में अतिक्रमण-उन्मूलन अभियान में 35,200/- जुमार्ना वसूला गया। पाटलिपुत्र अंचल में दस बजे पूर्वाह्न से दो बजे अपराह्न तक अतिक्रमण उन्मूलन अभियान चलाया गया। आज यहाँ अल्पना मार्केट से पाटलिपुत्र गोलम्बर होते हुए पोलिटेक्निक साई मंदिर तक अस्थायी अतिक्रमण हटाया गया। अतिक्रमण उन्मूलन अभियान के दौरान 10 अवैध बैनर हटाया गया तथा लगभग 80 पीस कैरेट जप्त किया गया। आज इस अंचल में अतिक्रमण-उन्मूलन अभियान में 25,500/- जुमार्ना वसूला गया।

बांकीपुर अंचल में दस बजे पूर्वाह्न से चार बजकर पचास मिनट अपराह्न तक अतिक्रमण उन्मूलन अभियान चलाया गया। आज यहाँ घाघा घाट रोड से भिखना पहाड़ी तक अस्थायी अतिक्रमण हटाया गया। अतिक्रमण उन्मूलन अभियान के दौरान एक ठेला जप्त किया गया। आज इस अंचल में अतिक्रमण-उन्मूलन अभियान में 30,500/- जुमार्ना वसूला गया।

आज के अतिक्रमण उन्मूलन अभियान में विभिन्न अंचलों में 91,200/- जुमार्ना वसूला गया। आयुक्त के निदेश पर यातायात पुलिस द्वारा अतिक्रमण हटाओ अभियान के दौरान विशेष वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया।आयुक्त ने कहा कि एन्टी-इंक्रोचमेंट ड्राईव नियमित तौर पर चलाया जाएगा।आयुक्त के निर्देश पर संबंधित अनुमंडल पदाधिकारियों एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारियों के नेतृत्व में फॉलोअप टीम लगातार सक्रिय है। जहां-जहां अतिक्रमण हटाया गया है वहां यह टीम पुनः अतिक्रमण की घटना से सख्ती से निपटेगी। पुनः अतिक्रमण करने वालों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करने का निदेश दिया गया है। आयुक्त ने वरीय पुलिस अधीक्षक को निदेश दिया है कि संबंधित अनुमंडल पुलिस पदाधिकारियों तथा थानाध्यक्षों के माध्यम से यह सुनिश्चित करें कि किसी भी स्थिति में पुनः अतिक्रमण न हो तथा यातायात व्यवस्था सुचारू रहे। वरीय पुलिस अधीक्षक यह सुनिश्चित करेंगे कि थानाध्यक्ष

ग्रामीणों में आक्रोश,सांसद प्रतिनिधि को भाजपा कार्यकर्ताओं ने दी जानकारी

छपरा कार्यालय। दिघवारा मे फर्जी डॉक्टर जेड अहमद का गिरफ्तारी के लिए ग्रामीणों मे आक्रोश का माहौल है जिसके बाद आज सांसद प्रतिनिधि सह प्रदेश कार्य समिति सदस्य राकेश सिंह को दिघवारा पहुंचने पर भाजपा कार्यकर्त्ताओ ने मिलकर पूरे मामले की जानकारी लीं तो ग्रामीणों ने बताया की यह मामला बहुत दिन पहले से चल रहा है 2016 मे एमबीबीएस का डिग्री था उसके दो साल बाद फिर डिग्री चेंज कर जेनरल फिजीसीएंन का डिग्री बना लोगो को गुमराह कर के लूटता रहा और लोगो को पता नहीं लगा लेकिन धीरे धीरे लोगो को पता लगा तब मामला प्रकाश मे उसके बाद से वह फरार है ज्ञात हो की उसके नाम से थाना मे कांड 322/24 दिघवारा चिकत्सा प्रभारी रौशन कुमार ने डॉ पर एफआईआर दर्ज कराया था।

राज्य स्तरीय सम्मान पाने के बाद ग्रामीणों ने किया शिक्षक का अभिनंदन समारोह

मढ़ौरा ग्रामीण। मढ़ौरा के उत्क्रमित मध्य विद्यालय नरहरपुर शारदा राय टोला में आयोजित एक समारोह में राज्य स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए शिक्षा मंत्री सुनील कुमार द्वारा सम्मानित किये गए मढ़ौरा के शिक्षक सूर्यदेव सिंह का नागरिक अभिनंदन किया गया। यहां स्कूली छात्र-छात्राओं और अभिभावकों के द्वारा आयोजित इस नागरिक अभिनंदन समारोह की अध्यक्षता शिक्षाविद सारंगधर सिंह के द्वारा की गई। इस मौके पर बोलते हुए भोजपुरी के कवि पूर्व शिक्षक मूंगालाल शास्त्री, नरहरपुर हाई स्कूल के हेडमास्टर पंकज कुमार, गौरा बिशनपुरा हाई स्कूल के हेडमास्टर नागेंद्र कुमार ने जहां सूर्यदेव सिंह को मिले राज्य स्तरीय सम्मान के लिए बधाई देते हुए कहा कि इससे मढ़ौरा और सारण के सभी शिक्षकों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने कहा कि जिले के अन्य शिक्षकों को सूर्यदेव सिंह से प्रेरणा लेनी चाहिए। इस दौरान पूर्व मुखिया कौशल यादव अमरितेश कुमार ने सूर्यदेव सिंह को मिले सम्मान को मढ़ौरा के लिए एक बड़ी उपलब्धि बताया और अपनी खुशी का इजहार किया। इस अवसर पर प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी मदन मोहन साह व शिक्षक निर्मल पांडेय ने कहा कि राज्य स्तरीय सम्मान पाने के बाद सुर्यदेव सिंह की जिम्मेदारी पहले से अधिक बढ़ गई है जिसपर उन्हें खरा उतरकर दिखाना होगा ताकि आगे राष्टीय पुरस्कार के लिए भी चयनित हो सके। इस दौरान सूर्यदेव सिंह ने कई अभिभावकों एवं गणमान्य लोगों को अंगवस्त्र प्रदान कर उनका आभार जताया।

पंखे के करंट लगने से सात वर्षीय बालक की मौत

जलालपुर प्रखंड के किशुनपुर पंचायत के हरपुर गाँव मे रविवार देर से सन्ध्या स्टैंड पंखे से करंट लगने से सात वर्षीय बालक अंकुश कुमार की स्थिति हुई गम्भीर स्वास्थ्य केंद्र पहुँचने के क्रम में हुई मौत अंकुश के पिता संदीप प्रसाद ने बताया की अंकुश की माँ खाना बना रही थी वही अंकुश बैठा था आचनक वह स्टैंड पंखे के संपर्क में आ गया जिसके कारण वह अचेत हो गया हम लोग उसे आनन फानन में स्वास्थ्य केंद्र लाये वही स्वास्थ्य केंद्र में चिकित्सक ने अंकुश को मृत घोषित कर दिया । घटना के बाद परिजनों में रोने पीटने की वजह से हाहाकार मच गया थोड़ी देर के लिए अस्पताल परिसर में हंगामा मच गया परिजनों का कहना था कि अस्पताल के चिकित्सक बिना पर्ची काटे ही चिकित्सक परिजनों को घर वापस जाने को कह रहे थे।

एपी पाठक ने अति गंभीर बीमार मरीज की मदद और सेवा कर पेश किया नजीर

बेतिया(घनश्याम)।बाबु धाम ट्रस्ट के संस्थापक तथा पुर्व नौकरशाह एपी पाठक ने समाज सेवा की एक नजीर पेश किया।हुआ यूं कि झुन्नू तिवारी ,ग्राम मुरली,प्रखंड नरकटियागंज निवासी के पिता जी की गंभीर तबियत बिगड़ी और वो गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज,बेतिया में उनको भर्ती कराया गया ये खबर जैसे ही एपी पाठक को मिली उन्होंने रात में ही बेतिया मेडिकल कॉलेज पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया और गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज बेतिया के आपातकालीन सेवाओं का जायजा लिया और डॉक्टरों और कर्मियों से बातचीत किया अस्पताल के वरिय अधिकारियों डॉक्टरों को बुलवाया और स्थिति से अवगत हुए उससे पहले कोई सिनियर डॉक्टर और जरूरी सुविधाएं मौजुद नहीं थी एपी पाठक करीब 2 घंटे अस्पताल में रहें और अपने देख रेख में ईलाज करवाए।

जब एपी पाठक के दबाव में अन्य जांच हुई तो डॉक्टरों ने उक्त मरीज को पटना एम्स रेफर कर दिया तुरंत ही एपी पाठक ने पटना एम्स के डायरेक्टर डॉक्टर कृष्णपाल से बात किया और सारी सुविधाओं और एडमिट प्रक्रिया उक्त मरीज को करने की निवेदन किया जिसको एम्स डायरेक्टर ने तुरंत संज्ञान लिया ये होता है सच्चा जननायक जो लोगों की सेवा सच्चे मन से करें

आपको बताते चलें की चंपारण के लाल गरीबों के मसीहा एपी पाठक स्वास्थ्य के क्षेत्र में पिछले डेढ़ दशकों से अधिक समय से लोगों की सेवा करते आ रहे है दिल्ली एम्स पटना एम्स आईजी आईएमएस पीएमसीएच पीजीआई लखनऊ पीजीआई चंडीगढ़ और गोरखपुर सहित अन्य कई स्वास्थ्य संस्थानों में चंपारण के लोगों के इलाज में मदद करते रहे जिसकी तादाद बहुत ज्यादा है और तो उनके प्रयास से ही देश में अनुमंडल और ब्लॉक स्तर से विकलांग प्रमाण पत्र बनना शुरू हुआ अपने बाबु धाम ट्रस्ट के माध्यम से अस्पतालों में विटामिन '1 का इंजेक्शन और मिशन अंब्रेला के तहत टीकाकरण अभियान उन्होंने चलाया था अब उनका एक ही लक्ष्य है स्वस्थ और समृद्ध चंपारण।

शिविर लगा सैंकड़ों मरीजों का कराया मुफ्त इलाज

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रम :- गोपाल विद्यार्थी स्थानीय अख्तियारपुर स्थित जगवंदन सेवा संस्थान परिसर में सोमवार को संस्थान के चेयरमैन साकेत सिंह के नेतृत्व में मुफ्त आंख जांच शिविर आयोजित की गई` मौके पर मोतियाबिंद के मरीजों के लिए आयोजित कैम्प में स्थानीय अख्तियारपुर मंझौली पंचायत समेत आस पास के कई अन्य गांवों के सैंकड़ों लोगों का मुफ्त ईलाज किया गया` वहीं पत्रकारों से बातचीत में चेयरमैन साकेत सिंह ने बताया कि मानव जीवन में लोगों की सेवा ही परम धर्म है, इससे बढ़कर कोई धर्म नहीं होता` संस्थान द्वारा आयोजित शिविर में आए मरीजों की सेवा में पूरे दिन जेएसएस की पूरी टीम निरंतर लगी रहीं । स्थानीय सैंकड़ों लोगों का मुफ्त इलाज किया गया एवं परामर्श सहित ऑपरेशन की व्यवस्था की गई है` वहीं स्थानीय लोगों ने भी संस्थान के इस पहल को खूब सराहा` बता दें कि पूर्व में भी संस्थान के द्वारा शिविर आदि के माध्यम से स्थानीय लोगों का यथोचित सहयोग किया जाता रहा है` मौके पर चिकित्सकों की टीम व संस्थान के कर्मी के अलावे कई अन्य लोग भी मौजूद थे।

जमीन बिक्री की बात कह ईंट चिमनी संचालक से 16 लाख की ठगी

मशरक। चिमनी ईंट व्यवसाई से जमीन बिक्री की बात कह 16 लाख रुपए की ठगी का मामला सामने आया है। व्यवसाई मशरक के बड़हिया टोला गांव निवासी रविंद्र कुमार सिंह है । जो पानापुर थाना क्षेत्र के धनौती गांव में गणेश ईट उधोग चलाते हैं उनसे जमीन बिक्री की बात कह 16 लाख रुपए की ठगी करने का मामला सामने आया है। मामले में थाना पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर जांच पड़ताल कर रही है। चिमनी व्यापारी ने बताया कि पानापुर के बकवा गांव निवासी साहेब हुसैन पिता तिजा मियां ने पटना में जमीन बेचने के नाम पर 16 लाख रूपए लिए । जिसमें उसकी भाई मो कासिम की सहमति ली गई। जब जमीन लिखने को बोला गया तो वह आनाकानी करने लगा। दिए गए रुपए वापस मांगे का दबाव दिया गया।

मशरक नगर पंचायत के सफाईकर्मी तीसरे दिन भी हड़ताल पर

प्रातः किरण संवाददाता

मशरक। मशरक नगर पंचायत के विभिन्न वार्डों में लगे सफाईकर्मियों ने अपनी मांगों को लेकर अनिश्चितकालीन हड़ताल की घोषणा की हैं। जिसको लेकर सोमवार को अस्पताल चौक मुख्य मार्ग पर उतर विरोध प्रदर्शन किया। वेतन एवम सुरक्षा किट की मांग को लेकर शनिवार से हड़ताल पर गए सफाईकर्मी सोमवार को काफी उग्र हो सड़क पर उतर ठेकेदार , सफाई सुपरवाइजर द्वारा जाति सूचक शब्द का प्रयोग कर गाली गलौज करने एवम जान से मारने को धमकी देने को लेकर मशरक थाना पहुंच सुरक्षा की गुहार लगाया। मशरक थानाध्यक्ष धनंजय राय को लिखित आवेदन देकर प्राथमिकी दर्ज कर सुरक्षा की गुहार लगाई। सफाईकर्मियों ने बताया कि सभी 35 मजदूर नगर पंचायत क्षेत्र के विभिन्न वार्डों में सफाई व्यवस्था में लगें हैं जिन्हें मजदूरी में 3 से 4 हजार रुपए ही प्रतिमाह मिलता हैं और न ही कोई और सुविधाएं दी जाती हैं।इसके विरोध में जब वे सभी हड़ताल पर गये तो ठेकेदार मुन्ना सिंह, श्यामबाबू सिंह नौकरी से निकालने और रूपया नहीं देने की धमकी देने लगे। वहीं सुपरवाइजर अमन कुमार सिंह और शैलेश कुमार महतो जाति सूचक गाली ग्लौज करते लगें और बोलें कि जो भी विरोध जताएगा वह जान से जाएगा। मजदूरों ने बताया कि वे दलित और महादलित परिवार से हैं और कमजोर हैं। मौके पर मोहन राम, विशाल कुमार, पंकज कुमार, आदित्य कुमार, अरुण बांसफोड़, सुरती देवी, माला देवी, रीना देवी सहित दर्जनों सफाई मजदूर रहें।

इधर नगर पंचायत के मुख्य पार्षद सोहन महतो ने बताया कि मजदूरों को सरकारी निर्धारित दर से अधिक राशि दी जाती है । जो शिफ्ट के अनुसार काम करते है उन्हें दुगुना राशि भी मिलता है । उनकी सभी मांगों को मान लिया गया है बावजूद

इसके हड़ताल पर जाने एवम उग्र होने का कारण पता नही । एक साजिश के तहत अनलोगो से प्राथमिकी दर्ज करने के लिए पुलिस को आवेदन दिया गया है।

महिलाओं को स्वास्थ्य जांच की

प्रातः किरण संवाददाता

नगरा।प्रखंड क्षेत्र के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नगरा के रामपुर कला परिसर में सोमवार को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व योजना के तहत प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न गांवों से आई लगभग 70 गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य जांच की गई.इस विशेष शिविर में गर्भवती महिलाओं की बीपी,हीमोग्लोबिन,शुगर, वजन आदि की जांच की गई और उन्हें आवश्यक दवाएं भी प्रदान की गई.ड्यूटी पर मौजूद चिकित्सक डॉ. सौरभ कुमार राज ने बताया कि प्रत्येक माह की 9 तारीख को इस योजना के तहत स्वास्थ्य जांच का आयोजन किया जाता है.उन्होंने गर्भवती महिलाओं को सलाह दी कि उन्हें अपनी सेहत का पूरा ख्याल रखना चाहिए,जिसमें साफ-सफाई और संतुलित आहार का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है.इससे गर्भवती महिला और गर्भस्थ शिशु दोनों स्वस्थ रहेंगे.उन्होंने जोर दिया कि समय-समय पर स्वास्थ्य जांच कराना भी बेहद जरूरी है ताकि किसी भी प्रकार की स्वास्थ्य समस्या का समय रहते पता चल सके.वहीं इस संबंध में स्वास्थ्य केंद्र नगरा के चिकित्सा प्रभारी डॉ. महेंद्र मोहन ,स्वास्थ्य प्रबंधक कनीज फातिमा ने संयुक्त रूप से जानकारी देते हुए बताया कि प्रत्येक माह की 9 और 21 तारीख को गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य जांच की जाती है.जांच के बाद उन्हें आवश्यक दवाएं भी मुफ्त में दी जाती हैं.इस तरह की पहल से गर्भवती महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने और सुरक्षित मातृत्व सुनिश्चित करने में मदद मिल रही है.इस अवसर पर अस्पताल के चिकित्सक , एएनएम ,आशा ,सहित अन्य कर्मी मौजूद थे।

राजकीय सम्मान से सम्मानित शिक्षिका का किया गया स्वागत

प्रातः किरण संवाददाता

परसा।बिहार सरकार के शिक्षा मंत्री द्वारा गत 5 सितंबर को पटना में राजकीय सम्मान से सम्मानित परसा की शिक्षिका संजू कुमारी सरोज को शिक्षकों द्वारा सोमबार को सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।परसा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के साभागार कक्ष में प्रखंड अध्यक्ष उमेश राय के नेतृत्व में आयोजित सम्मान समारोह कार्यकम में बीईओ युगल किशोर,जिला अध्यक्ष समरेंद्र बहादुर सिंह,जिला अध्यक्ष बिनोद कुमार यादव,पूर्व बीडीओ रजत किशोर सिंह,पूर्व प्राचार्य अम्बिका राय,मुख्यपार्षद प्रतिनिधि मो करमुल्लाह,प्रखंड अध्यक्ष गजेंद्र कुमार,प्राचार्य जय शंकर गुप्ता,शिक्षक संजीव कुमार सिंह,उपेन्द्र प्रसाद,अनीश कुमार,अर्जुन सिंह,सुबोध सिंह,राकेश सिंह,अली हसन, कुमारी अनुपम,नजाम अहमद द्वारा शिक्षिका को अंग बस्त्र फूलमाला,मोमेंटो गुलदस्ता देकर सम्मानित किया गया।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथियों ने शिक्षिका संजू कुमारी सरोज के कठिन परिश्रम कर्तब्य जिम्मेवारी के साथ शिक्षा के साथ सामाजिक उत्थान के लिए किए गए कार्य पर चर्चा करते हुए।उनके उज्वल भविष्य की कामना किया।अतिथियों ने कहा परसा की शिक्षिका ने राजकीय सम्मान से सम्मानित होकर पूरे देश में परसा की नाम रौशन किया है।कार्यक्रम में शिक्षक मालिक राम,सुरेंद्र राम,बबिता देवी,अशोक कुमार राय,बिपिन बिहारी यादव समेत सैकड़ो शिक्षक शिक्षिकाओं ने भाग लिया।

जीविका कैडर संघ ने की बैठक मानदेय पॉलिसी का किया विरोध

एकमा/रसूलपुरः- प्रखंड स्थित गीतांजलि होटल परिसर में बिहार प्रदेश जीविका कैडर संघ की बैठक हुई, जिसकी अध्यक्षता संघ के जिला अध्यक्ष नवीन कुमार गोस्वामी ने की।इस दौरान उन्होंने कहा कि 02 सितम्बर जीविका प्रबंधन द्वारा जारी संशोधित सामुदायिक कैडर मानदेय कार्यालय आदेश कैडरों के साथ छालावा है। कैडर अब सड़क पर उतर कर आर पार के मूड में है।बैठक में कैडरों ने एक स्वर में कहा कि सरकार ने कैडर मानदेय पॉलिसी नहीं बदला तो हम सभी आगामी 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव में सरकार बदल देंगे। कैडर ने बताया कि जीविका सूबे के मुख्यमंत्री की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है। जिसने बिहार कि सूरत बदलने का हरसंभव प्रयास किया। ग्रामीण क्षेत्रों में बदलाव की बयार जो आज दिख रही है, उसमें जीविका का एक बड़ा योगदान हैं।उन्होंने कहा कि आज जीविका में कार्यरत लगभग 1.5 लाख कैडरों का मानदेय भुगतान पद्धति बिल्कुल बंधुआ मजदूर वाली है, जिसमें 90% महिला कैडर शामिल हैं।जीविका प्रबंधन से कई बार अनुरोध करने पर भी अभी तक उसमें कोई पहल नहीं हो पाया है।बैठक के बाद कैडरों ने कार्यालय आदेश की प्रति जलाकर प्रतिकार व्यक्त किया।इस कार्यक्रम उपस्थित लोजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष देवकुमार सिंह को फुल माला पहनाकर स्वागत किया गया। बैठक को सम्बोधित करते हुए श्री सिंह ने कहा की जीविका में कार्यरत दीदियों को मेहनत के अनुसार वेतन मिलना चाहिए लेकिन सूबे की सरकार इसको अनदेखा कर रही है।जो काफी दुःखद बात है।मौके पर बिन्दु देवी, यशोदा देवी, उदित राज, एस अंसारी, संगीता देवी, संध्या देवी, विक्की, बीरेंद्र जी, रामेश्वर यादव सहित सैकड़ों जीविका कैडर व जीविका दीदी उपस्थित थीं।

संक्षिप्त समाचार

एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी

भारत ने जापान को दी करारी हार, लगातार दूसरा मैच जीता

हुलुनबुइर (चीन) (एजेंसी)। सुखजीत सिंह के दो गोल की मदद से गत चैंपियन भारत ने सोमवार को यहां पुरुष एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी हॉकी टूर्नामेंट के लीग मैच में जापान को 5-1 से हराकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की। सुखजीत ने दूसरे और 60वें मिनट में गोल किए जबकि अभिषेक (तीसरे), संजय (17वें) और उत्तम सिंह (54वें) अन्य भारतीय गोल करने वाले खिलाड़ी रहे। मात्सुमोतो काजुमासा ने 41वें मिनट में जापान के लिए एक गोल किया। रविवार को अपने शुरुआती राउंड-रॉबिन लीग मैच में चीन को 3-0 से हराने वाली चार बार की चैंपियन भारतीय टीम को दो पेनल्टी कॉर्नर मिले जबकि जापान की टीम ने पांच पेनल्टी कॉर्नर हासिल किए। हरमनप्रीत सिंह की अगुआई वाली टीम बुधवार को पिछले चरण की उपविजेता टीम मलेशिया से भिड़ेगी। मंगलवार को आराम का दिन है। छह टीमों के बीच राउंड-रॉबिन लीग के बाद शीर्ष चार टीमें 16 सितंबर को खेले जाने वाले सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी। फाइनल 17 सितंबर को होगा।

रोनाल्डो के रिकॉर्ड 132वें गोल से जीता पुर्तगाल

लंदन (एजेंसी)। क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने फिर से साबित किया कि वह 39 वर्ष के होने के बावजूद पुर्तगाल के लिए क्यों महत्वपूर्ण हैं। इस स्टार स्ट्राइकर ने मध्यांतर के बाद स्थानापन्न खिलाड़ी के रूप में मैदान पर कदम रखा और 88वें मिनट में निर्णायक गोल किया। इससे पुर्तगाल ने नेशन्स कप फुटबॉल टूर्नामेंट में स्कॉटलैंड को 2-1 से हराया। पांच बार वर्ष के विश्व में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुने गए रोनाल्डो का यह अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में 132वां गोल था जो विश्व रिकॉर्ड है। रोनाल्डो यूरोपीय चैंपियनशिप के पांच मैच में गोल नहीं कर पाए थे लेकिन पुर्तगाल के कोच रॉबर्ट मार्टिनेज ने इस दिग्गज खिलाड़ी पर भरोसा बनाए रखा और उनका यह फैसला सही साबित हो रहा है।

गुरुवार को क्रोएशिया पर 2-1 की जीत में भी रोनाल्डो ने अहम भूमिका निभाई थी। इस मैच में उन्होंने क्लब और देश की तरफ से कुल मिलाकर अपने करियर का 900वां गोल किया था।

पीसीबी से बोले गिलेस्पी और कर्स्टन

कप्तानों को जल्दबाजी में बर्खास्त न करें

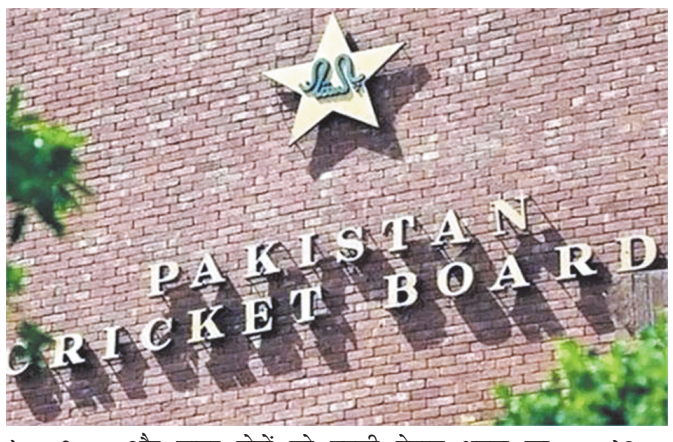

कराची (एजेंसी)। पाकिस्तान के सीमित ओवरों और टेस्ट टीम के मुख्य कोच गैरी कर्स्टन और जेसन गिलेस्पी ने देश के क्रिकेट बोर्ड को सभी प्रारूपों में हालिया खराब प्रदर्शन के बाद जल्दबाजी में कप्तान नहीं बदलने की सलाह दी है।

भारत में 2023 में खेले गए एकदिवसीय विश्व कप के राउंड रॉबिन दौर से बाहर होने के बाद बाबर आजम को सीमित ओवरों की कप्तानी से बर्खास्त कर दिया गया था। उनकी जगह लेने वाले शाहीन शाह अफरीदी को एक खराब श्रृंखला के बाद हटा दिया गया था। इसी तरह टेस्ट में बाबर के इस्तीफा देने के बाद, शान मसूद को कप्तान बनाया गया था, लेकिन बांग्लादेश से टेस्ट श्रृंखला में 0-2 से हार के बाद उन्हें तुरंत बाहर करने की मांग उठ रही है।

पीसीबी के एक सूत्र ने बताया कि मसूद और बाबर की बर्खास्तगी के बारे में हालिया मीडिया अटकलें कयास से ज्यादा कुछ नहीं हैं। उन्होंने कहा, 'कप्तानों को बदलने पर कोई चर्चा नहीं हुई है क्योंकि पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने यह फैसला दोनों कोच और चयनकर्ताओं पर छोड़ दिया है। सूत्र ने कहा, 'कर्स्टन और गिलेस्पी बहुत स्पष्ट है कि शान और बाबर दोनों को उनकी नेतृत्व क्षमता का आकलन करने से पहले उचित समय दिए जाने की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि दोनों कोच कप्तानी में निरंतरता चाहते हैं और उन्होंने यह बात बोर्ड को साफ तौर पर बता दी है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जब बोर्ड इस महीने के अंत में लाहौर में 'क्रिकेट कनेक्शन नामक एक दिन की कार्यशाला आयोजित करेगा तो कप्तानी या टीम चयन पर चर्चा नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा, 'वह कार्यशाला सभी हितधारकों, मुख्य रूप से घरेलू टीम के सभी कोच, चयनकर्ताओं और अनुबंधित खिलाड़ियों के विचारों को सुनने के लिए आयोजित की जा रही है ताकि बोर्ड घरेलू क्रिकेट और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मानकों के बीच अंतर को पाटने पर काम कर सके।

सूत्र ने यह भी बताया कि इस कार्यशाला में कर्स्टन भी मौजूद रहेंगे जबकि गिलेस्पी इसमें ऑनलाइन तरीके जुड़ेंगे। पीसीबी प्रमुख से कहा था कि सभी प्रारूपों में टीम से दीर्घकालिक परिणाम प्राप्त करने के लिए नीतियों में धैर्य और निरंतरता की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, 'कार्यशाला मूल रूप से इसलिए आयोजित की जा रही है क्योंकि दोनों कोच चाहते हैं कि घरेलू टीम के कोच इस बात को अच्छी तरह से समझे कि राष्ट्रीय टीम के लिए खिलाड़ियों को तैयार करने के लिए क्या जरूरी है।

यह पूछे जाने पर कि इस साल के अंत में ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका में एकदिवसीय श्रृंखला और फिर देश में आयोजित होने वाले चैंपियंस ट्रॉफी के लिए किसे कप्तान नियुक्त किया जाएगा, सूत्र ने कहा कि सफेद गेंद के प्रारूप में निरंतरता को बनाये रखते हुए शायद बाबर को ही जिम्मेदारी दी जाए।

इटली के जैनिक सिनर ने जीता यूएस ओपन

करियर का दूसरा ग्रैंड स्लैम टाइटल जीता; टेलर फ्रिट्ज को हराया

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। दुनिया के नंबर-1 टेनिस खिलाड़ी जैनिक सिनर ने यूएस ओपन का मेंस सिंगल्स टाइटल जीत लिया है। इटैलियन स्टार ने अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज को 6-3, 6-4, 7-5 से हराया। वे स ओपन जीतने वाले इटली के पहले पुरुष खिलाड़ी बने हैं। साल 2015 में इटली की फ्लाविया पैनेटा ने विमेंस सिंगल्स का टाइटल जीता था। 23 साल के सिनर ने करियर का दूसरा ग्रैंड स्लैम टाइटल जीता है। उन्होंने 2024 की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया ओपन भी जीता था। सिनर ने जीत के बाद एक्स पर लिखा- शुक्रिया न्यूयॉर्क, 2 हफ्तों के शानदार प्रदर्शन के बाद यहां अपना दूसरा ग्रैंड स्लैम जीतना विशेष रहा। समर्थन के लिए आप सभी का धन्यवाद।

भारतीयों को क्रिकेट के किसी भी रूप में ऑस्ट्रेलिया को हराना बहुत पसंद है: उस्मान ख्वाजा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी (बीजीटी) के करीब आने के साथ ही अनुभवी बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि भारतीय टीम को क्रिकेट के किसी भी प्रारूप में ऑस्ट्रेलिया को हराने में बहुत खुशी मिलती है जबकि पिछले कुछ वर्षों में ऐतिहासिक प्रतिद्वंद्विता और भी बढ़ गई है।

भारत ने ऑस्ट्रेलिया में 2018/19 और 2020/21 में हुई पिछली दो बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी सीरीज में 2-1 से जीत हासिल की है। मेहमान टीम 22 नवंबर को पर्थ में शुरू होने वाले पांच मैचों के टेस्ट दौरे में ऑस्ट्रेलिया में सीरीज जीत की हैट्रिक बनाने का लक्ष्य रखेगी, इसके बाद एडिलेड, ब्रिसबेन, मेलबर्न और सिडनी में खेल होंगे। ख्वाजा ने कहा, हम पिछले दो सालों से दुनिया की नंबर एक और नंबर दो टीमें हैं। हम पिछली विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में एक साथ थे। प्रतिद्वंद्विता हमेशा से बहुत बड़ी रही है। मैं इसे सम्मान के संकेत के रूप में लेता हूं और मुझे पता है कि भारतीयों को क्रिकेट के किसी भी रूप में ऑस्ट्रेलिया को हराना बहुत पसंद है।

उन्होंने कहा, और ऑस्ट्रेलिया की इतने सालों से विश्व क्रिकेट में हावी टीमों में से एक होने की परंपरा ने उस प्रतिष्ठा को दांव पर लगा दिया है। मुझे लगता है, हां, भारतीयों के लिए ऑस्ट्रेलिया को हराना हमेशा से ही रहा है। और हाल ही में, आप जानते हैं, भारत और आईपीएल के उदय और बाकी सब कुछ जो हुआ, उसके बाद से ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच भी यही हुआ है। खासकर तब से जब से भारत ने ऑस्ट्रेलिया को ऑस्ट्रेलिया में हराया है, जब से वे बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से बाहर आए हैं। इसका मतलब बस थोड़ा और है।

तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड जो 2014/15 बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी सीरीज में ऑस्ट्रेलिया का हिस्सा थे, ने कहा कि वह ट्रॉफी को वापस पाने के लिए उत्सुक हैं। हेजलवुड ने कहा, हां, शायद यही सबसे कठिन प्रतिद्वंद्विता है। भारत के खिलाफ खेलना हमेशा एक बड़ी चुनौती होती है, और वे यहां की परिस्थितियों के इतने आदी हैं कि उन्हें यह पसंद है। आप जानते हैं कि ऑस्ट्रेलिया में चुनौती बहुत बड़ी है। वे अपने शीर्ष क्रम की बल्लेबाजी कर रहे हैं, चाहे कोई भी खेल रहा हो, उनके शीर्ष छह या सात अविश्वसनीय हैं। मैंने अपनी पहली सीरीज में उनके खिलाफ खेला, जाहिर है और हमने जीत हासिल की, शायद वह आखिरी बार था। बहुत से वही खिलाड़ी अभी भी खेल रहे हैं, मुझे लगता है कि मैंने विराट को उस गेम में हराया था। उन्होंने कहा, तो हमारे बहुत से खिलाड़ी, मुझे लगता है, भारत को टेस्ट सीरीज में नहीं हरा पाए हैं। ट्रैविस हेड, कैमरन ग्रीन जैसे खिलाड़ी खेल रहे थे, ऐसे ही लोग। तो, हां हमारे लिए आने वाला समर बहुत बड़ा है और उम्मीद है कि हम ट्रॉफी वापस पा लेंगे। ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज़ ऑलराउंडर मिशेल मार्श आगामी सीरीज को लंबे फॉर्मेट को आगे बढ़ाने के एक और मौके के रूप में देखते हैं। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि यह सिर्फ क्रिकेट है जो दोनों टीमों के बीच खेला गया है। अगर आप इतिहास, हाल के इतिहास को देखें, तो हमने चीजें जीती हैं, उन्होंने चीजें जीती हैं। और मुझे लगता है कि जब यह इस तरह आगे-पीछे होता है, तो यह आपके भीतर प्रतिद्वंद्विता का निर्माण करता है। आप जानते हैं कि भारतीय टीम और हमारी टीम में बहुत अच्छी दोस्ती है, इसलिए कोई नफरत नहीं है। लेकिन यह मैदान पर एक शानदार प्रतिद्वंद्विता है, दोनों टीमें जीतना चाहती हैं। ऑस्ट्रेलिया बनाम भारत, यह क्रिकेट के खेल को आगे बढ़ाने का एक और अवसर है। ऐसा नहीं है कि क्रिकेट को भारत में बढ़ने की जरूरत है, बल्कि दुनिया भर में। लोग इन बड़ी सीरीज़ को देखते हैं।

बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए टीम इंडिया की घोषणा

पंत की 20 महीने बाद वापसी

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने बांग्लादेश के खिलाफ होने वाली दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए टीम इंडिया की घोषणा कर दी है। फिलहाल टीम पहले टेस्ट के लिए ही चुनी गई है। इसमें दलीप ट्रॉफी में अच्छा प्रदर्शन करने वाले ऋषभ पंत को भी जगह मिली है। टीम में यश दयाल की भी सरप्राइज एंट्री है। पंत और जुरेल यहां विकेटकीपर बल्लेबाज की भूमिका निभाते हुए नजर आएंगे।

बीसीसीआई ने प्रेस नोट जारी करते हुए कहा कि पुरुष चयन समिति ने बांग्लादेश के खिलाफ आईडीएफसी फर्स्ट बैंक टेस्ट सीरीज के पहले टेस्ट के लिए भारत की 16 सदस्यीय टीम का चयन कर लिया है। टेस्ट श्रृंखला 2024-25 के लिए भारत के अंतरराष्ट्रीय घरेलू सत्र की शुरुआत का प्रतीक होगी। भारत बांग्लादेश के खिलाफ तीन टी20 मैच भी खेलेगा और इसके लिए टीम का चयन बाद में किया जाएगा।

बांग्लादेश का भारत दौरा, 2024
पहला टेस्ट-19 से 23 सितंबर तक, चेन्नई में
दूसरा टेस्ट - 27 से 1 अक्तूबर तक, कानपुर में

बांग्लादेश टेस्ट सीरीज के पहले टेस्ट के लिए भारत की टीम

रोहित शर्मा (कप्तान), यशस्वी जयसवाल, शुभमन गिल, विराट कोहली, केएल राहुल, सरफराज खान, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), आर अश्विन, आर जड़ेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, मो. सिराज, आकाश दीप, जसप्रीत बुमरा, यश दयाल।

इसलिए मिला पंत का मौका

भारतीय टीम ने इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच-पांच टेस्ट मैचों की सीरीज खेलनी है। इन दोनों देशों के खिलाफ पंत का प्रदर्शन काफी अच्छा रहता है। भारत ने दो बार ऑस्ट्रेलिया में बॉर्डर गावस्कर टेस्ट सीरीज जीती है इसमें पंत की मुख्य भूमिका रही है। वैसे भी वह उछाल वाली पिचों पर शानदार प्रदर्शन के लिए जाने जाते हैं। पंत का दलीप ट्रॉफी में भी प्रदर्शन शानदार रहा है। उन्होंने पहली पारी में 7 ही रन बनाए थे क्योंकि शुभमन गिल ने मिड ऑफ पर उनका शानदार कैच लपका था लेकिन उन्होंने दूसरी पारी में 34 गेंदों पर ही अर्धशतक लगाकर अपनी मजबूत फार्म दिखा दी थी।

तुषार देशपांडे ने धोनी की प्रेरक बातों को किया याद, कहा- ...

तो यह अपने आप में एक उपलब्धि है

नई दिल्ली (एजेंसी)। चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के तेज गेंदबाज तुषार देशपांडे ने एमएस धोनी के कुछ प्रेरणादायक शब्दों को साझा किया जिसने उन्हें 2023 इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) सीजन से पहले प्रेरित किया। देशपांडे ने शुरुआत में संघर्ष करने के बाद सीएसके की पांचवीं खिताबी जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे गेंदबाजी इकाई में उनकी स्थिति मजबूत हुई। 2023 सीजन के दौरान सीएसके को अपने तेज गेंदबाजी विभाग में एक महत्वपूर्ण चोट के संकट का सामना करना पड़ा, जिसमें बेन स्टोक्स, दीपक चाहर, सिसांडा मगाला, सिमरजीत सिंह और मुकेश चौधरी सभी गंभीर चोटों के कारण बाहर हो गए। उनकी अनुपस्थिति में देशपांडे ने राजवर्धन हंगरगेकर, मथीशा पथिराना और आकाश सिंह जैसी युवा प्रतिभाओं के साथ आक्रमण का नेतृत्व किया। देशपांडे ने चुनौती का सामना किया और 16 मैचों में 9.92 की इकॉनमी रेट के साथ 21 विकेट लिए। देशपांडे ने आईपीएल 2023 की तैयारी के लिए आयोजित शिविर के दौरान चेपक में धोनी के साथ हुई एक प्रेरक बातचीत को याद किया।

देशपांडे ने कहा, आपके पास अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सफल होने के लिए सब कुछ है। लेकिन आपको अपने रन-अप के दौरान शांत रहना होगा। भीड़ से विचलित न हों। बस एक गहरी सांस लें, शांत रहें और गेंदबाजी करें। अगर माही आपको बताते हैं कि आपके पास अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सफल होने के लिए सब कुछ है, तो यह अपने आप में एक उपलब्धि है।

अहमदाबाद में गुजरात टाइटन्स के खिलाफ सीजन के शुरुआती मैच में मिली हार के बावजूद धोनी ने उन्हें दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित किया। देशपांडे ने कहा, माही मेरे पास आए और कहा, तुमने कोई गलती नहीं की है। तुमने सभी अच्छी गेंदें फेंकी हैं। आज तुम्हारा दिन नहीं था। अगले मैच में भी यही दोहराओ।

चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में विकेट लेने की उनकी क्षमता महत्वपूर्ण रही है। उन्होंने एक और उदाहरण का उल्लेख किया, जहां धोनी की सलाह ने उनके दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। धोनी ने उन्हें नेट्स में मैच सिमुलेशन के दौरान अपनी ताकत पर टिके रहने और खुद पर विश्वास करने की सलाह दी। उन्होंने कहा, मैं अच्छी यॉर्कर फेंक रहा था, लेकिन अचानक मैंने बाउंसर फेंका और 100 मीटर का छक्का लग गया। उन्होंने मुझसे पूछा, बाउंसर क्यों डाला? मैंने उनसे कहा कि मुझे लगा कि वह यॉर्कर की उम्मीद कर रहे थे। उन्होंने मुझसे कहा, दिमाग में क्रिकेट मत खेलो। यॉर्कर एक यॉर्कर है और कोई भी आपको हिट नहीं कर सकता।

उन्होंने बताया, वह मुझसे कह रहे थे कि हम वर्तमान में रहने के बजाय खेल से आगे खेलने की कोशिश करते रहें। दूसरी बात जो उन्होंने मुझसे कही वह है अपनी फिटनेस पर ध्यान देना, जो तेज गेंदबाजों के लिए महत्वपूर्ण है। देशपांडे ने जुलाई 2024 में जिम्बाब्वे दौरे के दौरान राष्ट्रीय टीम में पदार्पण किया जहां उन्होंने 1-30 के आंकड़े दर्ज किए और अगले मैच के लिए अपना स्थान सुरक्षित किया।

विमेंस क्रिकेट टीम एनसीए के स्किल कैंप में हिस्सा लेगी

वर्ल्ड कप से पहले 10 दिन की ट्रेनिंग, 24 सितंबर को यूएई के लिए रवाना होगी

नईदिल्ली (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप से पहले भारतीय विमेंस क्रिकेट टीम नेशनल क्रिकेट एकेडमी (एनसीए), बेंगलुरु में 10 दिन के स्किल कैंप में हिस्सा लेगी। हेड कोच अमोल मजूमदार 10 सितंबर से शुरू हो रहे इस कैंप की निगरानी करेंगे। अगले महीने यूएई में होने वाले विमेंस वर्ल्ड कप में भारत का पूरा स्क्वॉड यास्तिका भाटिया और श्रेयांका पाटिल जो चोट से उबार रहे हैं उनके साथ रिजर्व प्लेयर इसमें भाग लेंगे।

यास्तिका, श्रेयांका चोट से ठीक हुए – क्रिकबज की रिपोर्ट के मुताबिक विमेंस क्रिकेट टीम की विकेटकीपर बल्लेबाज यास्तिका भाटिया घुटने की चोट तो ऑफ स्पिनर श्रेयांका पाटिल फिंगर फ्रैक्चर से ठीक हो गए हैं। वो दोनों एनसीए में कल टीम को ज्वाइन करेंगे। यास्तिका को इसी साल मार्च में बांग्लादेश के खिलाफ 5 मैचों की टी-20 सीरीज के पहले मैच में घुटने में चोट लगी थी, तब से वे एनसीए में अपना इलाज करवा रही हैं। वहीं श्रेयांका को हाल ही में हुए एशिया कप के पहले मैच में पाकिस्तान के खिलाफ बाएं हाथ में चोट लगी थी।

इंट्रा-स्क्वॉड मैच खेलेगी टीम – वर्ल्ड कप की तैयारी के लिए विमेंस टीम कुछ इंट्रा-स्क्वॉड गेम भी खेलेगी। जो एम चिन्नास्वामी स्टेडियम के अलूर में खेला जाएगा। जहां लाइट की व्यवस्था न होने की वजह से भारतीय टीम को ये मैच में दिन में खेलने होंगे। जबकि 2020 वर्ल्ड कप के रनर-अप को 6 अक्टूबर को पाकिस्तान के खिलाफ मैच को छोड़कर, अपने चार ग्रुप ए खेलों में से 3 मैच रात को खेलने होंगे।बेंगलुरु के अलूर स्टेडियम में विमेंस टीम इंट्रा-स्क्वॉड मैच खेलेगी।

24 सितंबर को यूएई के लिए रवाना होगी टीम – इंट्रा-स्क्वॉड मैच के बाद भारतीय विमेंस क्रिकेट टीम के खिलाड़ियों को 4 दिन का ब्रेक मिलेगा। जिसके बाद मुंबई एयरपोर्ट से यूएई के लिए रवाना होगी।

तीसरे टेस्ट में इंग्लैंड 156 पर ऑलआउट

● श्रीलंका ने दूसरी पारी के 15 ओवर में 94 रन बनाए ● निसांका की फिफ्टी; टारगेट- 219

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड और श्रीलंका के बीच टेस्ट सीरीज का तीसरा मुकाबला लंदन के द ओवल मैदान पर खेला जा रहा है। तीसरे दिन का खेल खत्म हो चुका है। इंग्लैंड दूसरी पारी में 156 रन बनाकर ऑलआउट हो गई, टीम ने पहली पारी में 325 रन बनाए थे। श्रीलंका ने पहली पारी में 263 रन बनाए थे, इसलिए उन्हें 219 रन का टारगेट मिला। टीम ने तीसरे सेशन में 15 ओवर के बाद एक विकेट खोकर 94 रन बना लिए, उन्हें अब भी 125 रन की जरूरत है। जबकि उनके 9 विकेट बाकी हैं।

तीसरे दिन श्रीलंका की शुरुआत खराब – श्रीलंका ने तीसरे दिन 211/5 के स्कोर से अपनी पहली पारी आगे बढ़ाई। डी सिल्वा 64 और मेंडिस 54 रन बनाकर नॉटआउट लौटे थे। दोनों ज्यादा देर टिक नहीं सके, डी सिल्वा 69 और मेंडिस 64 रन बनाकर आउट हो गए। आखिर में मिलन रत्नायके 7, लहिरु कुमारा 5 और असिथा फर्नांडो भी 11 रन ही बना सके। विश्वा फर्नांडो खाता भी नहीं खोल सके। इंग्लैंड से डेब्यू कर रहे जोश हल और ओली स्टोन ने 3-3 विकेट लिए। क्रिस वोक्स को 2 और शोएब बशीर को 1 विकेट मिला। एक बैटर रन आउट भी हुआ।धनंजय डी सिल्वा ने श्रीलंका से सबसे ज्यादा 69 रन बनाए।

इंग्लैंड ने 35 पर 2 विकेट गंवाए – पहले सेशन में इंग्लैंड ने भी अपनी पहली पारी शुरू कर दी। टीम ने 7.4 ओवर में 35 रन के स्कोर पर ही 2 विकेट गंवा दिए। डैन लॉरेंस 20 रन बनाकर नॉटआउट लौटे, जबकि बेन डकेट और ओली पोप 7-7 रन बनाकर आउट हुए। असिथा फर्नांडो और लहिरु कुमारा को 1-1 विकेट मिला।

दूसरे सेशन में इंग्लैंड ने गंवाए 6 विकेट – इंग्लैंड ने 35/2 के स्कोर से दूसरे सेशन में खेलना शुरू किया। टीम ने 105 रन बनाने में 6 विकेट गंवा दिए। एक समय टीम का स्कोर 82/7 हो गया था, यहां से जैमी स्मिथ ने 67 रन बनाए और टीम को 140 रन तक पहुंचाकर 202 रन की बढ़त दिलाई। इंग्लैंड से डैन लॉरेंस ने 35, जो रूट ने 12, हैरी ब्रूक ने 3 और गस एटकिंसन ने 1 रन बनाया। क्रिस वोक्स खाता भी नहीं खोल सके, जबकि ओली स्टोन 5 रन बनाकर नॉटआउट रहे।जैमी स्मिथ ने 67 रन बनाए।

इंग्लैंड 156 रन बनाकर ऑलआउट – तीसरे सेशन में इंग्लैंड ने 140/8 के स्कोर से आगे खेलना शुरू किया। टीम ने 16 रन बनाने में ही आखिरी 2 विकेट गंवा दिए। ओली स्टोन ने 10, जोश हल ने 7 और शोएब बशीर ने 4 रन बनाए। श्रीलंका से लहिरु कुमारा ने 4 और विश्वा फर्नांडो ने 3 विकेट लिए। असिथा फर्नांडो को 2 और मिलन रत्नायके को 1 विकेट मिला।

असम में जमीनों के सौदों पर कड़े होंगे प्रतिबंध, अवैध शरणार्थियों को किया जाएगा बाहर: हिमंत बिस्व सरमा

गुवाहटी, एजेंसी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने रविवार को घोषणा की कि उनकी सरकार उन चुनिंदा राजस्व वृत्तों में भूमि लेनदेन पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक कानून का मसौदा तैयार कर रही है जहाँ केवल राज्य में 1951 से रहने वाले निवासियों को भूमि खरीदने या बेचने की अनुमति होगी। इस पहल का उद्देश्य आदिवासी लोगों के भूमि अधिकारों की रक्षा करना और पात्र भूमिहीन निवासियों को बसेरा उपलब्ध कराना है।

सीएम सरमा ने यह घोषणा असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा एक नागरिक-केंद्रित सेवा, ई-चिथा भूमि मूल्यांकन प्रमाणपत्र पोर्टल के शुभारंभ के दौरान की। उन्होंने कहा, हम उन राजस्व वृत्तों की पहचान करने की योजना बना रहे हैं जहाँ केवल उन व्यक्तियों द्वारा भूमि लेनदेन किया जा सकता है जिनके परिवार 1951 की मतदाता सूची या एनआरसी में सूचीबद्ध थे। कानून मार्च में पेश किए जाने की उम्मीद है।

मुख्यमंत्री ने अविभाजित गोलपारा जिले में

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग जैसे विशिष्ट समुदायों को लक्षित करने वाले इसी तरह के कानूनों का भी उल्लेख किया। इस जिले में वर्तमान में गोलपारा, धुबरी, बोंगाईगाँव, कोकराझार और दक्षिण सलमारा-मंकाचार जिले शामिल हैं। उन्होंने कहा, मिशन बसुंधरा के कार्यान्वयन के दौरान ऐसे कई कानून बनाए जाएंगे।

सरमा ने कहा, हम एक महत्वपूर्ण दौर में काम कर रहे हैं। हमारे कार्य निर्धारित करेंगे कि क्या हम एक समुदाय के रूप में जीवित रह सकते हैं। मुख्य कृषि भूमि की सुरक्षा के लिए एक नया कानून भी पाइपलाइन में है। एक अन्य संशोधन सरकार की सहमति के बिना गैर-चाय उत्पादन उद्देश्यों के लिए चाय भूमि बेचना दंडनीय अपराध बनाता है। यह असम समझौते के खंड 6 पर न्यायमूर्ति बिप्लब सरमा समिति की रिपोर्ट के अनुरूप है। भूमि से संबंधित अन्य सुधारों पर चर्चा करते हुए, सरमा ने घोषणा की कि मिशन बसुंधरा 3.0 2 अक्टूबर को लॉन्च होगा। नया संस्करण अपने पूर्ववर्तियों से प्राप्त सबक को शामिल करेगा और पिछले संस्करणों के तहत अस्वीकृत आवेदनों का समाधान करेगा। 2 अक्टूबर, 2021 को लॉन्च किया गया पहला संस्करण, लगभग आठ लाख लोगों को लाभान्वित किया, जबकि 14 नवंबर, 2022 को शुरू किया गया दूसरा संस्करण, दो लाख से अधिक लाभार्थियों के पास था। मिशन बसुंधरा 3.0 में मंदिर, नामघर, युवा क्लब और श्मशान भूमि शामिल होंगे-वे क्षेत्र जो पहले के संस्करणों में शामिल नहीं थे जो व्यक्तिगत भूमि बस्तियों पर केंद्रित थे। गैर-कैडस्ट्रल गांवों के सर्वेक्षण लगभग पूरे हो चुके हैं और इस संस्करण में शामिल होंगे। सरमा ने राजस्व विभाग में समय पर मुद्दों के समाधान को सुनिश्चित करने के लिए एक एस्केलेशन मॉडल पेश किया। यदि एक अधिकारी द्वारा एक निश्चित समय सीमा के भीतर किसी मामले का समाधान नहीं किया जाता है, तो यह स्वचालित रूप से उच्च अधिकारी के पास चला जाएगा। उन्होंने कहा, सरकारी क्षेत्र में इस मॉडल को पेश करने में असम सबसे आगे है। ई-चिथा भूमि मूल्यांकन प्रमाणपत्र पोर्टल का उद्देश्य लोगों को भूमि स्वामित्व इतिहास की जाँच करने और रिकॉर्ड हेरफेर को रोकने की अनुमति देकर पारदर्शिता बढ़ाना है। इससे विशेष रूप से नई इकाइयाँ स्थापित करने वाले व्यापारिक घरों को लाभ होगा। सरमा ने भूमि संबंधी प्रक्रियाओं को और अधिक पारदर्शी बनाने और अधिकारियों के कामकाज को कम करने के लिए उठाए जा रहे विभिन्न अन्य कदमों का उल्लेख करते हुए अपना भाषण समाप्त किया।

संक्षिप्त समाचार

श्रीलंकाई नौसेना ने भारत के 14 मछुआरों को किया गिरफ्तार

चेन्नई, एजेंसी। श्रीलंकाई नौसेना द्वारा 14 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया गया। नौसेना ने मछुआरों की नौकाओं को भी जब्त कर लिया। श्रीलंकाई नौसेना द्वारा की गई इस कार्रवाई के बाद मछुआरों के परिवारों और स्थानीय लोगों ने तमिलनाडु के पुदुकोट्टई जिले के जेगथापट्टिनम में रविवार को विरोध प्रदर्शन किया। बता दें कि मछुआरों को शनिवार रात गिरफ्तार किया गया। मणिकांतन ने आईएएनएस से बात करते हुए कहा, हमारे भाइयों को श्रीलंकाई नौसेना द्वारा गिरफ्तार किया जा रहा है। जिससे अब मछली पकड़ने के लिए समुद्र में प्रवेश करने और अपनी आजीविका के नियमित साधनों को चलाने के बारे में मछुआरे चिंतित हैं। हमारे सामने गंभीर स्थिति पैदा हुई, लेकिन, राज्य और केंद्र सरकार ध्यान नहीं दे रही है। मछुआरों की तीन नौकाओं को श्रीलंकाई नौसेना द्वारा जब्त कर लिया गया था। भले ही मछुआरों को श्रीलंका में कुछ दिनों की न्यायिक हिरासत के बाद रिहा कर दिया जाए, लेकिन हमारी नौकाओं को नहीं छोड़ा जाएगा। आगे नौकाओं को लंका सरकार द्वारा जब्त कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि 14 मछुआरों की गिरफ्तारी के विरोध में मछुआरे और उनके परिवार के सदस्य सड़कों पर बैठकर विरोध प्रदर्शन करेंगे। मछुआरों को श्रीलंकाई नौसेना ने कथित तौर पर अंतरराष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा (आईएमबीएल) पार करने और नेदुनथीवु के पास मछली पकड़ने के आरोप में गिरफ्तार किया था। गिरफ्तार मछुआरों में प्रदीप, रंजीत, प्रभाकरन और अजित शामिल हैं जो महादेवन की नाव पर थे। विश्व, आनंदराज, आनंदबाबू, कुबेंद्रन और शेखर जो सेंथिलकुमार की नाव पर थे, और मणिकंदन, मुथुकुमार, सेलाथम्बी, सेल्वम और सुरेश मणिकंदन की नाव पर थे। तमिलनाडु के तटीय पुलिस अधिकारियों ने कहा कि गिरफ्तार मछुआरों को श्रीलंका के कांकेसंथुराई नौसैनिक अड्डे पर ले जाया गया। गौरतलब है कि तमिलनाडु के करीब 84 मछुआरे श्रीलंकाई अधिकारियों की हिरासत में हैं। गिरफ्तारियों के कारण तमिलनाडु के रामनाथपुरम, नागापट्टिनम और पुदुकोट्टई जैसे तटीय जिलों में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गया है।

घुटनों पर बैठ वरना; आधी रात नाइट क्लब पहुंचे बदमाश, ताबड़तोड़ चलाई गोली

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के सीमापुरी इलाके में नाइट क्लब के बाहर फायरिंग की खबर सामने आई है। बदमाशों ने ना सिर्फ यहां हवाई फायरिंग की बल्कि यहां के बाउंसरों को घुटनों पर बैठने के लिए भी मजबूर किया। इन बाउंसरों में एक महिला भी शामिल थी। घटना 5 सितंबर को रात 11.45 की बताई जा रही थी जहां हथियारों से लैस बदमाश आए और पिस्तौर लहराकर बाउंसर को घुटनों के बल बैठने के लिए कहा। यह पूरी घटना वहां लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। सीसीटीवी फुटेज में बदमाश नाइट क्लब पहुंचते हैं। इनमें से 4 बदमाश नाइट क्लब के अंदर जाते हैं जबकि एक बाहर खड़े होकर बाउंसरों को धमकाता नजर आता है और घुटनों पर बैठने के लिए कहता है। कुछ ही मिनटों बाद दो हमलावरों ने हवा में ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी और फिर वहां से फरार हो गए। इंडिया टुडे की रिपोर्ट के मुताबिक यह बदमाश क्लब के मालिक को डराने धमकाने और उससे पैसे वसूलने के लिए आए थे। फरार होने से पहले उन्होंने 12 से ज्यादा बार हवा में गोलियां चलाईं। रिपोर्ट के मुताबिक एक चश्मदीद ने बताया कि हमलावरों ने डर पैदा करने के लिए महिला बाउंसर के सिर पर बदूंक भी रखी थी। शुरुआती जांच के मुताबिक क्लब के मालिक ने हमलावरों को पैसे देने से इनकार कर दिया था इसलिए उन्होंने नाइट क्लब पर हमला किया। हालांकि टाइम्स ऑफ इंडिया के मुताबिक उन्हें फ्री एंट्री के लिए मना कर दिया गया था। इसलिए उन्होंने नाइट क्लब पर हमला किया। दो हमलावरों की पहचान तनिष उर्फ पहलवान और शाहरुख के रूप में की गई है।

जो राम को लाये हैं गाने वाले कन्हैया मित्तल कांग्रेस में जा रहे हैं!

चंडीगढ़, एजेंसी। हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 के बीच भारतीय जनता पार्टी को एक और बड़ा झटका लग सकता है, क्योंकि मशहूर गायक कन्हैया मित्तल कांग्रेस में शामिल हो सकते हैं. बताया जा रहा है कि कन्हैया मित्तल टिकट न मिलने से नाराज हैं. उनका गाना 'जो राम को लाए हैं, हम उनको लाएंगे' यूपी चुनाव के दौरान काफी चर्चित हुआ था. एक मीडिया चैनल से बातचीत में जब उनसे पूछा गया कि क्या वे टिकट न मिलने से नाराज हैं. तब कन्हैया मित्तल ने कहा कि नाराजगी नहीं है, लेकिन उनका मन कांग्रेस की ओर झुक रहा है. उन्होंने कहा, मैंने पहले कभी किसी पार्टी के लिए काम नहीं किया, लेकिन अब मुझे लगता है कि मुझे कांग्रेस से जुड़ना चाहिए. उन्होंने यह भी कहा कि विनेश फोगाट के कांग्रेस में शामिल होने के बाद उन्हें आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, जिससे उन्हें लगा कि वे भी उनके समर्थन में कांग्रेस का साथ दे सकते हैं. अगर परिस्थितियां अनुकूल हुईं, तो वे कांग्रेस में शामिल होंगे. जब उनसे पूछा गया कि उनका गाना 'जो राम को लाए हैं, हम उनको लाएंगे' बीजेपी के प्रचार में इस्तेमाल हुआ, और उन्होंने पहले कहा था कि कांग्रेस ने राम मंदिर निर्माण को रोका, तो अब कांग्रेस में जाने का फैसला कैसे लिया? इस पर मित्तल ने कहा, मैंने कभी यह नहीं कहा कि सिर्फ बीजेपी ने राम मंदिर का निर्माण कराया.

अरुणाचल में फिर बांग्लादेश से अवैध आव्रजन रोकने की मांग, आदिवासी संगठन ने किया विरोध

इटानगर, एजेंसी। अरुणाचल प्रदेश में अब अवैध इमिग्रेशन को लेकर एक्शन पर सवाल उठ रहे हैं। एक आदिवासी संगठन ने रविवार को जारी एक बयान में कहा है कि राज्य में अवैध प्रवासियों की आमद को रोकने के लिए सरकार को इनर लाइन परमिट (आईएलपी) पर जांच को तेज करना चाहिए। इस प्रदर्शन, बढ़ती मंहगाई, सुरक्षा समेत कई मुद्दों पर भाजपा की सरकार के कार्यकाल को लेकर तंज कसा।

पिछले हफ्ते शनिवार को समुदाय आधारित संगठनों (सीबीओ) के साथ एक बैठक के दौरान, एआईटीएफ ने अवैध आव्रजन के सुरक्षा, जनसांख्यिकीय संतुलन और सामाजिक-आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और सामाजिक-राजनीतिक पहलुओं पर गंभीर प्रभावों पर चर्चा की। मंच ने राज्य के विभिन्न हिस्सों में हाल ही में पकड़े गए अवैध यौन रैकेट को उजागर किया, जहाँ अवैध प्रवासियों की संलिप्तता की पुष्टि हुई थी। अरुणाचल आदिवासी जनजाति फोरम (एआईटीएफ), जो राज्य में समुदाय आधारित संगठनों का शीर्ष निकाय है, ने राजधानी क्षेत्र सहित अंतरराज्यीय सीमावर्ती जिलों में बड़े पैमाने पर अवैध प्रवासियों की आमद पर गंभीर चिंता व्यक्त की। मंच ने सरकार से इस मुद्दे को तुरंत संबोधित करने का आह्वान किया।

सभी पूर्वोत्तर राज्य बांग्लादेश में राष्ट्रीय उथल-पुथल के कारण बांग्लादेश से अवैध प्रवासियों के साथ समान चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इस स्थिति ने बांग्लादेशी नागरिकों को भारतीय राज्यों में शरण लेने के लिए मजबूर कर दिया है, जिसमें अरुणाचल प्रदेश पड़ोसी राज्यों के निकट होने के कारण विशेष रूप से कमजोर लक्ष्य है।

एआईटीएफ अवैध आव्रजन को अरुणाचल प्रदेश के अस्तित्व के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा मानता है। मंच ने राज्य सरकार से संपर्क करने का फैसला किया, उससे इस मुद्दे को तुरंत संबोधित करने और असम और अन्य राज्यों के साथ अंतरराज्यीय सीमाओं पर सभी प्रवेश बिंदुओं पर सतर्कता बढ़ाने का आग्रह किया।

एआईटीएफ ने राज्य भर में आईएलपी की गहन जाँच करने का भी आह्वान किया, जिसमें अवैध प्रवासियों को प्रभावी ढंग से हटाने के लिए पर्याप्त बलों की तैनाती की गई। मंच ने जोर दिया कि आईएलपी जारी करने वाले अधिकारियों को परमिट जारी करने की प्रक्रिया के दौरान फुलप्रूफ तंत्र लागू करना चाहिए।

सो रहा था व्यक्ति, नाक में घुस गया कॉकरोच; आगे जो हुआ उससे डॉक्टरों के भी उड़े होश

बीजिंग , एजेंसी। सोते वक्त एक व्यक्ति के नाक में कॉकरोच घुस गया। मगर उसे पता नहीं चला। जांच करने पर डॉक्टरों के होश उड़ गए। दरअसल, व्यक्ति को रात में अपनी नाक के भीतर कुछ रेंगता हुआ महसूस हुआ। इसके बाद उसे लगा कि उसके गले में कुछ घुसा है। इस वजह से उसे खांसी भी आने लगी। हालांकि अगले दिन उसे आराम मिल गया। मगर बाद में सांस से बदबू आने पर उसकी बेचैनी बढ़ गई। तीन दिन बाद भी यह बदबू नहीं थमी।

यह हैरतअंगेज मामला है चीन के हैनान प्रांत के हाइकोऊ का। 58 वर्षीय पीड़ित व्यक्ति ने बताया कि बदबू के साथ उसे पीला थूक आने लगा। घबराया व्यक्ति तुरंत डॉक्टर के पास पहुंचा। उसने पहले हैनान अस्पताल में ईएनटी विशेषज्ञ को दिखाया। मगर ऊपरी श्वसन नली की जांच में कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला।

ऑडिटी सेंट्रल की रिपोर्ट के मुताबिक बदबू से बेचैन व्यक्ति ने इसके बाद अस्पताल में श्वसन और क्रिटिकल केयर फिजिशियन डॉ. लिन लिंग को दिखाया। छाती के सीटी स्कैन में डॉक्टरों ने पाया कि दाएं निचले लोब के पीछे के बेसल सेगमेंट में परछाई दिख रही है। डॉक्टरों ने जांच में पाया कि कोई चीज कफ के साथ लिपटी है। कफ के साफ होने पर पता चला कि यह तो कॉकरोच है। डॉक्टरों ने श्वास नली से कॉकरोच को निकाला। कफ को साफ किया और नली की बार-बार सफाई की। अब व्यक्ति पूरी तरह से ठीक है। उसे अस्पताल से घर भी भेज दिया गया है। सांस से आने वाली बदबू भी खत्म हो गई है।

2036 तक चंद्रमा में होगा न्यूक्लियर पावर प्लांट! रूस रचेगा इतिहास, भारत और चीन भी देंगे साथ

मास्को , एजेंसी। रूस चंद्रमा में न्यूक्लियर पावर प्लांट बनाने जा रहा है। खास बात यह है कि इस परियोजना पर भारत भी रूस के साथ हाथ मिलाने को तैयार है। भारत ने रूस की इस महत्वाकांक्षी परियोजना पर अपनी गहरी रुचि दिखाई है। रूस की इस परियोजना का उद्देश्य चंद्रमा में बनने वाले बेस को ऊर्जा की आपूर्ति करना है। खबर यह है कि रूस और भारत के साथ चीन भी इसमें शामिल होने को उत्सुक है।

आधा मेगावाट बिजली का होगा उत्पादन: रूस की सरकारी परमाणु निगम रोसाटॉम इस परियोजना का नेतृत्व कर रहा है। चंद्रमा में बनने वाले पहले इस परमाणु ऊर्जा संयंत्र से आधा मेगावाट बिजली का उत्पादन होगा और यह बिजली चंद्रमा में बने बेस को भेजी जाएगी।

2036 तक बन जाएगा प्लांट: रूस की सरकारी न्यूज एजेंसी टीएएसएस के मुताबिक रोसाटॉम के प्रमुख एलेक्सी लिखाचेव ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ-साथ इस परियोजना में चीन और भारत ने खासी रूचि दिखाई है। रूस की अंतरिक्ष

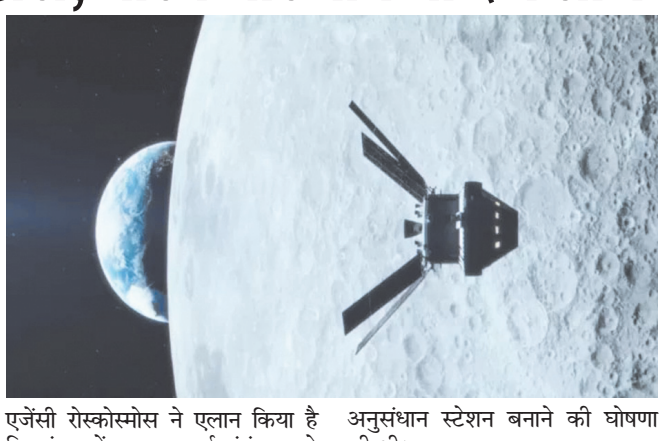

एजेंसी रोस्कोस्मोस ने एलान किया है कि चंद्रमा में परमाणु ऊर्जा संयंत्र बनाने पर काम चल रहा है। रूस और चीन संयुक्त रूप से इस पर जुटे हैं। 2036 तक इसे चंद्रमा में स्थापित कर दिया जाएगा।

भारत के लिए क्यों खास है यह प्लांट?: चंद्रमा में बनने वाला रूस का पहला परमाणु संयंत्र भारत के लिए भी खास है। भारत की योजना 2040 तक इंसान को चंद्रमा में भेजने की है। ऐसे में यह प्लांट वहां उर्जा जरूरतों को पूरा कर सकता है। 2021 में रूस और चीन ने साझे तौर पर अंतरराष्ट्रीय चंद्र अनुसंधान स्टेशन बनाने की घोषणा की थी।

कहा जा रहा है कि यह स्टेशन 2035 और 2045 के बीच कभी भी शुरू हो सकता है। इस स्टेशन का उद्देश्य वैज्ञानिक अनुसंधान करना है। अधिकांश देश इसका इस्तेमाल कर सकेंगे। मगर हो सकता है कि अमेरिका के कुछ सहयोगियों को इसका लाभ न मिले। ऐसे में रूस का सहयोगी होने के नाते भारत इसका फायदा उठा सकता है। बता दें कि भारत ने भी 2050 तक चंद्रमा में बेस स्थापित करने का लक्ष्य रखा है।

अब सभी मुस्लिम देशों को एकजुट होना होगा: तुर्किये के राष्ट्रपति एर्दोगन

इस्तांबुल, एजेंसी। तुर्किये के राष्ट्रपति तैयप एर्दोगन ने इस्लामिक देशों को एकजुट होने का संदेश दिया है। एर्दोगन ने ये अपील इजरायल के बढ़ते दबदबे को लेकर की है। उन्होंने कहा कि अगर इजरायल को रोकना है तो हमें एकजुट होना होगा।

इस्लामिक देशों का एक गठबंधन बनाना होगा

तुर्किये के राष्ट्रपति ने आगे कहा कि इजरायल के विस्तारवाद के बढ़ते खतरे के खिलाफ एक गठबंधन बनाना चाहिए, जिस पर इजरायल के विदेश मंत्री ने कड़ी प्रतिक्रिया दी।

दरअसल, ये सारा बवाल तब मचा जब ये आरोप लगाया गया कि इजरायली सैनिकों ने शुक्रवार को कब्जे वाले वेस्ट बैंक में बस्तियों के विस्तार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन में भाग लेने वाली एक तुर्किये-अमेरिकी महिला की हत्या कर दी। मिस्र और सीरिया के साथ संबंधों को बेहतर बनाने के लिए तुर्किये ने हाल ही में जो कदम उठाए हैं, उनका उद्देश्य विस्तारवाद के बढ़ते खतरे के खिलाफ एकजुटता दिखाना है। दूसरी ओर इजरायल के विदेश मंत्री इजरायल काट्ज ने एक बयान में कहा कि एर्दोगन की टिप्पणी एक खतरनाक झूठ और उकसावे वाली है और तुर्किये के नेता क्षेत्र के उदारवादी अरब शासन को कमजोर करने के लिए ईरान के साथ वर्षों से काम कर रहे हैं।

अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना की वापसी पर घिरे बाइडन, रिपब्लिकन सांसद बोले- बात तक करने में रहे थे नाकामयाब

वॉशिंगटन, एजेंसी। अगस्त, 2021 में अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना की वापसी का मुद्दा एक बार फिर से गरमा गया है। लंबे समय से जिस रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा था, उसे अब रिपब्लिकन सांसदों ने अमेरिकी संसद की निचली सदन में पेश कर दिया है। विपक्षी सांसदों ने रिपोर्ट जारी कर डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति जो बाइडन की जमकर आलोचना की।

बता दें, अफगानिस्तान से अमेरिकी सैनिकों की वापसी बेहद अफरा-तफरी में हुई थी। उस दौरान तालिबान ने वहां कब्जा जमा लिया था। अफगानिस्तान से अपनी वापसी को लेकर बाइडन प्रशासन को बार-बार आलोचनाओं का सामना करना पड़ा है।

अब रिपब्लिकन ने रिपोर्ट में तर्क दिया है कि प्रशासन ने गैर-लड़ाकों को निकालने का फैसला बहुत देर से लिया, औपचारिक रूप से इसका आदेश 16 अगस्त को दिया था। यहां तक कि अमेरिका और अफगानिस्तान के अधिकारियों के बीच बातचीत करने में तक नाकामयाब रहा। वहीं, देश छोड़ने के योग्य अफगान नागरिकों के प्रस्थान के लिए कागजी कार्रवाई में गड़बड़ी की गई।

यह रिपोर्ट एक शीर्ष हाउस रिपब्लिकन और हाउस फॉरेन अफेयर्स कमेटी के अध्यक्ष माइकल मैककॉल के नेतृत्व में तीन साल तक की गई जांच का नतीजा है। इसमें कहा गया कि विश्व मंच पर अमेरिका की विश्वसनीयता को तब भारी नुकसान पहुंचा, जब हमने अफगान सहयोगियों को तालिबान के प्रतिशोध में हत्याओं के लिए छोड़ दिया। जबकि हमने अफगानिस्तान के लोगों की रक्षा का वादा किया था।

इतना ही नहीं रिपोर्ट में बाइडन प्रशासन पर बड़ा आरोप लगाया गया है। कहा गया कि अमेरिका के दिग्गजों और अभी भी सेवा करने वालों को नैतिक चोट इस प्रशासन की विरासत पर एक दाग बनी हुई है।

गौरतलब, अमेरिका में पांच नवंबर को राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव होने वाले हैं। डेमोक्रेटिक की ओर से उम्मीदवार कमला हैरिस हैं, जबकि रिपब्लिकन की ओर से पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को मैदान में उतारा गया है।

हालांकि, दिलचस्प बात यह है कि बाइडन पहले डेमोक्रेट्स की ओर से चुनाव लड़ने वाले थे, लेकिन लगातार हो रहे विरोध के चलते उन्होंने अपने कदम पीछे ले लिए थे। उसके बाद से ही सियासत का पारा चरम पर है।

ट्रंप करते रहे हैं हमला: पिछले महीने रिपब्लिकन उम्मीदवार ट्रंप निकासी के दौरान मारे गए सैनिकों के सम्मान में एक समारोह में दिखाई दिए थे। उन्होंने चुनाव प्रचार के दौरान भी अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना को वापस बुलाने पर राष्ट्रपति बाइडन और उपराष्ट्रपति हैरिस पर हमला बोला। साथ हीकाबुल हवाईअड्डे के एबी गेट पर हुई मौतों के लिए इन लोगों को व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार ठहराया। 2015 में तालिबान ने सामरिक रूप से महत्वपूर्ण कुंदूज के इलाके पर कब्जा कर फिर से वापसी के संकेत दे दिए। ये ऐसा वक्त था जब अमेरिका में सेनाओं की वापसी की मांग जोर पकड़ रही थी।. अफगानिस्तान से अमेरिका की रूचि कम होती गई और तालिबान मजबूत होता गया। इसी के साथ पाकिस्तानी आतंकी संगठनों, पाकिस्तान की सेना और आईएसआई की खुफिया मदद से पाक सीमा से सटे इलाकों में तालिबान ने अपना बेस मजबूत किया। अमेरिका से लौटने की अपनी कोशिशों के तहत 2020 में अमेरिका ने तालिबान से शांति वार्ता शुरू की।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129